ISSN 2349-6614

सितम्बर, 2017

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

- दुर्गा सप्तशती

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 7 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल

उमरड़ा, उदयपुर

डॉ. प्रवीण झंवर	डॉ. सुभाष जाखड़	डॉ. विकास गुप्ता	डॉ. विक्रम सिंह राठौड़
एम.एस. (जनरल सर्जरी)	एम.एस. (जनरल सर्जरी)	एम.एस. (सर्जरी)	एम.एस. (ईएनटी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)	एम.सी.एच. (न्युरो सर्जन)	डी.एन.बी. (यूरोलॉजी)	
कन्सलटेन्ट-पिडियाट्रिक सर्जन	कन्सलटेन्ट-न्यूरो सर्जन	कंसलटेन्ट-यूरोलॉजिस्ट	कन्सलटेन्ट-ईएनटी सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

450	14	65	24/7
बेडेड हॉस्पिटल	ऑपरेशन थिएटर	बेडेड गहन चिकित्सा ईकाई	आपातकालीन सेवाएं

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

Separate Male & Female General Wards, Deluxe Rooms, Modular Operation Theatres, ICU, ICCU, PICU, NICU, Burn ICU Neuro ICU, Dialysis Center, Endoscopy & Colonoscopy, CSSD, Canteen, Laundry, Morgue,

1.5 TESLA MRI & 128 SLICE C.T. SCANNER

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जॉच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयॉं

राजस्थान सरकार से अधिकृत संभाग का एकमात्र

DOT - ART Center

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE · Apollo Munich · bharti AXA general insurance · RELIANCE · HDFC ERGO · Max Bupa · ICICI Lombard

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	MBBS	0294-3010000, 9587890082
वेन्कटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	B.Sc., M.Sc.	0294-3010015, 9587890063
वेन्कटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	GNM	0294-3010015, 9587890063
वेन्कटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	D. Pharma	0294-3010015, 9587890082

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.) 0294-3010000 www.saitirupatiuniversity.ac.in

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs

कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

नवरात्रि पर्व पर प्रिय पाठकों, सम्मानित सहयोगियों व विज्ञापनदाताओं को हार्दिक शुभकामनाएं।

सितम्बर
2017
वर्ष 15, अंक 7

प्रत्यूष

अन्दर के पृष्ठों पर...

12 अवसरवाद

मोदी शरणम् गच्छामि

14 हिन्दी दिवस

देश की बुनियादी सांस्कृतिक एकता पर अंग्रेजी का प्रहार

29 विश्ववृत्त

नहीं डरेगा ड्रैगन से भारत

18 तर्पण

पितरों के पर्वकाल का सामाजिक संदेश

36

सत्ता से बेदखल हुए शरीफ

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-6673
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.c

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

Ranjana H. Jain
9314204130
proprietor

With Best Compliments

Samyak Gold

Harish G. Jain
9461397717
M.D.

Mfgs of 916 Hallmark Jewellery

(All Type Jewellery)

18, Ground Floor: Heera Panna Market, Sindhi Bazar, Udaipur-313001
Contact No. 94613 97717, 70231 17717
E-mail: samyak_gold@yahoo.com

Srushti Gold
(Since 2005)

Branch Office: 2nd Floor, 166/168, Room No. 21,
Bhagwan Co-op. Hsg, Society Ltd
Kalbadevi Road, Mumbai-400 002, Cell: +91 9323007717

भाजपा चूकी, कांग्रेस ने तोड़ा 'चक्रव्यूह'

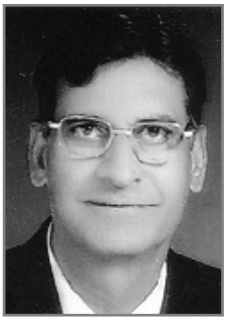

गुजरात विधानसभा में संख्या बल के लिहाज़ से राज्यसभा की रिक्त तीन सीटों में से दो पर भाजपा और एक सीट पर कांग्रेस का स्वाभाविक हक़ था। बिहार में हाल ही में महागठबंधन तोड़ सत्ता में अपनी जगह सुनिश्चित करने वाली अति उत्साहित भाजपा देश को कांग्रेस मुक्त बनाने का दंभ भर रही है। इसी क्रम में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने गुजरात में राज्यसभा की तीनों सीटों पर कब्जे की योजना बनाई। एक सीट कांग्रेस को मिलने से भाजपा के लिए किसी बड़े राजनैतिक उलटफेर की संभावना भी नहीं थी। लेकिन भाजपा ने इसे मूंछ की लड़ाई बना दिया। प्रतिष्ठा की इस लड़ाई में भाजपा की रणनीति उसी पर भारी पड़ी और नैतिकता और मर्यादा के उसके आदर्श भी बेनकाब हुए।

8 अगस्त को गुजरात विधानसभा में राज्यसभा चुनाव के लिए मतदान के पन्द्रह घंटे में जो कुछ हुआ, जनता उसका सम्पूर्ण सच जानती है। कांग्रेस विधायक राघवजी पटेल और भोलाभाई ने भाजपा के लिए क्रॉस वोटिंग की। उन्होंने ज्यों ही बैलेट पेपर भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को दिखाया, कांग्रेस विधायक शक्तिसिंह गोहिल ने रिटर्निंग ऑफिसर को आपत्ति दर्ज कराई, परन्तु भाजपा के कृपा पात्र इस अफसर ने ध्यान नहीं दिया। गुस्साए कांग्रेस नेताओं ने वोटिंग के बाद जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन किया और थोड़ी ही देर बाद यह सियासी ड्रामा चुनाव आयोग की स्क्रीन पर था। कांग्रेस ने आयोग में गुहार लगाई । अन्ततः रात 11.30 बजे चुनाव आयोग ने क्रॉस वोटिंग करने वाले दोनों विधायकों के मतपत्र अवैध घोषित कर दिए। राज्यसभा की तीनों सीटों पर भाजपा ने अपने प्रत्याशी (अमित शाह, स्मृति ईरानी और बलवंत सिंह राजपूत) उतारे। पहले दोनों प्रत्याशी आसानी से वरीयता प्राप्त 46-46 वोट से जीत गए, परन्तु भाजपा को दिए गए दो कांग्रेसी विधायकों के वोट रद्द होने से बलवंत सिंह चुनाव हार गए और 44 वोट प्राप्त करने वाले कांग्रेस के अहमद पटेल विजेता घोषित हो गए। विधानसभा में कुल 176 विधायक हैं और भाजपा वहां दो तिहाई बहुमत से सत्ता में है। कांग्रेस के 57 विधायक थे, परन्तु राज्यसभा चुनाव से कुछ दिन पूर्व 14 ने बगावत कर पार्टी छोड़ दी, जो अपने नेता शंकर सिंह बाघेला की उपेक्षा से नाराज थे। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक पराजित भाजपा प्रत्याशी ने गुजरात हाईकोर्ट में अहमद पटेल की जीत को चुनौती दी है।

'अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन' की पिचहत्तरवीं सालगिरह की पूर्व संध्या पर भारतीय लोकतंत्र का अदृश्य चीर हरण पुनः उसी राजनीतिक दल ने किया जो नैतिकता, लोकतंत्र, मर्यादा और आदर्शों की दुहाई देते थकता नहीं। यूं तो हर राजनैतिक पार्टी अपनी चुनावी जीत के लिए भरसक कोशिश करती है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी को जिसे देश ने भरपूर प्यार-सम्मान दिया, वहीं देश को कांग्रेस मुक्त करने के दंभ में लोकतंत्र का उपहास उड़ाने लगे तो जनता के पास उसके लिए भी वैसा ही इंजेक्शन तैयार है, जो कांग्रेस को लग चुका है वह केन्द्र सहित अनेक राज्यों में फिलहाल सत्ता से बाहर होकर विपक्ष की भूमिका में है। लोकतंत्र में मज़बूत विपक्ष ज़रूरी है, जब कि भाजपा उसे समाप्त करने पर तुली है, इसे देश बर्दाश्त नहीं करेगा। लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है। हर राजनैतिक दल के लिए जनता की आशा और आकांक्षाओं के अनुरूप आचरण जरूरी है। असहमति के स्वरों को सियासत की लोकतांत्रिक चौपाल पर पूरा सम्मान मिलना चाहिए। लोकतंत्र की कुछ मर्यादाएं हैं, जिनका पालन या अनुसरण स्वस्थ और आदर्श परम्परा है। गुजरात के राज्यसभा चुनाव में विधायकों के वोट हासिल करने के लिए, जिस तरह की कोशिशें देखी गई, विधायकों को प्रभावित करने या धमकी देने के अलावा ख़रीद-फ़रोख्त के संगीन आरोप सामने आए, उससे समूची लोकतांत्रिक धारा को भारी ठेस पहुंची है। हालात ऐसे तक बने कि कांग्रेस को अपने विधायकों को राज्य से बाहर ले जाकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करनी पड़ी। यह कैसा लोकतंत्र है। कर्नाटक में जहां विपक्षी दल के विधायक ठहरे उस रिसोर्ट पर भी इसी दौरान ईडी और पुलिस की रेड डाली गई। क्या ऐसी कार्रवाई चुनाव से पहले या बाद में नहीं हो सकती थी ? यही वक़्त क्यों चुना गया। क्या भाजपा सत्ता का उपयोग विपक्षियों को धमकाने-डराने के लिए ही करती रहेगी ? इससे चंद रोज पहले कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी पर गुजरात में भाजपा कार्यकर्ताओं ने पत्थर भी फेंके।

गुजरात में विधानसभा चुनाव तीन माह बाद है। विगत चार टर्म से भाजपा वहां विधानसभा चुनाव जीतती रही है, लेकिन राज्यसभा चुनाव में अहमद पटेल के निर्वाचन से कांग्रेस को गुजरात में संजीवनी मिल गई है। वहां कांग्रेस आक्रामक और भाजपा अब बचाव की मुद्रा में है। पटेल आरक्षण आन्दोलन, दलित अत्याचार और पूर्व उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी द्वारा मुस्लिमों में असुरक्षा की भावना का मुद्दा उठाने से भाजपा की हालत वैसे ही खस्ता है। अहमद पटेल दशकों से कांग्रेस आलाकमान में खास वजूद रखते हैं। अनुभव और लोकप्रियता की दृष्टि से भी वे अमित शाह से उन्नीस नहीं हैं। वे 1977 में इमरजेंसी के बाद कांग्रेस विरोधी लहर में भी भरूच से सांसद बने थे। गुजरात की जनता उनमें भाजपा का विकल्प देख रही है। भाजपा शह और मात के इस खेल को जीतकर भी हार चुकी है।

भाजपा का शीर्ष संवैधानिक पदों पर कब्जा

वेंकैया नए उप राष्ट्रपति

किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाले मुप्पावरप्पु वेंकैया नायडू ने स्वयं कभी नहीं सोचा था कि वह राजनीति में इतना लम्बा सफर तय करेंगे। जनसंघ के युवा कार्यकर्ता के रूप में चुनावों के दौरान अटल-आडवाणी के पोस्टर चिपकाने वाले नायडू 11 अगस्त को देश के उपराष्ट्रपति पद पर आसीन हुए।

सफ़रनामा

1973-74	अध्यक्ष-छात्रसंघ आंध्र विश्वविद्यालय
1974	संयोजक, लोकनायक जयप्रकाश नारायण संघर्ष समिति, आंध्र
1977-1980	अध्यक्ष, जनता पार्टी युवा शाखा आंध्रप्रदेश
1978-85	सदस्य, आंध्र विधानसभा
1985-88	महासचिव, भारतीय जनता पार्टी आंध्रप्रदेश
1988-1993	अध्यक्ष, आंध्रप्रदेश प्रदेश भाजपा
1993-सित. 2000	राष्ट्रीय महासचिव एवं प्रवक्ता, भाजपा
1998 के बाद	तीन बार, कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य
2002-04	राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी
26 मई 2014	केन्द्र में शहरी विकास और सूचना मंत्री।

- देवेन्द्र माथुर

एनडीए उम्मीदवार एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री एम. वैंकेया नायडू 5 अगस्त 2017 को देश के 13वें उपराष्ट्रपति चुने गए। उन्होंने इस प्रतिष्ठापूर्ण चुनाव में नायडू ने 19 विपक्षी दलों के प्रत्याशी गोपाल कृष्ण गांधी को दोगुने से ज्यादा अंतर से हराया। गोपाल कृष्ण गांधी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बेटे देवदास गांधी के पुत्र और पूर्व आईएएस अधिकारी हैं। वे पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भी रह चुके हैं। नायडू को 516 और गांधी को 244 वोट मिले। उन्हें राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 11 अगस्त को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। निवर्तमान उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने उन्हें अपना आसन दिया। 785 सांसदों में से 771 ने चुनाव में वोट डाले। नायडू भैरोसिंह शेखावत के बाद भाजपा से ताल्लुक रखने वाले दूसरे उपराष्ट्रपति हैं।

विपक्ष के वोटों में सेंध

एनडीए ने उप राष्ट्रपति चुनाव में विपक्षी खेमे में भी सेंध लगाई। करीब दो दर्जन विपक्षी खेमे के सांसदों ने नायडू के पक्ष में मतदान किया। पार्टी के मुताबिक, सभी दलों को मिलाकर नायडू को 495 सांसदों का समर्थन प्राप्त था, लेकिन उन्हें 516 वोट मिले। विपक्ष के लिए चिंता की बात रही कि उनके उम्मीदवार गोपाल कृष्ण गांधी को राष्ट्रपति पद की प्रत्याशी मीरा कुमार से सिर्फ 119 वोट ज्यादा मिले। जबकि जदयू(12) और बीजद(28) ने भी गोपाल कृष्ण को समर्थन ऐलान किया था। इस हिसाब से उन्हें 40 वोट ज्यादा मिलने थे। मीरा कुमार को 225 सांसदों का वोट मिला, जबकि गांधी को महज 244 वोट मिले। राष्ट्रपति चुनाव से 40 वोट कम होने के बावजूद सांसदों के मामले में एनडीए के सिर्फ छह वोट कम हुए, जो क्रास वोटिंग का संकेत है। इस बार 771 सांसदों के मतदान ने रिकॉर्ड तोड़ा। इससे पहले 2002 में भैरोसिंह शेखावत के चुनाव के दौरान 759 सांसदों ने वोट डाला था।

राज्यसभा की जिम्मेदारी

उप राष्ट्रपति बनने के साथ ही वेंकैया नायडू पर राज्यसभा के सभापति की अहम जिम्मेदारी भी है। जहां उन्हें सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तालमेल बिठाकर सदन को सुचारू रूप से चलाना होगा। हालांकि लंबा राजनीतिक कॅरियर और सभी दलों में स्वीकार्यता नायडू की राह आसान बनाएगी।

राज्यसभा के मौजूदा सभापति हामिद मोहम्मद अंसारी ने लगातार दो कार्यकाल पूरे किए हैं। इस दौरान उनकी छवि एक सख्त सभापति की रही। कई मौकों, खासकर हंगामे पर उन्होंने कड़ी टिप्पणियां भी की। लेकिन अपेक्षाकृत नायडू नर्म मिजाज के हैं और कठिन बातों को हल्के-फुल्के अंदाज में पेश करते हैं। इसलिए उनसे सदन के संचालन में अपने लंबे राजनीतिक अनुभवों से सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच टकराव टालने में अहम भूमिका के निर्वाह की अपेक्षा तो की ही जा सकती है। राज्यसभा में भाजपा एक सीट की बढ़त से सबसे बड़ी पार्टी बनी है, लेकिन अभी भी बहुमत विपक्ष के पास है।

शिखर पर धरती-पुत्र

आंध्रप्रदेश के नेल्लूर जिले के कृषि परिवार में जन्मे नायडू(68) 29 साल की उम्र में पहली बार विधायक बने। आंध्र विधानसभा में दो बार तथा कर्नाटक से तीन बार राज्यसभा के लिए चुने गए। 1978 में जब आंध्रप्रदेश में कांग्रेस की आंधी चली थी, उस वक्त नायडू उदयगिरि से जनता पार्टी के विधायक चुने गए। एनटी रामराव ने जब आंध्र में परचम लहराया, उस वक्त भी नायडू विधायक बने। उपराष्ट्रपति का उम्मीदवार बनने से पूर्व वे राजस्थान से राज्यसभा में प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

पक्ष-विपक्ष के बीच सेतु

सरकार और विपक्ष के बीच संसद में गतिरोध रहने के दौरान उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ बैठक की। वह जब संसदीय कार्य मंत्री थे तब ऐतिहासिक रियल स्टेट अधिनियम सहित कई विधेयकों को मंजूरी मिली थी। जीएसटी विधेयक को भी आगे बढ़ाया गया था। नायडू ने मोदी सरकार को एमओडीआई (मेकिंग ऑफ डेवलप्ड इंडिया) नाम दिया। शहरी विकास मंत्री के तौर पर उन्होंने स्मार्ट सिटी मिशन, अटल मिशन, स्वच्छ भरत मिशन और सबको आवास की योजनाओं को आगे बढ़ाया।

वाकपटुता के लिए प्रसिद्ध

नायडू वाकपटुता को लेकर चर्चित रहे हैं। आडवाणी के करीबी नायडू ने 2014 के आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद के लिए नरेन्द्र मोदी का जोरशोर से समर्थन किया। वह मोदी सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री और आवास एवं शहरी विकास मंत्री की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इससे पहले वह संसदीय कार्य मंत्री का पदभार भी संभाल चुके हैं।

भाजपा का उत्कर्ष

उप राष्ट्रपति पद पर वेंकैया नायडू के निर्वाचन के साथ सभी शीर्ष निर्वाचित संवैधानिक पदों पर अब भाजपा नेता आसीन हैं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष पद पर पार्टी काबिज हो गई है। संसदीय इतिहास में भाजपा ने अब पूरी तरह से कांग्रेस की जगह ले ली है। तीन साल पहले लोकसभा चुनाव में स्पष्ट बहुमत हासिल करने के बाद भाजपा ने अगस्त के पहले सप्ताह में राज्यसभा में कांग्रेस को हटाकर सबसे बड़ी पार्टी का तमगा भी हासिल किया। साल 2014 से 2017 के बीच भाजपा ने जबरदस्त राजनीतिक सफलता हासिल की है। उसकी राज्य सरकारों की संख्या भी इस दौरान बढ़कर 18 राज्यों तक पहुंच गई है, जहां उसके अपने मुख्यमंत्री (13 राज्य) हैं या वह सरकार में शामिल हैं। खास बात यह है कि इन तीन सालों में कांग्रेस को लगातार झटके लगे हैं। उसने पहले तो लोकसभा चुनाव में सरकार गंवाई और उसके बाद इस साल राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति चुनाव में भी उसे हार का सामना करना पड़ा। राज्यसभा के इतिहास में तो वह पहली बार दूसरे नंबर पर पहुंची है।

मुझे विश्वास है कि वेंकैया जी समर्पित और लगनशील उप राष्ट्रपति के तौर पर देश की सेवा करेंगे। राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

वेंकैया नायडू को उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने पर शुभकामनाएं। कांग्रेस उच्च सदन की भूमिका को मजबूत बनाने में उन्हें सहयोग देगी।

- सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष

सभी वर्गों के उप राष्ट्रपति की नई जिम्मेदारी के लिए मैं नायडू को शुभकामना देता हूं। इस चुनाव में दो जीत हुई हैं, एक जीत नायडू और दूसरी स्वतंत्र अभिव्यक्ति की।

- गोपाल कृष्ण गांधी, विपक्षी उम्मीदवार

किसान के बेटे वेंकैया नायडू की उप राष्ट्रपति चुनाव में जीत देश के किसानों की जीत है। मैं निश्चिंत हूं कि नायडू का ज्ञान एवं अनुभव उप राष्ट्रपति कार्यालय और राज्यसभा के लिए बड़ी पूंजी बनेगी।

- अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष

With Best Compliments for Navratri

DHL

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388, Tele Fax : 0294-2414388

E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

आओ फिर से लें संकल्प

स्वतन्त्रता दिवस के इस पुनीत अवसर पर हम अपने आपसी मतभेद भुलाकर देश को मज़बूत बनाने में जुट जायें।

आप सभी को
71वें स्वतन्त्रता दिवस
की हार्दिक बधाई।

वसुन्धरा राजे
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सूचना एवं
जनसम्पर्क विभाग

... ताकि हर बच्चे को मिले अच्छी शिक्षा

केन्द्र और राज्यों को पूरी तरह जिम्मेदार बनाए बिना क्या देश के सभी बच्चों तक गुणवत्ता युक्त स्कूली शिक्षा पहुंचाई जा सकती है?

– हरिवंश चतुर्वेदी

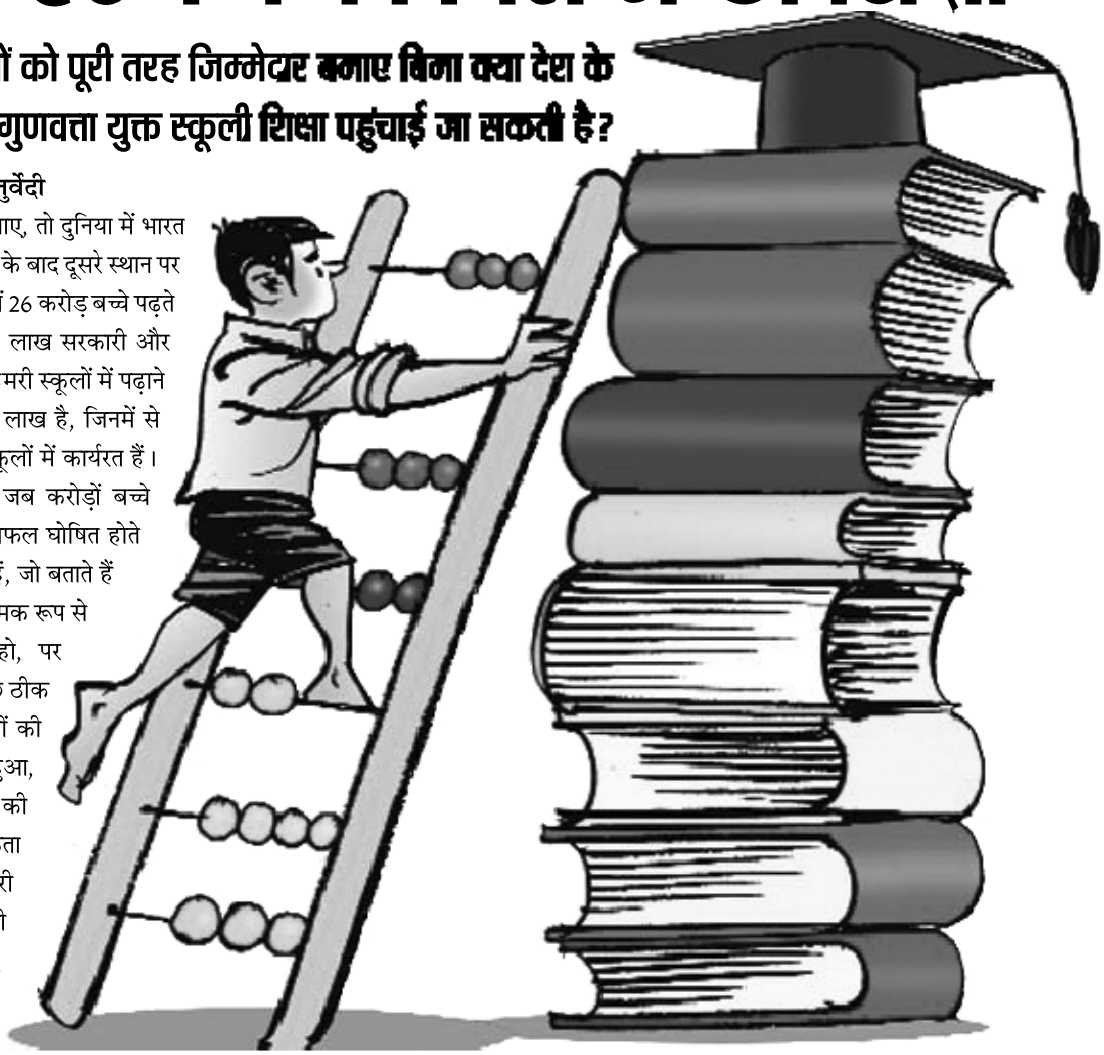

संख्या के आधार पर देखा जाए, तो दुनिया में भारत की स्कूली शिक्षा-व्यवस्था चीन के बाद दूसरे स्थान पर होगी। देश के 15 लाख स्कूलों में 26 करोड़ बच्चे पढ़ते हैं। इन 15 लाख स्कूलों में 11 लाख सरकारी और चार लाख प्राइवेट स्कूल हैं। प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाने वाले अध्यापकों की संख्या 85 लाख है, जिनमें से 47 लाख अध्यापक सरकारी स्कूलों में कार्यरत हैं। हर वर्ष सालाना परीक्षाओं में जब करोड़ों बच्चे परीक्षा देते हैं और उनके परीक्षाफल घोषित होते हैं, तो ऐसे तथ्य उभरकर आते हैं, जो बताते हैं कि हमारी स्कूली शिक्षा संख्यात्मक रूप से कितनी भी आगे बढ़ रही हो, पर गुणात्मक रूप से उसमें सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। बिहार की 12वीं की बोर्ड परीक्षा में गत वर्ष जो कुछ हुआ, उससे वहां की स्कूली शिक्षा की हालत का जायजा लिया जा सकता है। इसी राज्य में जब प्राइमरी स्कूलों के तदर्थ शिक्षकों की नौकरी नियमित करने के लिए परीक्षा ली गई, तो शिक्षक भी बेशर्मी से नकल करते पाए गए। स्कूली शिक्षा की दुर्दशा सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं है, कम या ज्यादा सब जगह यही हाल है।

सुब्रह्मण्यम समिति ने जिस नई शिक्षा नीति का मसौदा पेश किया, उसमें स्कूली शिक्षा के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं पर काफी विस्तार से ब्योरे दिए गए हैं। अभी इस मसौदे के प्रस्तावों पर राज्य सरकारों की राय ली जा रही है, क्योंकि स्कूली शिक्षा पर ज्यादातर नियंत्रण राज्य सरकारों का ही है।

आजादी के बाद शिक्षा नीति दो बार 1968 और 1986/1992 में घोषित की गई थी। स्कूली शिक्षा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कानून 2009 में संसद द्वारा पारित किया गया, जिसे शिक्षा का अधिकार अधिनियम के नाम से जाना जाता है। इस कानून के तहत केन्द्र और राज्य सरकारों को यह वैधानिक जिम्मेदारी दी गई कि छह से 14 वर्ष की आयु के हर बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा औपचारिक रूप से किसी ऐसे स्कूल में दी जाए, जहां सभी न्यूनतम मानक पूरे होते हों। इसी कानून के तहत हर निजी स्कूल में 25 प्रतिशत सीटें आर्थिक रूप से विपन्न वर्ग के बच्चों के लिए आरक्षित की गई हैं। हालांकि ज्यादातर प्राइवेट स्कूलों में इसका पालन ठीक तरह से नहीं हो रहा है। सुब्रमण्यम समिति द्वारा बनाई गई नई शिक्षा नीति से क्या देश की स्कूली शिक्षा की सारी समस्याएं कुछ ही समय में खत्म हो जाएंगी? इस बात पर बहस जरूरी है कि संविधान में छह से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा देने की गारंटी को देश अभी तक क्यों पूरा नहीं कर पाया? क्यों आज भी तीन करोड़ बच्चे प्रारंभिक शिक्षा से वंचित हैं? लाखों सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में आज भी बुनियादी सुविधाएं, जैसे भवन, फर्नीचर, शिक्षक, शौचालय, किताबें उपलब्ध नहीं हैं। क्या नई शिक्षा नीति में इनके लिए समुचित वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था की गई है? क्या स्कूली शिक्षकों की भर्ती व प्रशिक्षण के बारे में कोई मौलिक विचार दिया गया है?

सुब्रमण्यम समिति का सबसे ज्यादा चर्चित सुझाव शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में लागू किए गए आठवीं कक्षा तक किसी भी विद्यार्थी को फेल न करने के प्रावधान को बदलकर पांचवीं कक्षा तक

सीमित करना है। समिति ने छठी से आठवीं कक्षा तक पढ़ाई में कमजोर बच्चों को सुधारात्मक कोचिंग देने और परीक्षा पास करने के दो अतिरिक्त अवसर देने का सुझाव दिया है। निजी स्कूलों में 25 प्रतिशत स्थान गरीब वर्ग के बच्चों के लिए आरक्षित करने के प्रावधान का सुब्रमण्यम समिति ने पुरजोर समर्थन किया है और उसे अल्पसंख्यक वर्ग के स्कूलों में भी लागू करने का सुझाव दिया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में स्कूली शिक्षा की क्वालिटी सुधारने के वास्ते प्राइवेट स्कूलों के लिए भूमि, भवन, शिक्षक, फर्नीचर, विषयक जो न्यूनतम मानक लागू किए गए थे, उन मानकों को सरकारी स्कूलों पर भी सख्ती से लागू करने का सुझाव दिया है। साल 1968 की शिक्षा-नीति के अंतर्गत लागू किए गए त्रिभाषा फॉर्मूले के त्रुटिपूर्ण क्रियान्वयन पर भी सुब्रमण्यम कमेटी मुखर है। इसका कहना है कि पांचवीं तक शिक्षा बच्चों की मातृभाषा में दी जानी चाहिए और प्राथमिक स्तर पर दूसरी भाषा तथा माध्यमिक स्तर पर तीसरी भाषा के चुनाव का अधिकार राज्य सरकारों के ऊपर छोड़ दिया जाना चाहिए, यानी त्रिभाषा फॉर्मूले से कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है।

सुब्रमण्यम समिति ने 10वीं की परीक्षा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का सुझाव दिया है। चूंकि 10वीं की परीक्षा में फेल होने वाले ज्यादातर बच्चे गणित व विज्ञान विषयों से होते हैं, इसलिए इन दो विषयों में अब दो तरह से प्रश्न-पत्र बनाए जाएंगे - बुनियादी और उच्च स्तर। विद्यार्थियों का दोनों में से कोई भी प्रश्न-पत्र चुनने का विकल्प रहेगा। समिति को एक और अच्छा सुझाव मिड-डे मिल योजना को 10वीं तक के स्कूलों में विस्तारित करने का है। समिति का यह भी कहना है कि शिक्षकों को मिड-डे मील के संचालन से मुक्त रखा जाए। समिति ने स्वयंसेवी और सामाजिक संस्थाओं से यह योजना संचालित करवाने को कहा है।

स्कूली शिक्षा की सबसे कमजोर कड़ी है शिक्षक, जिनमें से अधिकांश में इस पेशे से कोई आत्मीय लगाव नहीं पाया जाता है। उनके लिए यह सिर्फ रोजी-रोटी का साधन है। कमेटी ने यह माना है कि स्कूली शिक्षा की क्वालिटी सुधारने का एकमात्र उपाय यह है कि शिक्षकों की नियुक्ति, न्यूनतम योग्यता, प्रशिक्षण और पेशे के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में गुणात्मक सुधार करना। मौजूदा शिक्षकों को पांच वर्ष में एक बार प्रशिक्षण देने का सुझाव दिया गया है और भविष्य में नए शिक्षकों की भर्ती के लिए पांच वर्षीय एकीकृत बीए/बीएससी-बीएड कोर्स शुरू करने की सिफारिश भी की गई है, जो 10वीं और 12वीं के बाद शुरू होंगे। समिति ने स्कूली पाठ्यक्रम और पुस्तकों के लेखन में शिक्षक संघों की भागीदारी की भी सिफारिश की है।

हमारी स्कूली शिक्षा संख्यात्मक रूप से कितनी भी आगे बढ़ रही हो, पर गुणात्मक रूप से उसमें सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। बिहार की 12वीं की बोर्ड परीक्षा में गत वर्ष जो कुछ हुआ, उससे वहां की स्कूली शिक्षा की हालत का जायजा लिया जा सकता है। इसी राज्य में जब प्राइमरी स्कूलों के तदर्थ शिक्षकों की नौकरी नियमित करने के लिए परीक्षा ली गई, तो शिक्षक भी बेशर्मी से नकल करते पाए गए। स्कूली शिक्षा की दुर्दशा सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं है, कम या ज्यादा सब जगह यही हाल है।

भारत की स्कूली शिक्षा को आज जिस ऊर्जावान रूपान्तरण, नेतृत्व क्षमता, कुशल प्रबंधन और विपुल संसाधनों की जरूरत है, उसकी स्पष्ट तस्वीर सुब्रमण्यम कमेटी की रिपोर्ट में नहीं दिखाई देती। साल 1991 के बाद उदारीकरण के दौर में केन्द्र और राज्यों की अधिकांश सरकारें स्कूली शिक्षा में सुधार की बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाती रहीं, पर उनके सफल क्रियान्वयन में वे पूरी तरह नाकामयाब रहीं हैं। इसका मूल कारण स्कूली शिक्षा के कायाकल्प के प्रति राजनीतिक इच्छा शक्ति का नितांत अभाव होना है।

हमारी स्कूली शिक्षा साफ तौर पर वर्ग-विभाजन और सामाजिक भेदभाव का शिकार है। देश में संपन्न वर्ग और शिक्षित मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चों के लिए महंगे और आलीशान स्कूल हर शहर में उपलब्ध हैं।

वहीं दूसरी ओर गरीब व पिछड़े वर्ग के बच्चे उन सरकारी या निजी स्कूलों में धकेल दिए जाते हैं, जहां दिखावटी तौर पर बुनियादी ढांचा तो खड़ा है, किन्तु पढ़ाई-लिखाई सिर्फ नाम के लिए होती है। सुब्रमण्यम समिति की सिफारिशों में शिक्षा नीति को 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप बनाने की बात कही गई है, पर उसमें केन्द्र व राज्य सरकारों को देश के हर बच्चे को एक जैसी अच्छी क्वालिटी की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार नहीं बनाया गया है।

दैनिक हिन्दुस्तान से साभार

With Best Compliments For Navratri

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :

2nd Floor, 26-NB Complex, Ahemdabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)

Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142

Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

नीतीश कुमार मोदी शरणम् गच्छामि

सत्ता की मलाई चाटने के लिए जनादेश का चीरहरण

कांग्रेस का राजद के साथ खड़ा रहना विस्मयकारी

-शांतिलाल शर्मा

बिहार राजनीतिक विहार का केन्द्र बन गया। नीतीश कुमार फिर एनडीए के पाले में आए, जिनके खिलाफ उन्होंने राजद व कांग्रेस के साथ महागठबंधन बनाया था। एक बार सियासत बिहार में फिर से सिर के बल खड़ी है और महागठबंधन तार-तार हो गया, जिसका कारण बना उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के खिलाफ भ्रष्टाचार का आरोप। लालू पर तो 1995 से ही सीबीआई द्वारा चारा घोटाले के आरोप चस्पा हैं। राजद ओर कांग्रेस के लिए नाजुक समय आन पड़ा है।

'साझे की हंडिया चौराहे पर फूटती है' कदाचित यह कहावत बिहार में जदयू-राजद कांग्रेस के महागठबंधन पर फिट है। 2015 में बिहार के दो दिग्गज महारथियों ने गठजोड़ कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के देशव्यापी विजय-रथ को रोक दिया था। हालांकि यह महागठबंधन बेमेल स्तम्भों पर टिका था, जिसे एक दिन बिखरना ही था। लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार का राजनैतिक याराना तीन दशक पुराना है। हालांकि इस दौरान इनके बीच रिश्ते ऐसे तल्ख भी रहे कि एक-दूसरे को देखना तक पसंद नहीं किया। फिर भी लालूजी को 'जान बचावे खातिर ई कड़वी दवा पिये ही पड़ी....' और महागठबंधन अस्तित्व में आया। लालू और नीतीश ने बिहार में सरकार की गाड़ी को बीस माह तक खींचा। किसी समय बिहार में कांग्रेस का परचम निर्विघ्न फहराता था। लेकिन इन खांटी राजनीतिज्ञों ने कांग्रेस को हाशिये पर ला दिया। लालू ने वहां पन्द्रह साल एकछत्र राज किया, नीतीश 2005 से अब तक सीएम हैं। बीच में कुछ माह उनकी ही पार्टी के जीतनराम मांझी कुछ समय सीएम रहे। पहली बार वे 2000 में भाजपा की मदद से 7 दिन सीएम बने, फिर इस्तीफा देकर केन्द्र में रेल मंत्री बने। 2005 में भी वे दूसरी बार भाजपा के सहयोग से और तीसरी बार भी उसकी मदद से ही सीएम बने। परन्तु जून 2013 में एनडीए गठबंधन के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी नरेन्द्र मोदी का पुरजोर विरोध करते हुए उन्होंने भाजपा के साथ गठबंधन तोड़ दिया। हालांकि आम चुनाव में नीतीश को करारी शिकस्त मिली और भाजपा को बिहार में भारी विजय मिली। लेकिन नवम्बर 2015 में नीतीश और लालू ने कांग्रेस इत्यादि पार्टियों से महागठबंधन कर भाजपा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को निहत्था कर दिया। उस समय लगा कि भाजपा का देश की सत्ता से अवरोह शुरू हो जाएगा। परन्तु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की जोड़ी ने राष्ट्रीय स्तर पर उभरते महागठबंधन की हवा निकाल दी। अगले आम चुनाव से पहले ही महागठबंधन में सेंध लगा कर 2019 के आम चुनाव संभावित झांकी दिखा दी।

उलझा जातीय समीकरण

राष्ट्रीय राजनीति में बिहार निर्णायक भूमिका निभाता आया है। इसके विभाजन से झारखण्ड पृथक राज्य बनने के बाद भी इसकी राजनीतिक हैसियत कम नहीं हुई। जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया जैसे दिग्गज समाजवादी चिंतकों ने उत्तर-पूर्वी राज्यों को काफी प्रभावित किया और धीरे-धीरे बिहार में सामाजिक न्याय और दलित-पिछड़े-अल्पसंख्यक वर्ग की सोशल इंजीनियरिंग कारगर होती गई। लालू प्रसाद यादव के उभार के बाद बिहार की राजनीति जाति-समूहों और उन से बनने वाले समीकरणों पर चलने लगी। उन्होंने सामाजिक न्याय का नारा देकर पिछड़ों और दलितों को लामबंद किया। पिछले दो दशक से नीतीश कुमार भी लालू प्रसाद की तरह जाति-समूह की

राजनीति ही कर रहे हैं। नीतीश ने सामाजिक न्याय के साथ विकास का नारा दिया। लालू प्रसाद द्वारा तैयार राजनीतिक जमीन पर नीतीश चालाकी और चतुराई से वोटों की फसल बोने-काटने में माहिर हो गए और गैर-यादव जातियों की गोलबंदी कर पिछड़ों के नेता बन गए। बिहार में जाति का गणित आसान नहीं, क्योंकि वहां ओबीसी में 10, मुस्लिमों में 42 और अति-पिछड़ा समूह में तो जातियों की संख्या 120 के पार हैं। फिर वहां ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ और जैनियों की भी काफी संख्या हैं।

नीतीश कुमार और लालू ने अपना राजनैतिक कॅरियर लगभग एक साथ शुरू किया और दोनों ने सामाजिक न्याय का नारा बुलंद किया। जॉर्ज फर्नांडीस के नेतृत्व में नीतीश 1994 में लालू प्रसाद से अलग हो गए। उस समय नीतीश की एक परजीवी नेता से ज्यादा हैसियत नहीं थी, जबकि लालू प्रसाद की जमीनी स्तर पर पकड़ मज़बूत थी। लालू के बढ़ते राजनीतिक कद के आगे नीतीश खुद को बौना पा रहे थे। भाजपा भी लगभग हाशिए पर थी। लालू को कमजोर करने के लिए भाजपा ने नीतीश कुमार को आगे किया। 18 साल तक नीतीश ने भाजपा के साथ रह कर सत्ता और गठबंधन का सुख भोगा। धीरे-धीरे ताकत बढ़ाई।

फिर भी राज्य में किसी न किसी सहारे की उन्हें जरूरत रही। तेरह साल तक भाजपा के हमराही नीतीश ने लोकसभा चुनाव से पहले गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को राजग की ओर से प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनाए जाने पर भाजपा का साथ छोड़ा, परन्तु भाजपा ने इस चुनाव में बिहार में बाकी दलों को धूल चटा दी। सियासी अस्तित्व बचाने लालू और नीतीश फिर साथ आ गए। सुशासन और कुशासन के अलंबरदार एक जाजम पर बैठ गए। कांग्रेस ने भी इन दोनों के साथ रहने में ही भलाई समझी। आखिर सभी दलों ने महागठबंधन बनाया और दिसम्बर 2015 में बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा को मात दे दी। तब दिल्ली के बाद बिहार में दूसरी बार भाजपा की कमरतोड़ हार हुई।

बदलते वादे-इरादे

महागठबन्धन से अलग होने का नीतीश कुमार का फैसला भले ही जल्दबाजी में हुआ, परन्तु इसकी पटकथा 6 माह पहले लिखी जा चुकी थी। सूबे में सरकार तो वही है, जो बीस माह पहले थी। यानी चेहरा तो नीतीश कुमार ही है, पर साझेदार बदल गए। पहले सूबे के उप मुख्यमंत्री लालू के बेटे तेजस्वी यादव थे, आज नरेन्द्र मोदी के चहेते सुशील कुमार मोदी हैं। इस राजनीतिक खेल के दृश्य मुंबइया फिल्मों की तरह बदलते गए। नेताओं की प्राथमिकताएं इस तरह से बदली जैसे कोई सुबह-शाम, मौसम अथवा पसंद के अनुसार लिबास बदलता है।

नीतीश हों या लालू, भाजपा के अमित शाह हों या नरेन्द्र मोदी कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी हो या राहुल गांधी, सबने अपनी सुविधा के अनुसार राजनीतिक मेलजोल या तलाक की परिभाषाएं गढ़ कर भारतीय लोकतंत्र को उपहास का पात्र बनाया है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया, साम्प्रदायिकता विकास में बदल गई, कुशासन, सुशासन में और जंगलराज, मंगलराज के सांचे में ढल कर वंदनीय हो गया। जन सरोकार बेमानी हो गए। नेताओं का उद्देश्य सत्ता की मलाई चाटना हो गया। जनादेश का ऐसा चीर हरण आखिर कब तक ?

करना था इनकार मगर किया इकरार

'मैं मर जाऊंगा पर भाजपा के साथ नहीं जाऊंगा' की गर्जना करने वाले नीतीश कुमार बहुत पहले से ही लालू प्रसाद से पिण्ड छुड़ाने और भाजपा की गोद में बैठने की कोशिशों में थे। फरवरी में प्रकाश पर्व के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब पटना गए तो नीतीश ने उनके साथ मंच साझा किया। दोनों ने एक-दूसरे की तारीफों के पुल बांधे और 'ना-ना करते प्यार कर बैठे, करना था इनकार मगर इकरार कर बैठे।' इससे पहले भी नीतीश मोदी सर्जिकल स्ट्राइक और नोटबंदी के फैसलों पर खुल कर मोदी के साथ रहे। राष्ट्रपति चुनाव में जब एनडीए के प्रत्याशी रामनाथ कोविंद सामने आए तो वे उनके पक्ष में मजबूती से खड़े हो गए। उन्होंने बेनामी संपत्ति व भ्रष्टाचार के मुद्दे पर केन्द्र सरकार की कार्रवाई का पुरजोर समर्थन किया। इन गलबहियों का परिणाम जब लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार पर शिकंजा कसने के रूप में आया तो वे अलग खड़े नजर आए। उनके मंत्रिमंडल सहयोगी तेजस्वी यादव पर जब ईडी ने कार्रवाई की तो नीतीश ने उप मुख्यमंत्री पद छोड़ने का दबाव बनाया। लालू प्रसाद की भौंहे तन गई और दोनों के बीच तलवारें खिंच गई। जब लालू ने अपने बेटे तेजस्वी का बचाव किया और उप मुख्यमंत्री पद छोड़ने से मना किया तो नीतीश कुमार ने नई चाल चलते हुए स्वयं ही 27 जुलाई को पद से इस्तीफा दे दिया और पन्द्रह घंटे बाद फिर से सत्ता हासिल करने में कामयाब हो गए। उन्होंने अपनी पार्टी के अध्यक्ष शरद यादव तक की परवाह किए बिना भाजपा के सहयोग से विधानसभा में बहुमत भी प्राप्त कर लिया। फिलहाल वे अजेय योद्धा के रूप में स्थापित हो गए हैं। 242 सदस्यीय विधानसभा में उन्हें अपने अनुमान के मुताबिक 131 विधायकों का समर्थन प्राप्त हो गया। उनके मंत्रिमंडल में सुशील मोदी को छोड़कर वही मंत्री हैं जो पूर्व मंत्रिमंडल में थे। अब जदयू के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व अध्यक्ष शरद यादव की स्थिति सांप-छछूंदर सी है। न वे पार्टी से अलग हो सकते हैं और न ही नीतीश-भाजपा गठबंधन के साथ कदमताल कर सकते हैं।

रंग बदलते चेहरे

लालूप्रसाद यादव और उनकी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल की मुश्किलें काफी बढ़ गई हैं। बिहार की सत्ता में बड़ी भागीदारी के बल पर वे केन्द्र और खासकर प्रधानमंत्री पर आंखें तरेरा करते थे। अब बैकफुट पर खड़े हैं। वे पहले ही चाबईबासा ट्रेजरी से 37.7 करोड़ की फर्जी निकासी के मामले में जेल की सजा पाकर बेल पर हैं। रेलवे मंत्री रहते अवैध लाभ और अन्य कई मामलों में वे आरोपी हैं। उनका बेटा तेजस्वी व बेटी मीसा भी प्रवर्तन निदेशालय के निशाने पर हैं। कभी उन्होंने कहा था कि मैं भाजपा रूपी भस्मासुर और मोदी सरकार रूपी लंका को जला कर राख कर दूंगा। हाल फिलहाल तो उनके लिए अपना राजनैतिक अस्तित्व बचाना और राजद को एकजुट रखना ही भारी पड़ रहा है। महागठबंधन में शामिल कांग्रेस ने भी इस बार लालू परिवार का साथ देकर भ्रष्टाचार के खिलाफ लडने और खड़े होने के संकल्प को धुंधला दिया। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि वह किस नैतिक आधार पर राजग के खिलाफ भ्रष्टाचार पर हल्ला बोलती है। 2019 के लोकसभा चुनाव के सिलसिले में बिहार की तर्ज पर प्रमुख विपक्षी दलों द्वारा देशव्यापी महागठबंधन बनाने का सपना एकबारगी तो दम तोड़ चुका है। अभी चौदह माह बाकी हैं और मोदी-शाह की जोड़ी कई राजनैतिक दांव आजमाने की तैयारी में है। यूपी की सबसे बड़ी चुनौती को वे पार कर चुके हैं। इस साल के अन्त में गुजरात विधानसभा और हिमाचल प्रदेश में भी विधानसभ चुनाव हैं। बिहार के भाजपा पाले में आने से 19 राज्य एनडीए शासित हो गए हैं।

देश की बुनियादी सांस्कृतिक एकता पर अंग्रेजी का प्रहार

हिन्दी को नहीं मिला हक़, गुनहगार कौन?

-विष्णु शर्मा हितैषी

राष्ट्रभाषा किसी भी राष्ट्र की स्व-अस्मिता का पर्याय होती है, लेकिन आजादी के बाद भारत में भाषा का प्रश्न मुद्दा बना दिया गया। देश का बड़ा हिस्सा इस भाव से भरा है कि अंग्रेजी विश्वभाषा है और उसके बिना न देश का विकास होगा और न ही जनता सभ्य होगी। जब अंग्रेजों ने इस देश पर अपना साम्राज्य स्थापित किया, उस वक्त भी गोरी हुकूमत का यही तर्क था कि भारत सपेरों, लुटेरों, बहुरूपियों, पाखंडियों, पिछड़ों, असभ्य और नासमझ लोगों का मुल्क है, जिन्हें शिक्षित, समझदार, विकसित करने के लिए ब्रिटिशराज की जरूरत है। दो सौ साल से अधिक समय तक देश पर ब्रिटेन का राज रहा। गुलामी की मानसिकता हमारे मूलाधार से उठ कर सहस्रनाल चक्र तक जा चढ़ी। कोई हमें लाख समझाए कि अब आजादी मिल गई है, तुम्हें देश चलाने और अपने स्व-विकास की पूरी छूट है। फिर भी हम इस पराधीनता की तंद्रा से कभी उबरना नहीं चाहते। यही कारण है कि गोरी हुकूमत की विदाई के बाद भी लोगों ने ढर्रा अपनाया, जो अंग्रेज छोड़ गए। आज तक अंग्रेजियत ने हमें अपना वजूद तक पहचानने का मौका नहीं दिया है। हम हारिल पक्षी की मानिंद ही रहे, जो मर जाने के बाद भी उस टहनी को थामे रहता है, जिस पर बैठा था। इससे आगे इसने जाने की कभी कोशिश ही नहीं की।

14 सितम्बर 1949 को संविधान निर्मात्री परिषद ने संविधान में हिन्दी को राजभाषा (ऑफिशियल लैंग्वेज) के रूप में प्रतिष्ठित किया था। पूरे देश में इस उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। देखना यह है कि यह आयोजन रस्मी तौर पर सरकारी कार्यक्रम ही नहीं बन जाए। सिर्फ इस दिन कोई गोष्ठी या सभा समारोह करने के बजाय हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु ठोस कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए और और इसमें देश की जनता की पूरी सहभागिता रहे।

भाषा और पहचान खोता राष्ट्र

स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष काल में बहुभाषी मुल्क की एकजुटता के लिए ऐसी भारतीय भाषा की अनिवार्यता महसूस की गई थी, जिसमें समूचा देश संवाद कर सके। यह काम हिन्दी ने बखूबी किया भी। आजादी मिलते ही देश फिर से विशृंखलन की राह पर बढ़ गया। भाषा के प्रश्न को त्रिशंकु अवस्था में ही झूलते रहने दिया। देश ने एक क्षण रुक कर यह सोचना चाहा ही नहीं कि हम जिस यक्ष प्रश्न को अधरझूल में छोड़ रहे हैं। वह कभी जाकर हमारे लिए आत्मघाती होगा। आजाद भारत की शुरुआती सरकारों के लिए अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाना विवशता थी, क्योंकि तत्कालीन शासन व्यवस्था का पैटर्न अंग्रेजी ही था। संविधान निर्माण से सम्बद्ध नेताओं ने भी अन्य अंग्रेजी परस्त देशों के संवैधानिक प्रावधान का सहारा लिया। संविधान भी अंग्रेजी में ही तैयार किया गया। भाषा का प्रश्न तो दार्शनिक, चिंतक, साहित्यकार और शिक्षाविद् ही हल कर सकता है, परन्तु उस वक्त यह प्रश्न सिर्फ राजनेताओं तक ही सीमित रखा गया। संविधान में राजभाषा के रूप में अंग्रेजी को 15 साल तक रहने की व्यवस्था कर दी गई। फिर भी संविधान का निर्देश था कि सक्षम और उन्नत हो जाने की स्थिति में अंग्रेजी को हटाकर हिन्दी को राजभाषा का पद दे दिया जाए। 1965 में हिन्दी को राजभाषा के पद पर बिठा भी दिया गया लेकिन जब हिन्दी को विधायी रूप से प्रतिष्ठित करने का समय आया तो क्षेत्रीय राजनीति के षड़यंत्रों का अन्तहीन दौर चल पड़ा, दक्षिण के कुछ राज्यों ने आन्दोलन, आगजनी और हिंसा का सहारा लेकर यह जताया कि हिन्दी को थोपा जा रहा है, जबकि उन्हें विदेशी भाषा के विरोध में उतरना था। संविधान में तो हिन्दी समेत भारत की इक्कीस प्रांतीय भाषाओं को सूचीबद्ध कर सम्मान दिया गया है, जिसके अनुसार केन्द्र का कामकाज हिन्दी में तथा प्रांतीय सरकारों का कामकाज उनकी अपनी भाषा में होना था।

लगभग दो साल तक सियासत की चक्की में राजभाषा का प्रश्न पिसता रहा। सन् 1967 में संसद में राजभाषा संशोधन विधेयक पारित किया गया। राजभाषा का प्रश्न इससे और भी उलझा दिया। इसमें मुख्य रूप से यह प्रावधान था कि सरकारी कामकाज में अंग्रेजी सहभाषा तब तक बनी रहेगी, जब तक अहिन्दी भाषी राज्य हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने को सहमत नहीं हो जाते। यानी अंग्रेजी को सहभाषा और हिन्दी को राजभाषा का पद देकर गौरवान्वित किया गया, परन्तु नई व्यवस्था में राजभाषा के रूप में अंग्रेजी महारानी बनी रहेगी और हिन्दी को नाममात्र के लिए पटरानी बनाया गया। चूंकि संविधान अंग्रेजी में ही बना है। अंग्रेजी इस बात के लिए विख्यात है कि इसमें कई अनकही बातें भी 'इफ', 'बट', 'आलदो', 'विचएवर' के

कूट शब्दों में प्रभावी हो सकती है। उदाहरण के लिए संविधान में लिखा है 'इंडिया, देट इज भारत' इस अर्द्धविराम (कोमा) के सहारे इंडिया ने भारत को अब तक दोयम दर्जे का बनाए रखा हुआ है। राजभाषा के सम्बन्ध में संविधान में दी गई व्यवस्था 343(1) को हिन्दी के लिए वरदान समझा गया है, परन्तु 343(2) और 343(3) की व्यवस्थाओं ने इस वरदान को अभिशाप में परिवर्तित कर दिया, ताकि अंग्रेजियत का वर्चस्व बना रहे।

एलीट क्लास हावी

आजादी के बाद भाषाओं का युद्ध, भाषा-भाषियों के युद्ध में तब्दील हो गया। हिन्दी का तो किसी भी भारतीय भाषा से कोई झगड़ा ही नहीं है। सभी प्रांतीय भाषाएं देश के लोगों के बीच पली-बढ़ी हैं। लगभग सभी भारतीय भाषाओं की व्युत्पत्ति संस्कृत से हुई है। फ़र्क सिर्फ इतना है कि प्रांतीय भाषाओं का उच्चारण भिन्न है। शैली के कारण ही वे अलग-अलग नज़र आती हैं। तमिल, कन्नड़, तेलगू, बंगाली सभी सहोदर हैं। यहां तक कि हिन्दी, उर्दू में भी खास अंतर नहीं। इनमें एक-दूसरे के सैकड़ों शब्द प्रचलन में हैं। अरबी लिपि में लिखी जाने वाली भाषा उर्दू कहलाई, वही भाषा नागरी लिपि में लिखी जाए तो हिन्दी है।

प्रांतीय भाषाओं का अंज़ाम वही हुआ जो 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के पक्ष में रहने वाले देशी राजाओं का हुआ। उन्हें ब्रिटिश हुकूमत ने अपने रजवाड़ों में कैद कर लिया था। आज देशी अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं को आपस में लड़ा कर अंग्रेजी को बहुरानी बना दिया और हिन्दी व भारतीय भाषाएँ उनके सामने चाकरी कर रही हैं। उन्होंने ऐसा भाषाई ब्रह्मास्त्र बना लिया कि लोग भाषा के प्रश्न पर मारकाट पर आमादा हैं। प्राइमरी से ही अंग्रेजी शिक्षा होगी, तभी उच्च शिक्षा में संभावनाएं हैं। इस फार्मूले पर कॉन्वेंट स्कूल गलियों में कुकुरमुत्तों की तरह उगने लगे।

सरकारें भी इन्हें प्रश्रय देने में लगी रही। हिन्दी मीडियम स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को बोध कराया जाता है कि हिन्दी पिछड़ों की भाषा है और इसका कोई भविष्य नहीं। इससे वे विद्यार्थी आजन्म हीन ग्रंथि से ग्रस्त रहते हैं। फलस्वरूप अनगिनत बेरोजगार युवक तैयार हो रहे हैं, जो अंग्रेजी में तो अनुपयुक्त हैं ही हिन्दी के लिहाज़ से भी मुफ़ीद नहीं। दशकों तक आईएएस-पीसीएस की सिविल सर्विसेज की परीक्षाएं केवल अंग्रेजी में होती रही हैं। अब हिन्दी और संविधान में उल्लिखित इक्कीस भाषाओं में सिविल सेवा का प्रतियोगी अपनी भाषा के कारण दोयम दर्जे का मान लिया जाता है। पहले जैसे अंग्रेज भारतीय को देखते थे, वैसे अब आंग्ल भाषी एलीट क्लास इस वर्ग को देखता है जो मात्र 0.2 प्रतिशत ही है। हाई स्कूल तक भारतीय भाषाओं के विद्यार्थी अपनी भाषा में विज्ञान या तकनीकी की शिक्षा पाते हैं, लेकिन उच्च शिक्षा में अंग्रेजी के भंवरजाल में उलझ कर डूब जाना ही उनकी नियति बन रहा है।

भविष्य उज्जवल, सियासत बंद हो

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आज देश में शिक्षा, अर्थव्यवस्था, तकनोलॉजी, विज्ञान और अन्य कई क्षेत्रों में अंग्रेजी का बोलबाला है। लेकिन एक बात साफ है कि अंग्रेजी वैश्विक भाषा नहीं है। इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच समुद्री दूरी 21 किमी है, लेकिन वहां अंग्रेजी नहीं फ्रेंच में काम होता है। फ्रांस ही नहीं यूरोप के हर देश जर्मनी, हॉलैण्ड, पोलैण्ड आदि देश में अपनी राजभाषा व राष्ट्रभाषा है, अंग्रेजी नहीं। सोवियत संघ की रूसी, चीन व जापान आदि भी अपनी भाषा के बल पर ही विश्व के सिरमौर बने हैं। भारत को अंग्रेजी पर इतना ज्यादा मंत्रमुग्ध होने की कोई जरूरत नहीं। भाषा कोई भी बुरी नहीं और उसे सीखा व काम में लिया जा सकता है, परन्तु अपनी मातृभाषा को भूलना, अपनी जड़ों से कटने जैसा है। अंग्रेजी का हम प्रयोग करें, महारत हासिल करें, पर बात सिर्फ इतनी सी है कि अपनी जड़ों को नहीं काटें। कोई माने या न मानें, हिन्दी विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सबसे मुखर भाषा है।

50 करोड़ से अधिक बहुसंख्यक जनता का भविष्य हिन्दी में ही है। मल्टीनेशनल कंपनियों ने इस तथ्य को समझ कर हिन्दी पर विशेष ध्यान दिया है। यह भाषा बाजार, व्यापार, वाणिज्य का आज़माया हुआ नुस्खा है। भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में फिल्मों का बड़ा योगदान है। सांस्कृतिक रूप से भारत में होने वाले सबसे बड़े आयोजनों में सम्पर्क भाषा एक मात्र हिन्दी है। देश में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा जो हिन्दी बोल अथवा समझ न सके। जरूरत है राजनैतिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर हिन्दी और भारतीय भाषाओं के पुनःस्थापन की। भारत में पूर्ण बहुमत से बनी केन्द्र सरकार आगे बढ़ कर राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को यथोचित सम्मान देकर इस दिशा में बड़ा योगदान दे सकती है।

देश को राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत और अन्य राष्ट्रीय प्रतीक मिले हैं तो राष्ट्रभाषा अब तक क्यों नहीं मिल पाई ? अंग्रेजी के प्रचलन को रोकने की कोई जरूरत नहीं है, बस हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को समादृत और उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। हिन्दी अपने आप में इतनी सशक्त है कि वह अपना स्थान स्वतः बना चुकी है, सिर्फ उसे संरक्षण की दरकार है। आज आधुनिक तकनीकी दृष्टि से हिन्दी में काफी यांत्रिक मशीनरी विकसित व उपलब्ध है।

सहिष्णुता ही भारत की आत्मा

- प्रणब मुखर्जी

'भारत की आत्मा बहुलवाद और सहिष्णुता में बसती है। भारत महज एक भौगोलिक सत्ता नहीं है। यह विचारों, दर्शन, बौद्धिकता, औद्योगिक प्रतिभा, शिल्प और अनुभव का इतिहास समेटे हुए महान परम्परा वाला देश है। सहृदयता और सहानुभूति की क्षमता हमारी सभ्यता की सच्ची नींव रही है। लेकिन इन दिनों हम अपने आसपास बढ़ रही हिंसा को देख रहे हैं। इसकी जड़ में अज्ञानता, भय और अविश्वास है।

हमें अपने जनसंवाद को शारीरिक और मौखिक सभी तरह की हिंसा से मुक्त करना होगा। एक अहिंसक समाज ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया में लोगों के सभी वर्गों विशेषकर पिछड़ों और वंचितों की भागीदारी सुनिश्चित कर सकता है। हमें एक सहानुभूति और जिम्मेदार समाज निर्माण के लिए अहिंसा की ताकत को फिर से जगाना होगा। हमारे बहुलवाद समाज का निर्माण सदियों से विचारों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति के चलते हुआ है। संस्कृति, पंथ और भाषा की विविधता ही भारत को विशेष बनाती है। हमें सहिष्णुता से शक्ति मिलती है। यह सदियों से हमारी सामूहिक चेतना का अंग रही है। जनसंवाद के विभिन्न पहलू हैं। हम तर्क-वितर्क कर सकते हैं, हम सहमत हो सकते हैं या सहमत नहीं हो सकते, लेकिन हम विविध विचारों की मौजूदगी की जरूरत को नकार नहीं सकते। अन्यथा हमारी विचार प्रक्रिया का मूल स्वरूप ही नष्ट हो जाएगा। पिछले 50 साल के सार्वजनिक जीवन के दौरान भारत का संविधान मेरा पवित्र ग्रंथ रहा है। भारत की संसद मेरा मंदिर और जनता की सेवा मेरी अभिलाषा रही है।'

हमारे लिए समावेशी समाज का निर्माण विश्वास का एक विषय होना चाहिए। गांधीजी भारत को एक ऐसे समावेशी राष्ट्र के रूप में देखते थे, जहां आबादी का हर वर्ग समानता के साथ रहता हो और समान अवसर प्राप्त करता हो। वह चाहते थे कि हमारे लोग एकजुट होकर निरंतर व्यापक हो रहे विचारों और कार्यों की दिशा में आगे बढ़ें। वित्तीय समावेशन समतामूलक समाज का प्रमुख आधार है। हमें गरीब से गरीब व्यक्ति को सशक्त बनाना होगा। यह तय करना होगा कि हमारी नीतियों के फायदे कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। विकास को वास्तविक बनाने के लिए, देश के सबसे गरीब

संसद में समय की बर्बादी चिंतनीय

सविधान देश की गरिमा

संसद के दोनों सदनों के सदस्यों के बीच राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 23 जुलाई को विदाई भाषण में अपने संसदीय कार्यकाल के दौरान तमाम उतार-चढ़ाव, सीख और पुरानी यादों का जिक्र किया। संसद में समय की बर्बादी पर उन्होंने कहा कि 'पहले संसद में गंभीर चर्चा होती थी। संसद बहस, चर्चा, असहमति व्यक्त करने का स्थान होता है और संसद की कार्यवाही बाधित होने से सबसे अधिक नुकसान विपक्ष को होता है। अध्यादेश का रास्ता केवल अपरिहार्य परिस्थिति में अपनाया जाना चाहिए। संसद ने मुझे एक व्यक्ति के रूप में निर्मित किया। लोकतंत्र के इस मंदिर में मेरी रचना हुई। मैं 37 साल तक राज्यसभा और लोकसभा का सदस्य रहा। मैं 22 जुलाई, 1969 को अपने पहले राज्यसभा सत्र में शामिल हुआ। संसद में 37 साल का सफर 2012 में 13वें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होने के बाद खत्म हुआ था, फिर भी जुड़ाव वैसा ही रहा। 'हमारा संविधान देश की गरिमा है। इससे सामाजिक, आर्थिक बदलाव की रूपरेखा बनाई जा सकती है। संविधान एक अरब देशवासियों की आत्मा है। पहले संसद में गंभीर चर्चा होती थी। राज्यसभा उत्कृष्ट वक्ताओं से भरा था। अब व्यवधान और बहिष्कार से सदन का नुकसान होता है। संसद में चर्चा का समय घट रहा है। अब मैं संसद का हिस्सा नहीं रहूंगा। यादों का इन्द्रधनुष लेकर मैं आपसे विदा लेता हूं।'

को यह महसूस होना चाहिए कि वह राष्ट्र गाथा का एक हिस्सा है। मैंने राष्ट्रपति का पद ग्रहण करते समय भी कहा था कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो भारत को स्वर्ण युग में ले जा सकता है। शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति से समाज को पुनर्व्यस्थित किया जा सकता है। इसके लिए हमें अपने उच्च संस्थानों को विश्वस्तरीय बनाना होगा। विश्वविद्यालयों को रटकर याद करने वाला स्थान नहीं, बल्कि जिज्ञासु व्यक्तियों का सभा स्थल बनाया जाना चाहिए। हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों में रचनात्मक विचारशीलता, नवान्वेषण और वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना होगा। इसके लिए विचार-विमर्श, वाद-विवाद और विश्लेषण के जरिए तर्क प्रयोग करने की जरूरत है। ऐसे गुण पैदा करने होंगे और मानसिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना होगा।

पर्यावरण की सुरक्षा हमारे अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है। प्रकृति हमारे प्रति पूरी तरह उदार रही है, लेकिन लालच जब जरूरत की सीमा को पार कर जाता है, तो प्रकृति अपना प्रकोप दिखाती है। अक्सर हम देखते हैं कि भारत के कुछ भाग विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित हैं, जबकि अन्य भाग गहरे सूखे की चपेट में हैं, जबकि अन्य भाग गहरे सूखे की चपेट में हैं। हमारी मिट्टी की सेहत सुधारने, जल स्तर की गिरावट को रोकने और पर्यावरण संतुलन को सुधारने के लिए करोड़ों किसानों और श्रमिकों के साथ काम करना होगा। हम सबको अब मिलकर काम करना होगा, क्योंकि भविष्य में हमें दूसरा मौका नहीं मिलेगा।'

खुशहाली मानव जीवन के लिए जरूरी है। खुशहाली समान रूप से आर्थिक और गैर आर्थिक मापदंडों का परिणाम है। 'गरीबी मिटाने से खुशहाली में भरपूर तेजी आएगी। सतत पर्यावरण से धरती के संसाधनों का नुकसान रूकेगा। सामाजिक समावेशन से प्रगति के फल सभी को सुलभ होंगे। सुशासन से लोग पारदर्शिता, जवाबदेही और सहभागी राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से अपना जीवन संवार पाएंगे। राष्ट्रपति भवन में मेरे पांच साल के कार्यकाल के दौरान हमने एक मानवीय और खुशहाल टाउनशिप का निर्माण करने का प्रयास किया। हमने खुशहाली देखी, जो प्रसन्नता और गौरव, मुस्कान और हंसी, अच्छे स्वास्थ्य, सुरक्षा की भावना और सकारात्मक कार्यों से जुड़ी है। हमने हमेशा मुस्कुराना, जीवन पर हंसना और समुदाय के साथ शामिल होना सीखा। हमने अपने अनुभव का विस्तार पड़ोस के कुछ गांवों में किया। यह यात्रा जारी है।'

(कार्यकाल के अन्तिम दिवस 24 जुलाई, 2017 की संध्या को राष्ट्रपति के रूप में देशवासियों के नाम संदेश के सम्पादित अंश।)

संग्रहालय की सौगात

राष्ट्रपति के रूप में प्रणब मुखर्जी का कार्यकाल विरासत और ऐतिहासिक महत्व की इमारतों और वस्तुओं की सार-संभाल के लिए सदैव याद किया जाएगा। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में ऐतिहासिक विरासतों का संग्रहालय तैयार कराया। इसमें कई दुर्लभ चीजें शामिल हैं। राष्ट्रपति भवन के ऐसे कमरे, जिनका लंबे समय से कोई इस्तेमाल नहीं हो रहा था, उनके अंदर से दुर्लभ चीजें तलाशी गई। बंद कमरों में रखे संदूकों और अलमारियों से निकालकर कई बेशकीमती चीजें इस संग्रहालय में रखी गई। जिसमें

एक पियानो भी है, जो करीब 100 साल पुराना है। दीमकों ने एक बेशकीमती जरदोजी कालीन को जर्जर बना दिया था। इसे दो सौ कश्मीरी बुनकरों की मदद से दोबारा ठीक कराया गया। इसमें भारत के पहले राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद से जुड़ी चीजें भी रखी गई हैं। यहां उनकी एक खास तस्वीर भी लगाई गई है।

राष्ट्रपति भवन के दरवाजे लेखकों और कलाकारों के लिए खोले गए। सन् 2013 में इन-रेजिडेंस कार्यक्रम शुरू हुआ। इनमें चुनिन्दा विद्वानों को राष्ट्रपति भवन में रुकने और इसके जीवन को करीब से देखने को मौका दिया गया।

संग्रहालय में अंग्रेजी शासकों ने देश में स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति प्रतिक्रिया, सत्ता का हस्तांतरण, गणतंत्र की स्थापना, 1950 से अब तक के 13 राष्ट्रपतियों का जीवन और कार्यशैली, राष्ट्रपति भवन की जिंदगी, परिसर की सुंदरता और वातावरण, वहां काम करने वाले लोगों और महत्त्वपूर्ण अतिथियों आदि के बारे में जानकारी है। राष्ट्रपति को उपहार में मिली किताबें अब संग्रहालय का हिस्सा होंगी। राष्ट्रपति बनने पर मुखर्जी भी अपने साथ किताबों का संग्रह लेकर राष्ट्रपति भवन आए थे। प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन परिसर में आने वाले पक्षियों का भी एक संग्रह तैयार करवाया। इसमें 111 प्रजातियों के पक्षियों की पहचान कर उनकी तस्वीरें ली गई। यहां के खूबसूरत बगीचे में हर साल बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं।

प्रणब मुखर्जी के कार्यकाल में राष्ट्रपति भवन पर 13 किताबें लिखी गई। भारत की आजादी के बाद से लेकर अब तक राष्ट्रपति भवन आने वाले सभी विदेशी राष्ट्राध्यक्षों की यात्राओं का भी एक संकलन तैयार करवाया गया।

बतौर राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में 140 राष्ट्राध्यक्षों और विदेशी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। 2012 से लेकर अपने कार्यकाल तक प्रणब दा ने 21 देशों की आधिकारिक यात्रा की। आखिरी बार जून में उन्होंने तीन अफ्रीकी देशों घाना, आइवरी कोस्ट और नामीबिया का दौरा किया था।

प्रणब मुखर्जी अपनी शालीनता के लिए जाने जाते रहे हैं। वे उन परंपराओं को खत्म करने के लिए भी याद किए जाएंगे, जो अंग्रेजों के जमाने से चली आ रही थीं। ऐसी ही एक परम्परा थी राष्ट्रपति के लिए 'हिज एक्सीलेंसी' और 'महामहिम' का सम्बोधन इसे मुखर्जी ने प्रोटोकॉल से हटवाया। अपने कार्यकाल में मुंबई हमले के दोषी अजमल कसाब और संसद भवन हमले के दोषी अफजल गुरु और 1993 मुंबई बम धमाके के दोषी याकूब मेमन की फांसी की सजा पर मुहर लगाई। कसाब को 2012, अफजल गुरु को 2013 और याकूब मेनन को 2015 में फांसी दी गई।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के पास पूरे कार्यकाल में करीब 37 दया याचिकाएं आई। उन्होंने 28 अपराधियों की फांसी को बरकरार रखा। इस साल मई में उन्होंने बलात्कार के दो मामलों के दोषियों को क्षमा देने से मना कर दिया। अपने कार्यकाल में प्रणब मुखर्जी ने चार दया याचिकाओं पर फांसी को उम्रकैद में बदला।

प्रस्तुति : गौरव शर्मा

पितरों के पर्वकाल का सामाजिक संदेश

आज हम जो भी हैं, अपने पूर्वजों के जीवन संघर्ष और उनके द्वारा किए गए कार्यों के परिणामस्वरूप ही हैं। अतएव हमारा कर्तव्य है कि हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर आशीष प्राप्त करें। यह सुअवसर प्रदान करता है, पितृपक्ष, जो आश्विन मास की प्रतिपदा से अमावस्या तक रहेगा।

भारत की परम्पराओं और मान्यताओं को पुष्ट करने वाले शास्त्रों में श्राद्ध का विशेष महत्व व व्यवस्था निरूपित की गई है। जिसका उद्देश्य है अपने दिवंगत पारिवारिक सदस्यों के निमित्त श्रद्धापूर्वक तर्पण और पिंडदान करके उनके प्रति सम्मान प्रकट करना। हम जो भी हैं, अपने पूर्वजों के जीवन संघर्ष और उनके द्वारा किए गए कार्यों के परिणामस्वरूप ही हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें। यह सुअवसर प्रदान करता है, श्राद्धपक्ष। जिसमें अपने पूर्वजों समेत सभी वरिष्ठ जनों का आदर सम्मान करना चाहिए। यही कारण है कि ऋषि-मुनियों ने वर्ष के पंद्रह दिनों अर्थात् एक संपूर्ण पक्ष को इस अच्छे कार्य हेतु नियत कर दिया। आश्विन मास का कृष्णपक्ष श्राद्ध-तर्पण हेतु सर्वाधिक उपयुक्त होने के कारण उसे 'पितृपक्ष' की संज्ञा और मान्यता प्राप्त है।

चूंकि यह पक्ष सिर्फ पूर्वजों को ही समर्पित है, इसलिए इन पन्द्रह दिनों में प्रतीक स्वरूप सभी कार्य उनकी प्रसन्नता के लिए ही किए जाते हैं। इस अवधि में शादी या उत्सव जैसे मांगलिक कार्य नहीं होते। यह भी पूर्वजों के प्रति परिवार-समाज प्रदत्त सम्मान ही है।

मान्यता है कि आश्विन मास के कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से अमावस्या तक पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्यों की पूर्ति से उन्हें संतुष्टि प्राप्त होती है। ज्योतिष के विद्वानों का मत है कि श्राद्ध के लिए दिन का तीसरा प्रहर सर्वाधिक उपयुक्त है। श्राद्ध हमें पारिवारिक प्रेम भी सिखाता है। इसका प्रमाण है कि हम अपने परिवार के दिवंगत सदस्यों का सम्मान करते हैं, उन्हें तर्पण देते हैं और उनके कुशलक्षेम की कामना करते हैं। इसीलिए श्राद्ध करते समय परिवार के सभी सदस्यों को एकजुट होकर अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए। परिवार को एक साथ देख पूर्वजों को शांति मिलती है। श्राद्ध अतिथि सत्कार की भारतीय परम्परा को भी प्रोत्साहित करता है। 'अतिथि देवो भव:' का यह संदेश सिर्फ परिवार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज तक उसकी अनुगूंज होती है। तभी तो श्राद्ध के दौरान समाज के विद्वानों (पंडितों) के सत्कार व उन्हें भोजन कराने की परंपरा है। श्राद्ध में गाय का दूध एवं उससे बने पदार्थों (घी, दही आदि) के प्रयोग को इसलिए मान्यता दी जाती है, क्योंकि गाय का दूध कम वसायुक्त और स्वास्थ्यप्रद होता है। इससे यह संदेश भी जाता है कि अतिथि के सत्कार में जो भी सर्वश्रेष्ठ हो, वही करना चाहिए।

इन दिनों स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रकट कर पितृपक्ष के माहात्म्य को और भी उच्चता प्रदान की गई है। स्त्री से श्राद्ध के जूठे बर्तन नहीं उठवाए जाते। स्त्री का काम रसोईघर में पितरों और अतिथियों के लिए तन्मयता व प्रेमपूर्वक भोजन तैयार करने का है, बाकी कार्य पुरुष ही करते हैं। मान्यता है कि परिवार की स्त्रियों द्वारा बनाए भोजन तथा उन्हें सम्मान देने से पूर्वजों को आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

श्राद्ध में आवश्यक नहीं कि किसी को बुला कर भोजन कराया ही जाए। यदि भोजन कराने की सामर्थ्य नहीं है, तो गाय इत्यादि पशुओं को चारा व पक्षियों को दाना भी खिला सकते हैं। इससे पशुओं व पर्यावरण के प्रति हमारा दायित्व भी पूरा होता है।

श्राद्ध-प्रक्रिया मन को एकाग्रचित्त करने का महत्व भी स्पष्ट है। जिसका संदेश है कि जीवन में चाहे कितने कष्ट हों, हमेशा प्रसन्नचित रहना चाहिए। तभी तो विद्वान कहते हैं कि श्राद्ध करते समय मन में उथल-पुथल, कलह, क्लेश या क्रोध नहीं होना चाहिए। वस्तुत: ये पंद्रह दिन पितरों का पर्वकाल है।

- डॉ. अतुल टण्डन

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

जहाँ जाये छा जाये

JUGAL

Guddu®

KESAR ELAICHI

INSIDE 60 POUCHES

SUPARI

GURUKRIPA AGENCIES

Neeraj

Wholesale Dealers for:

Harsh

■ PAN MASALA ■ TOBACCO ■ BEEDIES

CIGERATES ■ MATCHES

ZEENI RET KA CHOWK, UDAIPUR (Raj.)

Mob.: - 9928147546, 9829499990

Tel. No.: 0294-(S) 2421627 (R) 2485064

अधम अजामिल का उद्धार

दृष्टांत के बिना सिद्धांत बुद्धिग्राह्य नहीं हो पाता। इसे समझने के लिए अजामिल का एक दृष्टांत उपयुक्त है। अजामिल अधम था, किन्तु प्रभु के नाम का अनायास आश्रय ग्रहण कर कृतार्थ हो गया।

यह जीव माया में फंसा हुआ है। जो माया में एकाकार हो गया है, वही अजामिल है। जहां भी जाओगे, माया साथ-साथ जाएगी। कोयले के ढेर में हाथ डालें और हाथ काले नहीं हों, यह सम्भव नहीं है। संसार में माया के संसर्ग में तो आना ही पड़ता है। माया का स्पर्श स्वाभाविक है किन्तु उसका स्पर्श विवेक रूपी चिमटे से करें, क्योंकि यह भी अग्नि के समान है। अग्नि के बिना जीवन व्यवहार चल नहीं पाता, फिर भी कोई उसे हथेली पर नहीं रखता।

माया पीछा करती है। उससे बच निकलना है और ईश्वर के पीछे लगना है। ईश्वर का पीछा करेंगे तो माया हमारा पीछा छोड़ देगी। माया से सदैव सावधान रहना चाहिए। संसार में रहते हुए माया का त्याग करना तो अशक्य है। कनक और कांता, ये दोनों माया के ही दो रूप हैं। प्रयत्न ऐसा करें कि इन दोनों में मन न फंसे। चाहे शरीर से पाप करो या मन से दंड तो भोगना ही पड़ेगा। कनक और कांता, इन दो वस्तुओं में माया निहित है। इनकी ओर से जिसका मन हट जाता है, उसका मन माया से भी हट जाता है।

अजा का अर्थ है माया और इसमें फंसा हुआ जीव ही अजामिल है। अजामिल अनेक प्रकार के पाप करके जीवनयापन करता था। यह पहले मंत्रवेत्ता और सदाचारी था। एक बार जब वह वन में गया। रास्ते में एक शूद्र को वेश्या गमन देख अजामिल भी काम पीड़ित हो गया।

पाप प्रथम दृष्टि द्वारा ही प्रविष्ट होता है। दृष्टि बिगड़ी कि मन बिगड़ा और मन बिगड़ा तो जीवन भी बिगड़ेगा और नाम भी। जिसकी दृष्टि दुष्ट हो, उसका नाम भी हमेशा के लिए बिगड़ जाता है। जो पाप मन में उतरते हैं, दृष्टि ही माध्यम बनती है। काम को आंखों में आने नहीं दोगे, तो वह मन में भी नहीं उतरेगा।

आंखों में राम रहेंगे तो वहां काम नहीं आ पाएगा। कामांध अजामिल वेश्या को अपने घर ले आया। एक बार कुछ साधुजन घूमते-फिरते अजामिल के घर-द्वार आए। वेश्या ने देखा कि संत आए हैं तो उसने अन्नदान किया। अन्न से उन्होंने रसोई बनायी और भोजन किया। साधुजन तो जिससे कुछ ग्रहण करते हैं, उसका कल्याण भी करते हैं। वेश्या के कहने पर अजामिल ने भी साधुओं को वंदन किया। साधुओं ने कहा कि भोजन तो मिल गया, किन्तु दक्षिणा बाकी है। अजामिल ने कहा - मेरी यही दक्षिणा समझो कि मैंने तुम्हे लूटा नहीं। वेश्या सगर्भा थी। साधुओं की इच्छा थी कि अजामिल का कल्याण हो। **उन्होंने कहा** - तेरे घर पुत्र का जन्म होने पर तू उसका नाम नारायण रखना। **अजामिल ने साधुओं से पूछा** - महाराज, मैं अपने पुत्र का नाम नारायण रखूं तो उससे आपको क्या लाभ होगा? **साधुओं ने कहा** - हमारे भगवान् नारायण हैं। अत: यह नाम सुनकर हमें आनन्द होगा और तुझे भगवान का स्मरण होता रहेगा।

अजामिल ने कहा - ठीक है, मैं अपने पुत्र का नाम नारायण रख दूंगा। अजामिल के घर पुत्र का जन्म हुआ और उसका नाम रखा गया नारायण। संतति के प्रति माता-पिता का प्रेम कुछ विशेष होता ही है। अजामिल बार-बार नारायण को पुकारता रहता । नारायण नाम लेने की उसे आदत-सी हो गई। अतिशय पापी, अतिशय कामी व्यक्ति अपनी पूरी आयु जी नहीं सकता। अजामिल के अभी बारह वर्ष शेष थे कि उसे यमलोक ले जाने के लिए यमदूत आ धमके। मृत्युकाल समीप था। पुत्र नारायण के प्रति उसकी अतिशय आसक्ति थी, अत: उसे नाम लेकर पुकारने लगा - 'नारायण, नारायण।' नारायण तो नहीं आया, किन्तु वहां विष्णुदूत आ पहुंचे। उन्होंने यमदूतों से कहा कि अजामिल को वे छोड़ दें।

यमदूतों ने कहा - अजामिल भ्रष्ट है, वह जीने के लिए अपात्र है। **विष्णुदूतों ने कहा** - यह सच है कि अजामिल ने पाप किए हैं किन्तु भगवान का नाम लेकर इसने अपने पापों का प्रायश्चित भी तो किया है। अत: इसे अब जीने दो। उसकी आयु के बारह वर्ष अब भी शेष हैं।

यमदूतों ने कहा - अजामिल ने 'नारायण-नारायण' की पुकारा, की वैकुंठवासी को नहीं, इसने अपने पुत्र नारायण को पुकारा।

विष्णुदूतों ने कहा - इसके मुंह से भले ही अनजाने नारायण नाम उच्चारित हुआ हो, अग्नि पर अनजाने भी पैर पड़ जाए तो जलन तो होती है। इसी प्रकार अनजाने भी यदि प्रभु का नाम लिया जाय तो कल्याण ही होता है। अजामिल ने नारायण शब्द से चाहे अपने पुत्र को ही पुकारा हो, किन्तु इस बहाने भी भगवान् के नाम का उच्चारण तो हो ही गया। ■

- भगवानलाल शर्मा 'प्रेमी'

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

SELECTED Superbrand INDIA 2009-10 CONSUMER VALIDATED

अक़्ल से बड़ी हो गई भैंस

– डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश

राह चलते आम आदमी से पूछा – 'भैया, अक्ल बड़ी या भैंस?' उसने हमें पहले सिर से पांव तक देखा और फिर बोला – 'मुझे नहीं पता? मैं तो आम आदमी हूँ, पर मैंने खास आदमी से यह सुना जरूर है कि – अक़्ल भैंस से बड़ी होती है, पर तुम क्यों इनके पीछे लट्ठ लेकर पड़े हो।'

हमने कहा – अब तक हम भी यही समझते थे कि अक़्ल भैंस से बड़ी होती है, लेकिन जब से हमने राजनीति की भैंस देखी है, तब से हमारा नज़रिया भी बदल गया। हमें भी लगने लगा कि अगर भैंस राजनीति प्रजाति की है तो वह निश्चित रूप से अक़्ल से बड़ी होती है। चारा चबाने के लिए हर कहीं मुंह मारती है। दूध दे या ना दे, अक़्ल के सामने रूतबे की जुगाली करती सर्वत्र विचरण करती है। 'प्रत्यक्षं किम् प्रमाणम्', प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं, पर अक़्ल का अब कोई विशेष प्रमाण भी नहीं मिलता। जब ये सामान्य भैंसिया थी तब अक़्ल ने इस पर बड़े अत्याचार किए। इस पर सवारी कर घूमा करती थी। छुट भैया सब पूंछ पकड़ लटक जाते थे। जिसके मन भाया डंडे बरसा कर चला गया।

भैंसिया दूध भी देती थी और मार भी खाती। अक़्ल के पास लाठी थी और यह तो सभी जानते हैं कि जिसके पास लाठी होती है, भैंसिया उसी की हो जाती है। अक़्ल ने अपनी ही भैंस का चारा डकारना शुरू कर दिया और इतना खाया कि पेट मशक सा फूल गया। लोगों ने कहा भी क्या अक़्ल चरने चली गयी है, पर अक़्ल तो अपने को भैंसिया से बड़ी मान रही थी।

यूपी में जब सपा की सरकार थी, एक सयाने मंत्री जी की भैंस खो गई, तभी से भैंसिया राजनीति में मशहूर हो गई। जिस दिन यह गुम हुई, राज्य में हड़कम्प मच गया। पुलिस अमला उसे खोजने में जुट गया। आदेश हुआ कि यदि भैंस नहीं मिली तो नौकरी गई समझो। पुलिस का बस एक ही काम था कि भैंस को खोजे। सरे आम डोलते अपराधी दिखें न दिखें पकड़ में आए या न आएं, परन्तु भैंस को ढूंढना और खूंटे से बांधना ज़रूरी था। भैंस वीआईपी ट्रीटमेंट मिलने पर फूली न समाई। राजनेता को भी भैंस से उतना ही प्यार था, जितना बाबा भारती को अपने घोड़े से।

भैंस तो आखिर भैंस है, कहीं भी जा सकती, और वह भी राजनेता की भैंस। वह मौज में आई और हवाखोरी को निकल पड़ी। पता चला कि वह गांव के किसी स्वीमिंग पुल में जल विहार का आनन्द ले रही है।

भैंस को इतना सुख कभी नहीं मिला जितना उसे राजनेता के एयरकंडीशंड बंगले में खूंटे से बंधने पर मिला था। सोचा कि राजनीति में प्रवेश करने का इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता। उसने वीआईपी भैंसों की प्रजाति तैयार की और उनके बूते पर राजनीति के गलियारों में बे-रोक-टोक विचरण करने लगीं।

चतुर सुजान बन कर उसने अक़्ल को अंगूठा दिखाना शुरू कर दिया। भैंस के इस अवतार को देख अक़्ल के होश उड़ गए। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि राजनीति में प्रवेश करके भैंस अक्ल से बड़ी हो जाएगी।

एक जमाना था जब अक्ल भैंस पर सवार रहती। कभी उसके सींग पकड़ कर लटक जाती, कभी उसकी पूंछ पकड़ कर घिसटती रहती। अब जमाना बदल गया और राजनीति की भैंस अक्ल पर चढ़ी हुई है। राजनीति की भैंस अक्ल पर ऐसी चढ़ी है कि उतरने का नाम ही नहीं ले रही। इसने अक़्ल और उसके सारे परिवार को संकट में डाल दिया है। वह अक़्ल को यह कह कर चिढ़ा रही है कि 'और खा मेरा चारा और भुगत परिणाम'।

राजनीति की भैंस वीआईपी है और उसकी तूती बोल रही है। अब यह बड़ी से बड़ी अक़्ल को भी चारा चरने भेज देती है और खुद मजे से पार्टी और पद से चिपकी तरह-तरह स्वाद के चटखारे ले रही है। इसके आगे सरकारें बीन बजा रही हैं और वह मस्त झूम रही है।

जब भी यह भैंस अक़्ल और उसके परिवार को दुखी देखती, तो वह उसका उपहास करते हुए कहती है – बोल, अक़्ल की अजीर्ण और खाएगी मेरा चारा? अब बता कौन बड़ा है, तू या मैं। अरे अक़्ल, वो जमाना लद गया, जब भैंस उसी की हो जाती, जिसकी लाठी होती थी। मेरी सहेली याद रख अब भैंस अक़्ल से भी बड़ी होती है।

With Best Compliments for Navratri

MAHAVEER

GROUP OF INSTITUTION

RUN BY-Mahaveer Jain Vidhyalaya Sansthan

Dr. Himmat Lal Vaya
+91 94141 68838
Founder Director

UDAIPUR OFFICE

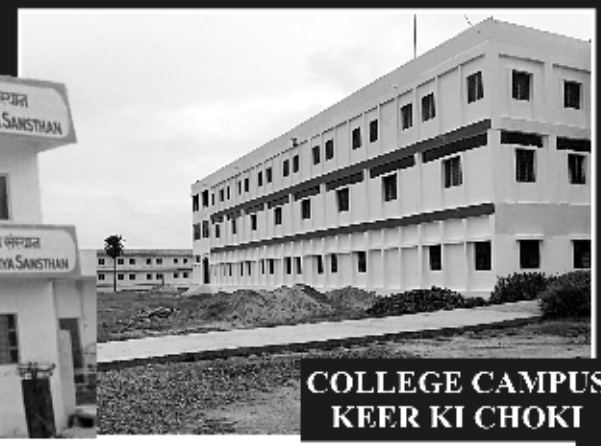

COLLEGE CAMPUS
KEER KI CHOKI

Glorious Activity :-

- Mahaveer Public Secondary School.
- Mahaveer B.Ed. College. (2 Yr. Course)
- Mahaveer B.A.-B.Ed./ B.Sc.-B.Ed. College. (4 Yr. Integrated Course)
- Mahaveer College. (B.A./B.Com./B.Sc./B.C.A./B.Sc.(IT)/B.B.M.)
- Mahaveer Tribal Girls Education Complex. (Govt. Project)
- Mahaveer I.T. Computer Education. (RS-CIT)
- Pioneer in Rural Development, Education, Education,
- Medical Health Service, Women Awareness & Vocation Programme.

ADMISSION OPEN YEAR 2017-18

DEGREE COLLEGE

B.A./B.Com./B.Sc./B.C.A./B.Sc.(IT)/B.B.M. & RS-CIT

COLLEGE CAMPUS

KEER KI CHOWKI, BADGAON-BHINDER ROAD, UDAIPUR (Raj.) 313603
Head Office – 940, Hiran Magri, Sec- 4 Udaipur (Raj.) 313001 Ph. 0294-2465838
Website – www.mjvsansthan.org Email – mahaveerjvsansthan@yahoo.com

रोसावा इंजीनियरिंग : मार्बल स्लैब्स पिक एंड प्लेस रोबोट

भारत के उद्योगपतियों ने विश्व के इंजीनियरिंग उत्पादों का अनुसरण तो किया लेकिन उसमें अपनी कार्य एवं बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए उनसे भी बेहतर उत्पाद बनाने में सफल रहे हैं, सी. पी. शर्मा पिछले 30 सालों से देश में सर्वश्रेष्ठ गेंगसा, रेजिन लाइन एवं स्टोन प्रोसेसिंग मशीन का निर्माण कर देश ही नहीं विदेशों को भी अपना गुणवत्तायुक्त उत्पाद देने में अग्रणी रहे कलड़वास स्थित रोसावा इंजीनियरिंग कंपनी के प्रोपराइटर 50 वर्षीय सी. पी. शर्मा अपने परिवार के सदस्यों के सहयोग से इस कंपनी को विदेशी धरती पर पहुंचाने में भी सफल रहे। दोनों पुत्र रोहित एवं राहुल शर्मा इंजीनियरिंग की शिक्षा हासिल कर अपने पिता के कारोबार में हाथ बंटा कर उसे नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। शर्मा सिर्फ एक उद्यमी ही नहीं है।

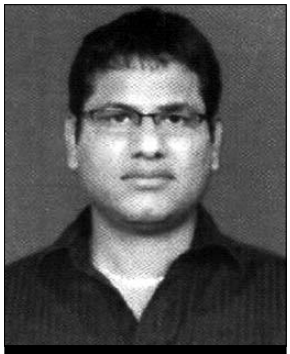

सी. पी. शर्मा
डायरेक्टर

समाज के प्रति जिम्मेदारियों के निर्वहन में भी हमेशा आगे रहते हैं। वे फोर्टी, यूसीसीआई, कलड़वास चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, ऑल इंडिया ग्रेनाइट एंड स्टोन इण्डस्ट्रीज तथा सी-डोस के सदस्य हैं।

3 मिनट में ट्रॉली से मशीन तक

शर्मा ने बताया कि इस रोबोट को मार्बल के एक स्लेब को ट्रोली से उठाकर मशीन पर रखने में मात्र 3 मिनिट का समय लगता है। स्वदेशी उपकरणों से निर्मित रोबोट पूर्णतया कम्प्यूटराइज्ड है। इसकी डिजाइनिंग एवं निर्माण कम्पनी में ही किया गया। क्वालिटी के मामले में यह विदेशी कम्पनियों के रोबोट को भी पीछे छोड़ने का माद्दा रखता है। यह रोबोट वेक्यूम पेड से लिफ्ट कर आसानी से मशीन पर प्लेस कर देता है। यह क्रेक स्लेब को भी आसानी से उठा लेता है। इससे स्लेब को मेन्यूअल रूप में उठाने पर होने वाला नुकसान नहीं होता। कंपनी को इससे सालाना लाखों रुपए की बचत होगी।

कम्पनियों की स्थापना

सी. पी. शर्मा ने सर्वप्रथम 1987 में अपने भाइयों के साथ सुखेर में रॉयल रोमेटिक प्रोडक्ट्स नामक कम्पनी खोली। कलड़वास औद्योगिक क्षेत्र में 1995 में रॉकवेल इंजीनियरिंग कम्पनी, 2002 में रॉकमाईनिंग टूल्स एवं 2008 में रोसावा इंजीनियरिंग कम्पनी की स्थापना की। इसके बाद वर्ष 2014 में रोसावा इंजीनियर्स प्रा. लि. की स्थापना कर कारोबार को नई ऊंचाइयां प्रदान की। तकनीकी युग में बदलते समय की मांग, कुछ नया करने की सोच, लक्ष्य बनाकर कड़ी मेहनत के साथ सपने को साकार करने के जज्बे के चलते शर्मा के युवा पुत्र इंजीनियर रोहित शर्मा ने देश में पहले मार्बल स्लैब्स पिक एंड प्लेट करने वाले रोबोट का आविष्कार कर दुनियाभर में लोकप्रियता हासिल की है।

रोहित शर्मा ने मात्र चार महीने की कड़ी मेहनत में यह कारनामा कर दिखाया जो अब तक देश में कोई नहीं कर सका। शर्मा ने बताया कि पहला रोबोट सिल्वासा और दूसरा ओमान को निर्यात किया गया। तीसरे रोबोट का निर्माण पूरा होने को है। स्लैब्स पिक एंड प्लेस करने वाले रोबोट का जयपुर में आयोजित स्टोन मार्ट प्रदर्शनी में प्रदर्शन किया गया।

उद्योगों को मिलेगा लाभ

यह रोबोट निर्माण मजदूरों की समस्या से जूझ रहे उद्योगों को राहत दिलाने में कारगर साबित होगा।

भावी योजना

प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कम्पनी से 150 से अधिक लोग रोज़गार पा रहे हैं। कम्पनी जल्दी ही मार्बल पॉलिशिंग मशीन एवं सीएनसी ब्रिजकटर मशीन के निर्माण में सफलता हासिल कर लेगी।

निर्यात

मशीनों के निर्माण में काम आने वाला रॉ मटेरियल जयपुर, मुम्बई एवं अहमदाबाद से क्रय करती है और अपने फिनिश्ड प्रोडक्ट, राजनगर, उदयपुर, केसरियाजी के अलावा राजस्थान के अन्य शहरों व बेंगलूरू, हैदराबाद, सिल्वासा भेजती है। इज़िप्ट, इथोपिया, ओमान, मोरक्को, वियतनाम व अल्जीरिया जैसे देशों में निर्यात भी करती है।

- नितेश

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
डिसाइड®
AADHAR pRODUCTS
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
New
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
नया
एडवाइज़
ज्यादा साफ ज्यादा चमक
डिटर्जेंट टिकिया
Decide
नया
डिसाइड
बर्तन बार
डिसाइड
बर्तन धोने का टब
Decide
super WHITE
quick wash
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR
Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहें अशुद्ध !
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ SHUDDH
OIL SOAP
(Animal Fat Free)
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा का उत्सव : नवरात्र

नवरात्र भारतीय जन-जीवन का महत्वपूर्ण त्योहार है। यह हमारी संस्कृति और संस्कार का द्योतक है। यह पर्व प्रतीक है - असत्य पर सत्य की विजय, अधर्म पर धर्म की जीत, स्वार्थ पर परोपकार की विजय का। यह मानवता को धारण करने का पर्व है। नवरात्र शक्ति की अधिष्ठात्री देवी दुर्गा के नव स्वरूपों की पूजा का समूह है। दुर्गा के नौ शक्ति रूप प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चंद्रघंटा, चतुर्थ कुष्माण्डा, पंचम स्कंदमाता, षष्ठम कात्यायनी, सप्तम कालरात्रि, अष्टम महागौरी और नवम् सिद्धिदात्री माने गए हैं। इन्हीं नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना के लिए नवरात्रियाँ निर्धारित हुई।

– पंकज शर्मा

भारत कृषि प्रधान देश है, यहां साल में चेती और कुआरी दो प्रमुख फसलें होती हैं। फसलों के आधार पर ही साल में दो बार नवरात्र मनाएं जाते हैं। प्रथम नवरात्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होते हैं तो द्वितीय शारदीय नवरात्र आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से। इस समय फसल के रूप में घर आई अन्न रूप लक्ष्मी को मां का वरदान मान कर उसकी पूजा-अर्चना की जाती है। चैत के नवरात्रों को वासन्तिक और आश्विन के नवरात्रों को शारदीय विशेषण से विभूषित किया गया है। दोनों नवरात्रों की प्रकृति प्राय: समान है, यानी न ज्यादा सर्दी और न ही ज्यादा गर्मी। इस समय शीतल सुगंध पवन बहती है। वृक्षों, लता, पुष्पों एवं मंजरियों की आभा से पूरा वातावरण महकता और गमकता है। रात्रि की मनोहारता दोनों ही नवरात्रों में अत्यधिक बढ़ जाती है। दुर्गा पूजा का यह उत्सव शुक्ला सप्तमी से दशमी यानी विजयदशमी तक मनाया जाता है। बंगाल सहित पूरे भारत में बंगाली समुदाय तो इस उत्सव की तैयारी एक माह पहले से ही शुरू कर देता है। पूरे भारत में दशमी के दिन दुर्गा की मूर्तियों की भव्य और विशाल शोभा यात्रा निकाली जाती है और तदोपरांत उसे जल में विसर्जित कर दिया जाता है। बंगाल में इन दिनों माता-पिता अपनी विवाहित पुत्रियों को अपने घर बुलाकर उत्सव मनाते हैं। गुजरात में इस उत्सव पर गरबा नृत्य और डांडिया रास की धूम रहती है। दक्षिण भारत में नवरात्र उत्सव शैवों के लिए शिव पर उमा के प्रेम की विजय का प्रतीक है तो वैष्णवों के लिए लक्ष्मी-विष्णु के वरण का प्रतीक है। नवरात्र पूजा-पाठ का पर्व है। भक्ति भाव से मां दुर्गा के रूपों की पूजा-अर्चना, वंदना तथा दुर्गा सप्तशती का पाठन-श्रवण किया जाना चाहिए। यह पूजा मन को पावन बनाने के साथ जीवन में सुख-शांति, समृद्धि और श्री की वृद्धि करती है।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

पर्व कथा

नवरात्र मनाने के पीछे बहुत सी रोचक कथाएं हैं। दुर्गा सप्तशती के अनुसार जब शुंभ-निशुंभ, रक्तबीज तथा महिषासुर आदि दानवों ने पृथ्वी पर भयंकर उत्पात मचाने आरंभ किए, तो इनके नाश के लिए देवताओं ने शिवजी की आज्ञा से मां पार्वती की उपासना की। प्रसन्न होकर देवी ने नौ रूप धारण कर इन दानवों का समूल नाश किया। देवी ने चैत्र और आश्विन प्रतिपदा से नवमी तक ये नौ रूप धारण किए थे, अतएव नवरात्र में दुर्गा पूजन का विशेष महत्व है। 51 शक्तिपीठों सहित देश के सभी देवी मंदिरों में इन दिनों विधि-विधान से यज्ञ, हवन एवं अनुष्ठान होते हैं।

पूजा और व्रत-नियम

नवरात्रों में प्रत्येक को व्रत रखना चाहिये। अन्न आहार, फलाहार, दुग्ध आहार अर्थात् जैसी जिसकी क्षमता हो, उसी के अनुसार उसे व्रत करना चाहिये। एक समय भोजन, एक समय दूध पीकर या केवल फल खाकर व्रत किया जाता है। व्रत करने से पेट भी ठीक हो जाता है और आने वाले छह महीने तक जातक रोगी नहीं होता। दूसरा नियम है - ब्रह्मचर्य। नौ दिन ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें, ताकि शक्ति क्षीण न हो और व्रत का पूर्ण फल मिल सके। जो नवरात्र में व्रत या अनुष्ठान तो करते हैं और ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते, वे भगवती की कृपा से वंचित रह जात हैं तथा उनके रोगी होने का भय बना रहता है। तीसरा पृथ्वी पर शयन यानी जमीन पर सोना। चौथा, केश आदि न कटवाना और पांचवा नियम है सत्य का। अनुष्ठान करने वाले व्यक्ति को इन पांचों नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये।

कन्या पूजन

नवरात्र में कन्या-पूजन का बड़ा महत्व है। सच तो यह है कि छोटी बालिकाएं देवी दुर्गा के स्वरूप होने के कारण श्रद्धालु उनकी पूजा-अर्चना करते हैं। धर्मग्रन्थों में कन्या पूजन को नवरात्र-व्रत का अनिवार्य अंग बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि दो से दस वर्ष तक की कन्या देवी के शक्ति स्वरूप की प्रतीक होती है। हिन्दू धर्म में दो वर्ष की कन्या को कुमारी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसके पूजन से दुख और दरिद्रता समाप्त हो जाती है। तीन वर्ष की कन्या त्रिमूत मानी जाती है। त्रिमूत के पूजन से धन-धान्य का आगमन और संपूर्ण परिवार का कल्याण होता है। चार वर्ष की कन्या कल्याणी के नाम से संबोधित होती है। कल्याणी की पूजा से सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। पांच वर्ष की कन्या रोहिणी कही जाती है। रोहिणी के पूजन से व्यक्ति रोग-मुक्त होता है। छः वर्ष की कन्या कालिका की अर्चना से विद्या, विजय, राजयोग की प्राप्ति होती है। सात वर्ष की कन्या चण्डिका के पूजन से ऐश्वर्य मिलता है। आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी की पूजा से वाद-विवाद में विजय तथा लोकप्रियता प्राप्त होती है। नौ वर्ष की कन्या दुर्गा की अर्चना से शत्रु का संहार होता है तथा असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं। दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कही जाती है। सुभद्रा के पूजन से मनोरथ पूर्ण होता है तथा लोक-परलोक में समस्त सुख प्राप्त होते हैं।

तंत्रशास्त्र के अनुसार, यदि संभव हो, तो साधक को नवरात्र में पहले दिन एक कन्या, दूसरे दिन दो कन्या, तीसरे दिन तीन कन्या, चौथे दिन चार कन्या, पांचवे दिन पांच कन्या, छठे दिन छ कन्या, सातवें दिन सात कन्या, आठवें दिन आठ कन्या तथा नवें दिन नौ कन्याओं का पूजन करना चाहिए। इससे मां दुर्गा प्रसन्न होकर अपने भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करती हैं। यदि भक्तों के लिए यह संभव न हो, तो वे नवरात्र की अष्टमी अथवा नवमी के दिन अपनी सामर्थ्य के अनुसार, कन्या-पूजन करके भी देवी का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। देवी के शक्तिपीठों में भी कन्याओं की नित्य पूजा होती है। शक्ति के आराधकों के लिए कन्या ही साक्षात् माता के समान है।

प्रदेशवासियों को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. कमलेन्द्रसिंह राठौड़
प्रदेश महासचिव, चिकित्सा प्रकोष्ठ, प्रदेश कांग्रेस कमेटी राजस्थान

A Product of
अर्चना Panch 5 mani Fragrance
अर्चना एक्टिव
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेंट के साथ
आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच
निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स
कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti
फोन : 0294-2492161, 2490899
व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।
मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

नहीं डरेगा ड्रैगन से भारत

हिमालय की तलहटी में पिछले ढाई माह से भारत व चीन के सैनिक आमने-सामने हैं। चीन का सरकारी मीडिया रोज़ धमकी दे रहा है। भारत नहीं कर रहा उसकी धमकियों की परवाह। विश्व जनमत भारत के अनुकूल परन्तु पाकिस्तान उसका मोहरा बन सकता है। युद्ध हुआ तो 1962 से भी खतरनाक होगा किन्तु चीन शायद अब गलती नहीं करेगा। भारत भी पीठ पर वार करने की उसकी हिमाकत का जवाब देने में समर्थ है।

चीन-भारत का सीमा विवाद पुराना है। इसी वजह से प्राय: दोनों ओर सैनिक आमने-सामने हो जाते हैं। अक्सर ऐसा अक्साई चिन या अरुणाचल प्रदेश से लगी सीमा पर होता है। डोकलाम इलाके की ताजा तकरार नई तरह की घटना है, यह सिक्किम से लगे सीमावर्ती क्षेत्र में हुई है जो भूटान का हिस्सा है। भूटान की सुरक्षा का जिम्मा भारत पर है। चीन के सरकारी मीडिया और सेना के अफसरों ने भारत पर अतिक्रमण का आरोप लगाया है। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक भारत और चीन की सेनाओं की टुकड़ियां 100 मीटर की दूरी पर 16 जून से आमने-सामने डटी हैं। चीन ने आक्रामकता का ऐसा वक्त चुना, जब भारत और अमेरिका के शासन प्रमुख दक्षिण चीन सागर की बाबत बगैर नाम लिए उस पर निशाना साध रहे थे। चीन अपनी महत्त्वाकांक्षी योजना ओबीआर पर भारत और अमेरिकी रुख से ख़फा है। अन्तरराष्ट्रीय मामलों में तो चीन कई अवसरों पर भारतीय हितों पर टांग अड़ाता रहा है। आतंक की फैक्ट्री पाकिस्तान को वह गहरे दोस्त के रूप में भारत के खिलाफ इस्तेमाल करता आया है। बावजूद इसके भारत, चीन से भी ज्यादा तेज रफ्तार वाली आर्थिक-राजनीतिक शक्ति बन रहा है। विश्व बिरादरी में भारत की अहम और विश्वसनीय भूमिका बनती जा रही है। इससे भी चीन में बौखलाहट है।

विस्तारवादी चीन

विस्तारवाद चीन की विदेश नीति के केन्द्र में है। इसके लिए वह अन्तरराष्ट्रीय नियमों की धज्जियां उड़ाने से भी बाज नहीं आता। जमीन की भूख के चलते ही उसने 1959 में तिब्बत जैसे शांतिप्रिय देश पर जबरन कब्जा किया। तिब्बत के धार्मिक गुरु दलाई लामा को वहां से पलायन कर भारत के धर्मशाला शहर में शरण लेनी पड़ी। अन्य हजारों लोग शरणार्थी बन भारत और अन्य देशों में चले गए। तिब्बत में रहे लोगों का जीवन आज भी दयनीय है। तिब्बत के स्वतंत्र अस्तित्व पर चोट का सबसे बड़ा नुकसान भारत को हुआ। एक तो ड्रैगन भारतीय सीमा के निकट पहुंच गया और दूसरा, पाकिस्तान का पड़ोसी बन गया। पीओके से ही चीन की सीमा पाकिस्तान से मिलती है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के अक्साई चिन का पांच हजार वर्ग किलोमीटर इलाका उसने पहले ही चीन को गिफ्ट किया हुआ है। इसी से होकर सीपीसीई कोरिडोर बन रहा है। तिब्बत को हड़पने से भारत में बहने वाली तीन सदानीरा ब्रह्मपुत्र, सिंध और सतलुज के उद्गम स्थल पर जल नियंत्रण शक्ति चीन ने हासिल कर ली है। ब्रह्मपुत्र पर उसने बांध बना लिया और दूसरी नदियों पर भी ऐसी ही तैयारी है। इस साजिश से चीन जब चाहे नदियों का पानी रोक या ज्यादा प्रवाहित कर भारत में संकट खड़ा कर सकता है और वह अगस्त से शुरू कर भी चुका है।

संयम आवश्यक

चीन और भारत दो बड़ी ताकतें हैं। दोनों के पास दुनिया की विशालतम सेनाएं हैं। उनके बीच अगर युद्ध छिड़ा तो वह क्या रूप लेगा, अकल्पनीय है। बाकी दुनिया और खासकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को इससे जो नुकसान होगा, उसकी भरपाई काफी कठिन होगी। इस सच्चाई का अहसास चीन को भी होगा। यह विवाद ऐसे वक्त पैदा हुआ है जब चीन आक्रामक तरीके से अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव(बीआरआई) को अंजाम देने में जुटा है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक कोरिडोर सीपीसीई भी इसका एक हिस्सा है। भारत ने इस योजना का यह कहते हुए विरोध किया है कि इसका कुछ हिस्सा पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरता है, जो भारत का एक भाग है। यह बात चीन को नागवार गुजरी और उसने भारत को चहुंओर घेरने की नीति पर अमल शुरू कर दिया है। यह चीन की कूटनीति का हिस्सा है कि वह दूसरों के संवेदनशील मुद्दों की कभी परवाह नहीं करता। भारत का विरोध तर्कसंगत तो है, परन्तु हमें यह भी ग़ौर करना चाहिए कि क्या पीओके को फिर से भारत में मिलाने की कोई योजना हैं? सत्तर साल में तो इस दिशा में कोई चिंतन दिखाई नहीं दिया। पैंसठ के युद्ध में भारतीय सेनाएं रावलपिण्डी के नजदीक पहुंच गई। जब युद्ध विराम हुआ और सुलह-समझौते की बात चली तो भारत ने जीता हुआ इलाका भी पाकिस्तान को लौटा दिया था। पीओके को लेकर हमें गंभीर होना होगा।

अकेले कश्मीरी इलाकों पर हम सुरक्षा पर जितना खर्च करते हैं, वह भी कल्पना से परे हैं। भारत दशकों से पाकिस्तान-चीन की साजिशों का सामना कर रहा है। सत्तर के दशक में प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की दूरदर्शिता और साहस का ही कमाल था कि उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान का नाम दुनिया के नक्शे से मिटाकर उस जगह बांग्लादेश की सीमा रेखाएं खींच दी।

पचपन वर्ष बाद फिर आमने-सामने

चीन जहां धमकी भरे अंदाज में मुखर है, वहीं भारत काफी संयमित है। चीन की पीपल्स लिबरेशन आर्मी(पीएलए) की उकसाने वाली नारेबाजी एक बात है, परन्तु युद्ध करना उसे काफी महंगा पड़ेगा। इसीलिए उसने अभी तक भी तिब्बत के पठार पर सैनिकों का कोई जमावड़ा नहीं किया है। भारत और चीन के बीच 1962 की जंग के बाद 1967 में युद्धक संघर्ष हुआ था। 11 सितम्बर को नाथुला और 1 अक्टूबर को चोला में भारी गोलाबारी हुई, जिसमें पीएलए के 300 से ज्यादा सैनिक मरे थे। उसके बाद दोनों ही पक्षों ने 4,057 किलोमीटर लम्बी वास्तविक नियंत्रण रेखा के आर-पार केवल आक्रोशपूर्ण भाव-भंगिमाओं का ही प्रदर्शन किया है। दोनों के बीच पिछली बार 1986 में भी रोषपूर्ण और जंग से परिपूर्ण टकराव होते-होते बचा। जब अरुणाचल प्रदेश में सड़क बनाने के लिए पीएलए की टुकड़ी ने घुसपैठ की तो भारत की माउंटेन ब्रिगेड ने भी पोजीशन संभाली। चीनी सैन्य टुकड़ियां प्रधानमंत्री नरसिंह राव के बीजिंग दौरे तक डटी रहीं। उसके बाद से एलओसी पर अमन-चैन कायम है। राव ने 1993 में चीन के साथ एक ऐतिहासिक समझौता भी किया, जिसे 'बॉर्डर पीस एंड ट्रैंक्वलिटी अग्रीमेंट' कहा गया।

भारत मज़बूत राष्ट्र

भले ही संसाधन और संख्या बल में पीएलए की स्थिति मजबूत है, परन्तु भारतीय सेना ने बासठ की हार से सबक लेकर अपनी स्थिति काफी सुदृढ़ कर ली है। 26 मई को असम में चीन सीमा के नजदीक ब्रह्मपुत्र नदी पर 9.15 किमी लम्बे पुल का लोकार्पण किया गया। इसके अलावा सीमा से सटे इलाकों में सड़क, रेल, हवाई पट्टी निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है। ताजा डोकलाम विवाद के बाद चीन ऐसे ही एक और विवाद को नेपाल-भारत सीमा पर भी खड़ा करने में लगा है। पाकिस्तान भी खुराफात में शामिल हो सकता है।

भारत-अमेरिका-जापान-द.कोरिया-आस्ट्रेलिया की धुरी से चीन सशंकित है। दक्षिण चीन सागर से लगते कई आसियान देशों का चीन से विवाद है। वे चीन के खिलाफ सीधी जंग छेड़ने की स्थिति में नहीं है, फिर भी वे भारत के पक्ष में तो रहेंगे ही। सबसे बड़ा पेच यह है कि निर्णायक घड़ी में रूस का रुख क्या होगा। 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान जब अमेरिका ने पाकिस्तान के पक्ष में अपना सातवां जंगी जहाजी बेड़ा बंगाल की खाड़ी में भेजा था तो रूस ने मजबूती से कहा था कि भारत पर आक्रमण का मतलब रूस पर युद्ध होगा। बड़ा सवाल है कि रूस अपने ताकतवर पड़ोसी देश चीन से पंगा लेकर भारत के पक्ष में खड़ा रह पाएगा? हालांकि वह अन्दरखाने तो चीन से खफ़ा है, परन्तु अफगानिस्तान व ओबोर परियोजना में चीन का सहयोगी है।

-प्रकाश जोशी

बार-बार भभकी

कोई भी देश युद्ध नहीं चाहता, क्योंकि संघर्ष में उलझे देश विकास, अर्थव्यवस्था, व्यापार सहित अनेक क्षेत्रों में पिछड़ जाते हैं। भारत व चीन दोनों ही फौजें समान रूप से सशक्त हैं। भारी जानमाल के नुकसान के बगैर आगे नहीं बढ़ सकती। चीन का सरकारी मीडिया और फौजी अफ़सर यह अच्छी तरह जानते हैं कि यह 1962 की भारतीय सेना नहीं है, जिसने बोल्ट एक्शन, राइफलों और पीटी जूतों से जंग लड़ी थी। उस समय चीन ने भारत को मुग़ालते में रख 'हिन्दी-चीनी, भाई-भाई' का नारा देकर पीठ पर वार किया था। अब परिस्थितियां काफी भिन्न हैं। भले ही चीन यह कहे कि 'पहाड़ को हिलाया जा सकता है, लेकिन पीएलए को नहीं।' इस क्रम में चीन के फौजी अफसरों ने 8 अगस्त को भारतीय पत्रकारों को बीजिंग के समीप सैन्य छावनी में बुला कर पीएलए और साजो-सामान की ताकत दिखाई और कहा कि यदि भारत ने डोकलाम से अपनी सेना नहीं हटाई तो चीन के सब्र का पैमाना छलक जाएगा और युद्ध हो कर रहेगा। चीन का असल उद्देश्य है बिना गोली दागे धौंस से भारत को झुका दिया जाए। चीन धौंसपट्टी और झूठ-फ़रेब से पड़ोसी मुल्कों की ज़मीनें हड़पना चाहता है। रूस और उत्तरी कोरिया को छोड़ अन्य सभी पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद को लेकर उसकी तनातनी है। विश्व व्यापार के लिहाज से महत्त्वपूर्ण दक्षिण-चीन सागर को वह अपनी बपौती बता रहा है। अन्तरराष्ट्रीय समुद्री नियमों की सरेआम धज्जियां उड़ा कर वह कई द्वीपों की प्राकृतिक संपदा पर कब्जा किए बैठा है। वह ऐसे वक्त में वैश्विक अगुआ बनने की दावेदारी ठोक रहा है, जब अमेरिका कुछ मोर्चों पर अपने कदम पीछे खींच रहा है। हर अति नुकसानदेह है। वैश्विक परिदृश्य में समीकरण बनते-बिगड़ते देर नहीं लगती। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भी तेजी से नए समीकरण बने और बिगड़े थे, और धमकियों के पहाड़ खड़े करने वाले तानाशाह मुंह के बल गिरे।

युद्ध के सिवाय भी विकल्प

भारत को इस नाजुक घड़ी में विवेकपूर्ण और दूरदर्शी निर्णय लेने होंगे। कूटनीतिक स्तर पर विश्व जनमत को अपने पक्ष में लेकर चीन की सीनाजोरी का माकूल जवाब देना होगा। भारत और चीन न्यूक्लियर पॉवर हैं और मामूली चिनगारी बड़ी तबाही में बदल सकती है। विव में 1945 में जापान के बाद कभी परमाणु हथियारों का प्रयोग नहीं हुआ, लेकिन 6 बार तकरार के बाद तबाही के दर से लौटी है यह दुनिया। अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने भारत और चीन, दोनों को सीधे बातचीत की सलाह दी है। उम्मीद है डोकलाम विवाद कुछ दिनों में हल हो जाएगा। क्योंकि यह भारत व चीन के बीच सीमा-विवाद नहीं, अपितु भूटान और चीन के बीच का मसला है। इससे चीन के व्यापारिक हित भी प्रभावित हो रहे हैं। चीन प्रतिवर्ष भारत में 75 अरब डॉलर की वस्तुओं का निर्यात करता है। पिछले दो महीनों में चीन के निर्यात में 40 फीसद की कमी हुई है। अनुमान है कि सितम्बर में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के स्थापना के जश्न के बाद कोई न कोई रास्ता निकल आएगा।

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
B K BIRLA GROUP OF COMPANIES
B K BIRLA GROUP OF COMPANIES
बिरला सी उत्तम मेंट
मंगलम सीमेन्ट लि.

नेटवर्किंग
आईटी का आधार

आधुनिक समय में नेटवर्किंग किसी जादू से कम नहीं। जादू के इस पिटारे में मनोरंजन के साथ-साथ रोजगार के भी कई अवसर तोहफे के रूप में भरे हैं। नेटवर्किंग के सहारे दुनिया के विपरीत सिरों पर बैठे लोग एक-दूसरे को कम्प्यूटर स्क्रीन पर देखते हुए बतिया सकते हैं।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग आज के दौर में कामकाज का एक व्यापक आधार बन चुकी है। विज्ञान से इतर विषयों में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी कम्प्यूटर नेटवर्किंग के कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे विद्यार्थी, जो किसी कारण 12वीं के बाद आगे की पढ़ाई करने में समक्ष नहीं हैं और वे कोई प्रोफेशनल कोर्स करना चाहते हैं, जिसे पूरा करने के बाद उन्हें ठीक-ठाक नौकरी मिल जाए तो उनके लिए एक कोर्स नेटवर्किंग का भी है। नेटवर्किंग के तहत एक कम्प्यूटर को उसी जगह या किसी अन्य शहर या देश में स्थित कम्प्यूटरों से जोड़ा जाता है, ताकि उनके डेटा आपस में शेयर किए जा सकें। नेटवर्किंग का काम मुख्यत: तीन तरह से किया जाता है - लैन यानी लोकल एरिया नेटवर्क, मैन यानी मेट्रोपॉलिटन एरिया नेटवर्क और वैन यानी वाइड एरिया नेटवर्क और सैन यानी स्टोरेज एरिया नेटवर्क के माध्यम से।

क्या है नेटवर्किंग?

नेटवर्किंग शब्द नेट यानी जाल से बना है, जिसका अर्थ है दो से अधिक चीजों को आपस में जोड़ना। कम्प्यूटरों के संदर्भ में नेटवर्किंग का मतलब है एक कम्पनी, एक शहर, एक देश के विभिन्न स्थानों के दो या दो से अधिक कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ना व उनके संस्थानों को एक्सेस करना तथा विश्व के किसी भी कोने में स्थित कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ना। इंटरनेट मोबाइल कम्युनिकेशन, सेटेलाइट कम्युनिकेशन नेटवर्किंग का ही नतीजा है।

लोकल एरिया नेटवर्किंग (लेन) : इसमें किसी एक बिल्डिंग में रखे कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ा जाता है। जोड़े जाने वाले कम्प्यूटरों के बीच की दूरी 100 मीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। इसका कारण यह है कि इस तरह की नेटवर्किंग में कम्प्यूटरों को केबल द्वारा एक-दूसरे से जोड़ा जाता है। ज्यादा दूरी होने पर डेटा लॉस की आशंका रहती है।

मेट्रोपोलिटन एरिया नेटवर्किंग (मैन) : इसमें वायरलैस तथा वायर, दोनों तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है। ऐसी नेटवर्किंग में एक शहर के अलग-अलग इलाकों में स्थित विभिन्न इमारतों या कंपनियों में रखे कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ा जाता है। इसमें सामान्यत: ऑप्टिकल केबल, फाइबर केबल, राउटर, स्विच, रिपीटर इत्यादि एडवांस इंस्ट्रूमेंट्स उपयोग किए जाते हैं।

वाइड एरिया नेटवर्क (वैन) : वाइड एरिया नेटवर्क के तहत अलग-अलग शहरों या देशों में कार्यरत कम्प्यूटरों को जोड़ा जाता है। इसमें भौगोलिक दूरी कोई मायने नहीं रखती, क्योंकि यह पूर्णतया वायरलेस टेक्नोलॉजी पर आधारित होता है। इसमें कम्प्यूटरों को सेटेलाइट, राउटर, आईएसडीएन स्विच, वैन लाइनों से जोड़ा जाता है।

स्टोरेज एरिया नेटवर्क (सैन) : इस तरह की नेटवर्किंग का उपयोग प्राय: बड़ी कंपनियों तथा इंटरनेट सर्विस प्रदान करने वाली कंपनियों द्वारा किया जाता है। इसके तहत एक सर्वर तथा स्टोरेज डिवाइसों को अनेक सर्वरों और स्टोरेज डिवाइसों के साथ सीधे जोड़ा जाता है।

प्रवेश योग्यता : कम्प्यूटर नेटवर्किंग से संबंधित अधिकांश कोर्सेज में प्रवेश के लिए 12वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। हालांकि इन कोर्सेज को ग्रेजुएट या ऊंची शिक्षा प्राप्त छात्र भी कर सकते हैं। साइंस बैकग्राउंड और कम्प्यूटर की बेसिक नॉलेज रखने वाले छात्रों को थोड़ी सुविधा होती है।

ये हैं कोर्स : नेटवर्किंग कोर्स मुख्यत: दो तरह के होते हैं - नेशनल और इंटरनेशनल। इंटरनेशनल कोर्सेज के तहत वे कोर्स आते हैं, जिनकी परीक्षा तथा सर्टिफिकेट अंतरराष्ट्रीय संस्थानों द्वारा लिए जाते हैं। इनकी विश्व में हर जगह मांग होती है। इंटरनेशनल कोर्सेज में प्रमुख हैं - एमसीएसई यानी माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड सिस्टम इंजीनियर एमसीएसए यानी माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर, सीसीएनए यानी सिस्को सर्टिफाइड नेटवर्क एसोसिएट। इसके अलावा डिप्लोमा इन नेटवर्क टेक्नोलॉजी, डिप्लोमा इन नेटवर्क टेक्नोलॉजी एंड डेटाबेस एडमिनिस्ट्रेशन, एडवांस डिप्लोम इन नेटवर्क टेक्नोलॉजी एंड सिक्योरिटी एक्सपर्ट, मास्टर इन नेटवर्क इंजीनियरिंग कोर्स भी किए जा सकते हैं।

संभावनाएं : दुनिया भर में जिस तेजी से कम्प्यूटरों का प्रयोग बढ़ रहा है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि नेटवर्किंग इंजीनियरिंग में रोजगार की विपुल संभावनाएं हैं। ऐसी स्थिति में भारत में ही लाखों स्किल्ड लोगों की जरूरत होगी। एक स्किल्ड नेटवर्किंग इंजीनियर भी छोटी या बड़ी कंपनी में नेटवर्क इंजीनियर, नेटवर्क सिक्योरिटी एक्सपर्ट, नेटवर्क एडमिनिस्टेटर, डेस्कटॉप सपोर्ट इंजीनियर, टीम लीडर टेक्निकल हेड, टेक्निकल सपोर्ट इंजीनियर आदि बन सकता है।

- अमित शर्मा

हैप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय

प्रतापनगर, उदयपुर फोन : 2491411(वि.), 2490130 (नि.)

कक्षा XII तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण हेतु मान्यता प्राप्त

वर्ष-2013 से अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण प्रारंभ

विशेषताएं

- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विविध प्रशिक्षण व प्रतियोगिताएं
- समाज के सभी वर्ग के बालक-बालिकाएं श्रेष्ठ शिक्षा ग्रहण कर सकें, इस हेतु सामान्य फीस
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- सभी विषयों की उच्च स्तरीय प्रयोगशालाएं
- कम्प्यूटर शिक्षा हेतु पर्याप्त कम्प्यूटर्स की व्यवस्था
- शिक्षण में श्रेष्ठ नवाचारों का प्रयोग

व्यवस्थापक निदेशक
जगदीश अरोड़ा

शाखा : **हैप्पी होम मा.वि. पुरोहितों की मादड़ी, उदयपुर**
फोन नं. 2491383

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

सलोनी कांटा

विश्वसनीयता का एक ही नाम

राजू खत्तड़
9950197388

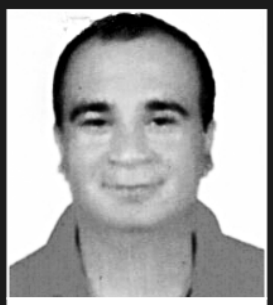

अनिल खत्तड़
9829500388

विक्की खत्तड़
9929092911

जिला उद्योग केन्द्र के आगे,
बी-152, रोड नं. 11, मादड़ी
एम.आई.ए,उदयपुर

दुर्लभ होता 'खरमोर'

मानसून के दौरान भारत में पाया जाने वाला विलक्षण प्रजाति का प्रवासी पक्षी खरमोर (लेसर फ्लोरिकेन) लुप्त होने के कगार पर है। औद्योगिकरण, खनन और कीटनाशकों के उपयोग के कारण 'खरमोर' की संख्या कम हो रही है। किसानों का मित्र यह पक्षी खेती को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों का अपना आहार बनाता है।

ठण्डे इलाकों में पाया जाने वाला खरमोर एक प्रवासी पक्षी है, जो भारत में प्राय: मानसून में देखा जाता है। यह पक्षी कुछ वर्षों पूर्व तक मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रदेशों में बड़ी संख्या में आते थे, लेकिन साल दर साल इनकी मौजूदगी कम होती रही। जिससे पक्षी प्रेमियों और विशेषज्ञों का चिंतित होना स्वाभाविक था। राज्यों के वन विभाग भी चौकन्ना हुए।

अच्छे मानसून और बारिश का जैसे हमें इन्तज़ार रहता है, वैसे ही पशु-पक्षी भी इसका बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि यह समय इनका प्रजनन काल होता है। जुलाई के आखिरी पखवाड़े से अक्टूबर मध्य तक सोनचिरैया परिवार का पक्षी 'खरमोर' विशेष रूप से मध्यप्रदेश, गुजरात और राजस्थान का आतिथ्य स्वीकार करता हैं।

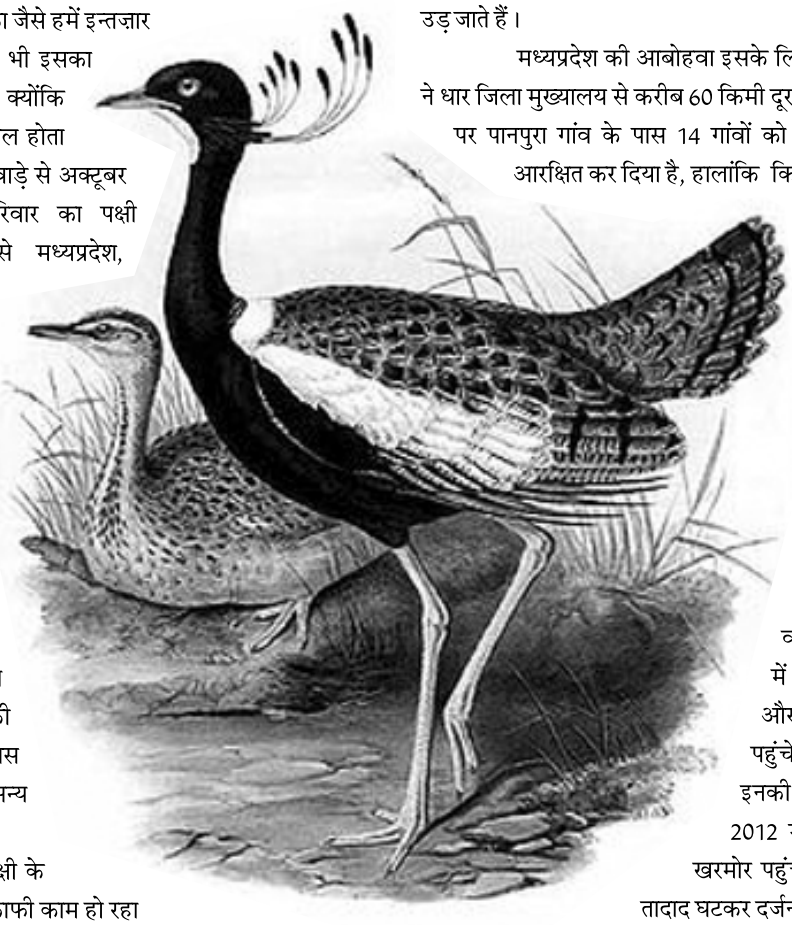

साधारण मुर्गी के आकार के ये पक्षी कहां से आते हैं और कहां जाते हैं, इसका पता लगाने के लिए रेडियो चिप का सहारा लिया जा रहा है। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून इस दिशा में कार्य कर रहा है। चिप की रेडियो फ्रिक्वेंसी से इनके प्रवास की स्थिति, यात्रा मार्ग और अन्य जानकारियां मिल सकेंगी।

इस खूबसूरत पक्षी के संरक्षण में मध्यप्रदेश में तो काफी काम हो रहा है। इन्हें चिन्हित करने वालों को प्रोत्साहन पुरस्कार की घोषणा ही नहीं की गई बल्कि विशेष अभयारण्य भी बनाए गए हैं। दूर-दूर तक फैली घास की बीड़ और बरसात का सुहाना मौसम इन्हें खास रास आता है। इन राज्यों में आगमन के करीब एक माह बाद मादा खरमोर अंडे देती है और नर-मादा दोनों उन्हें सहेजते हैं, एक सप्ताह बाद अण्डे से चूज़े निकल आते हैं।

सुन्दर सुराहीदार गर्दन और लम्बी पतली टांगों वाले खरमोर की 'ऊंची कूंद' देखने लायक होती है। मादा पक्षी को रिझाने के लिए नर पक्षी लगातार सैकड़ों बार तक कूदता है। ये बहुत शर्मीले होते हैं, ज़रा सी आहट पर उड़ जाते हैं।

मध्यप्रदेश की आबोहवा इसके लिए मुफीद होने से राज्य सरकार ने धार जिला मुख्यालय से करीब 60 किमी दूर इन्दौर-झाबुआ राष्ट्रीय राजमार्ग पर पानपुरा गांव के पास 14 गांवों को इस पक्षी के प्रजनन के लिए आरक्षित कर दिया है, हालांकि किसान अपनी ज़मीनों पर पूर्व की भांति खेती करते रहेंगे, लेकिन बेच नहीं सकेंगे। उधर वन विभाग इनके संरक्षण के लिए विशेष प्रयास करेगा। इस इलाके में सन् 2013 में दो-तीन खरमोर देखे गए जब कि वर्ष 2014 में एक भी देखने में नहीं आया।

रतलाम जिले के सैलाना स्थित खरमोर अभयारण्य के आंकड़े देखें तो वर्ष 2005 में 26, 07 में 27, 08 में 30, 09 में 32, 2010 में 24 और 2011 में 18 खरमोर ही यहां पहुंचे थे। इसके बाद के वर्षों में इनकी तादाद लगातार घटती गई। 2012 में 33 और 2015 में यहां 15 खरमोर पहुंचे। बीते दो साल में तो इनकी तादाद घटकर दर्जन के आंकड़े तक ही सिमट गई। पक्षी प्रेमियों के लिए यह चिंता का विषय है। राजस्थान के महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर के पर्यावरण विज्ञान विभाग ने भी राजस्थान में इस प्रजाति के पक्षी के दुर्लभ होने पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए संरक्षण के उपाय तेज करने पर बल दिया है।

-रेणु शर्मा

With Best Compliments for Navratri

Rasiklal M. Dhariwal

PUBLIC SCHOOL

(English Medium Co-Education)

Manikchand®

R.M.D.P.S. UDAIPUR

CHITRAKOOT NAGAR, UDAIPUR (RAJ.) Ph.:-0294-6509446

- Dedicated & Experienced Teachers
- Homely environment with individual attention
- Child centric approach for Pre-primary classes
- Knowledge hub, a student friendly Library
- Value based education with innovative methodology
- A modern airy, naturally well-lighted & eco-friendly school building
- Well equipped computer & science laboratory
- Air conditioned classrooms for Pre-primary sections
- Special attention on Social, Spiritual, Emotional, Physical & Mental growth
- Digital classrooms with projector
- Indoor & outdoor sports facility
- Conveyance facility available
- Well equipped self-contained hostel facility with air cooled & A.C. rooms
- Parents satisfaction is our motto.
- Teacher student ratio 1:30

GENEROUS OFFER

- **For** IX, X class-no tution fee for first 10 new admission.
- **For** Play Group-No tution fee.
- **3rd** brother/sister will be exempted from tution fee.
- **Jain** Society grant scholarship of 50% tution fee to Jain students

For Further Enquiries Contact

Gajendra Bhansali
(Hon. Secretary)
0294-2421077

Principal
0294-6509446

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

पाक अदालतों पर सेना का शिकंजा

सत्ता से बेदखल नवाज शरीफ

-महेन्द्र दीक्षित

पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई को एक फैसला सुना कर सियासी गलियारों में हड़कंप मचा दिया। शीर्ष अदालत की पांच सदस्यीय पीठ ने एकमत से फैसला सुना कर प्रधानमंत्री मोहम्मद नवाज शरीफ को पनामा पेपर लीक्स मामले में पद छोड़ने को मजबूर कर दिया। नवाज ने तुरन्त इस्तीफा भी दे दिया। अगली व्यवस्था तक पाकिस्तान के पेट्रोलियम मंत्री शाहिद खाकान अब्बासी अंतरिम प्रधानमंत्री रहेंगे। संविधान के अनुसार नेशनल असेंबली का सदस्य ही प्रधानमंत्री बन सकता है। अगले साल वहां आम चुनाव होने हैं। बेटी मरियम को नवाज उत्तराधिकारी घोषित कर चुके थे, परन्तु बेटी, दोनों पुत्र व दामाद भी पनामा गेट कांड में शामिल हैं, लिहाज़ा वे भी प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगे। ऐसे में नवाज अपने छोटे भाई और पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री शाहबाज शरीफ अथवा अपनी पत्नी कुलसुम को प्रधानमंत्री बनवा सकते हैं, क्योंकि नवाज अगला चुनाव भी नहीं लड़ पाएंगे। उन्हें पार्टी अध्यक्ष पद भी छोड़ना होगा।

झूठ और नफ़रत की बुनिया पर खड़ा मुल्क

भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ भू-भाग के बंटवारे से पाकिस्तान का निर्माण हुआ। अविभाजित भारत के आज़ाद होते ही मोहम्मद अली जिन्ना ने प्रधानमंत्री बनने की ज़िद पकड़ी। ऐसा संभव न हो पाने पर उन्होंने देश का ही विभाजन करवा डाला। पाकिस्तान को लोकतंत्र कभी मुफीद नहीं रहा। धर्मांधता, कट्टरता और दकियानूसी के कारण वहां राजनीतिक अस्थिरता रही। सेना ने शुरू से ही सियासत और अवाम को शिकंजे में रखा। लोकतंत्र तो दिखावे का रहा, जमींदारों, रसूखदारों और मुल्लाओं ने राजनीति पर पूरी तरह कब्जा जमाये रखा। 70 साल में 27 प्रधानमंत्री बने, परन्तु कोई भी अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा नहीं कर सका। प्रथम पीएम लियाकत अली खान की चार साल बाद ही हत्या कर दी गई। आमतौर पर लोकतंत्र में किसी भी राजनेता का भविष्य जनता तय करती है, लेकिन पाकिस्तान में ऐसा सिर्फ मतदान के वक्त ही नज़र आता है। प्रधानमंत्री बन जाने पर उसे काम करने देना या रोकना फौज, अदालत और कट्टरपंथी तय करते हैं। फौजी शासक ज़िया उल हक द्वारा 1973 में नया संविधान लागू करने के बाद जुल्फिकार भुट्टो प्रधानमंत्री बने, परन्तु वे भी सैन्य तख्तापलट का शिकार हुए। 1988 में उनकी बेटी बेनजीर भुट्टो पीएम बनी तो दो साल बाद उन्हें भी राष्ट्रपति ने भ्रष्टाचार के आरोप में बर्खास्त कर दिया। वे दुबारा पीएम बनी तो उन्हें 1996 में बर्खास्त किया गया। इसी तरह युसूफ रजा गिलानी 2008 में चुनाव जीत कर पीएम बने तो सुप्रीम कोर्ट की अवमानना का दोषी करार देने से 2012 में उन्हें भी कुर्सी छोड़नी पड़ी। इस बार राजनीतिक बलि का बकरा बने नवाज शरीफ 1990 में पहली बार पीएम बने तो राष्ट्रपति

क्या है पनामा पेपर लीक्स?

यूं तो मध्य अमरीकी देश पनामा जहाजी नहर के लिए पहचाना जाता है। इस छोटे से देश में आमतौर पर बैंकिंग की खास गोपनीयता है। दुनिया भर के टैक्स-चोरों और अपराधियों के लिए यह टैक्स हेवन बना हुआ है। मालिक की पहचान और धन के स्रोत को छिपाने और कर चोरी के लिहाज से यह दुनिया भर में भ्रष्टाचारियों के लिए पनाहगाह बना हुआ है। पिछले दिनों पत्रकारों की संस्था 'इंटरनेशनल कन्सॉर्टियम ऑफ इंन्वेस्टिगेशन जर्नलिस्ट' ने पनामा की फर्म 'मोसेका फोंसेका' की वेबसाइट हैक कर दुनिया की बड़ी हस्तियों का कालाधन उजागर किया था। इसमें विश्व के 140 राजनेताओं और अनेक बड़ी शख्सियतों के नाम हैं। राजनेताओं में नवाज शरीफ के अलावा, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, पूर्व ब्रिटिश पीएम डेविड कैमरन, आइसलैण्ड के पीएम के नाम शरीक हैं। पाक अदालत के फैसले के मुताबिक नवाज 7 अगस्त, 2006 से 20 अप्रैल 2014 तक दुबई की एक कंपनी में चेयरमैन थे। उन्हें 10 हजार दिरहम वेतन मिलता था, जिसकी उन्होंने 2013 के चुनाव में जानकारी नहीं दी। बेटी मरियम ने जो दस्तावेज जांच दल को सौंपे थे वे भी जाली पाए गए। दस्तावेज 2006 के थे और यह माइक्रोसॉफ्ट वर्ड के पॉपुलर फॉन्ट कैलिबरी में टाइप किए गए थे। जबकि यह फॉन्ट पब्लिक के लिए 2007 में जारी हुआ था। पनामा पैपर लीक्स मामला आईसीआईजी ने 4 अप्रैल 2016 को साार्वजनिक किया था। मामला सामने आने पर पीटीआई पार्टी के प्रमुख इमरान खान ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। पन्द्रह माह पहले शरीफ के खिलाफ भ्रष्टाचार का केस दायर हुआ। अदालत ने पिछले साल अक्टूबर से सुनवाई शुरू कर 273 दिन में 150 घंटे की सुनवाई के बाद 28 जुलाई को प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को कहा 'अपना पद छोड़ें, मिया' अब आप कोर्ट की निगाह में शरीफ नहीं हैं।'

गुलाम इसहाक खान से मतभेद के चलते 1993 में संसद भंग कर दी गई। 1997 में वे फिर प्रधानमंत्री बने, परन्तु फौज के प्रमुख मुशर्रफ ने तख्ता पलट कर उन्हें बंदी बना कर देश छोड़ने पर विवश कर दिया। 5 जून 2013 में नवाज फिर बहुमत से सत्ता में आए तो 4 साल बाद ही सुप्रीम कोर्ट ने इन्हें बेदखल कर दिया।

क्या अदालत का फैसला निष्पक्ष है?

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट अति सक्रिय रही। इस मामले में पाकिस्तानी फौज ने भी अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी भूमिका निभाई। इन दोनों की मिलीभगत से ही नवाज सत्ता से बेदखल किए गए। अदालत ने जांच कमेटी जेआईटी में सेना के आईएसआई खुफिया अधिकारी को शामिल किया था, जिसकी रिपोर्ट ही शरीफ की अयोग्यता का कारण बनी। असल में अदालत के अनोखे और अप्रत्याशित कदमों से दुनिया भर में संदेह गहराया है। सबको पता है नवाज शरीफ और सेना के रिश्ते असहज रहे। भारत के साथ रिश्ते बेहतर बनाने की शरीफ की कोशिशों को भी सेना ने ही पलीता लगाया। चाहे जुलाई 15 में उफा में मोदी-शरीफ के बीच बात हो या दिसम्बर 15 में लाहौर में उनकी मुलाकात। सेना ने सुधरते रिश्तों को पटरी से उतारने के लिए सीमा पर नापाक हरकतों का सहारा लिया। उड़ी, पूंछ, गुरुदासपुर हमला हो या कश्मीर में अर्से से चलाया जा रहा छद्म-युद्ध पाकिस्तानी सेना हर बार बेनकाब हुई।

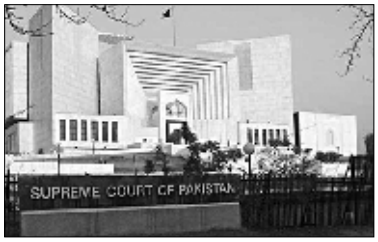

अदालती तख्तापलट

पाकिस्तानी अदालत ने भले ही सियासत को भ्रष्टाचार मुक्त करने का संकल्प जताया, परन्तु न्याय के सुनिश्चित मापदंडों का पालन करना भूल गई। नवाज शरीफ के खिलाफ पनामा पेपर लीक्स का मामला तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के प्रमुख इमरान खान ने दायर किया था। अदालती फैसला अनोखा इसलिए कि उसने शरीफ को दोषी घोषित किया, सिर्फ इस आधार पर कि जेआईटी ने जो रिपोर्ट कोर्ट को सौंपी, उसमें वे गुनहगार माने गए। अदालत ने कहा है कि नेशनल अकांउटेबिलिटी कोर्ट में नवाज व उसके परिवार पर मुकदमा चलेगा। जब मुज़रिम घोषित कर दिए गए तो अब कैसा मुकदमा? सवाल यह है कि अदालत ने उन्हें किस बात के लिए सजा दी है। जेआईटी रिपोर्ट तो एक चार्जशीट की तरह थी, जिसकी बुनियाद पर कोर्ट में मुकदमा चलता है। मुकदमा चले बिना ही अदालत ने उन्हें पद से हटा दिया। याचिका दायर करने वाले इमरान खान ने भी तो अपने हलफनामे में अपनी एक 'ऑफशोर कंपनी' के बारे में खुलासा नहीं किया है। पनामा पैपर में पाकिस्तान के कुछ और लोगों के भी नाम हैं, फिर उस पर चुप्पी क्यों है?

सादिक और अमीन कौन?

दरअसल पाकिस्तानी संविधान के अनुच्छेद 62 और 63 में नेशनल असेंबली के सदस्य बनने के जो प्रावधान हैं। उसके अनुसार सांसद को 'सादिक और अमीन' यानी सिर्फ सच बोलने वाला और ईमानदार होना चाहिए। इस आला दर्जे की योग्यता पर तो आलिम-ए-इस्लाम में पैगंबर मोहम्मद ही उन कसौटियों पर खरा उतर सकते हैं। हर इंसान अपनी जिंदगी में कोई न कोई गलती अवश्य कर बैठता है। अदालत ने अब तक शायद इन गुणों पर ग़ौर नहीं किया, वर्ना पाकिस्तानी संसद में एक भी मैम्बर नहीं पहुंच पाता। दुनिया से छिपा नहीं है कि पाकिस्तान की फौज कितनी पाक-साफ़ है। सार्जेंट से कमांडर और मेजर से जनरल तक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। सेना के खिलाफ बोलने की हिम्मत न अदालत में है और न ही मीडिया व अवाम में। जनता के नुमाइंदे तो बस उसकी कठपुतली हैं। वैसे भी इस घटनाक्रम के बाद अब जजों की मर्जी पर निर्भर करेगा कि किस मामले की कितनी और कैसी व्याख्या करना है। आगे जो भी प्रधानमंत्री या मंत्री बनेगा, उसकी तकदीर अदालतें ही तय करेंगी और सेना उसकी आधार का निर्माण करेगी। शरीफ के कुर्सी छोड़ने के बाद नए प्रधानमंत्री बने शाहिद खाकान अब्बासी पर भी कुछ बड़े आरोप हैं। देखना यह है कि वे कितने इतवार कुर्सी पर टिके रहेंगे?

अगले साल चुनाव

पाकिस्तान में अगले साल नेशनल असेंबली के आम चुनाव होने हैं। इसमें संदेह नहीं कि शरीफ परिवार सियासी तौर पर सबसे ताकतवर है। पंजाब सूबे पर इनकी मजबूत पकड़ है। सियासत का सबसे बड़ा रुतबा व पद छिन जाने के बाद इस परिवार को अपनी दुबारा वैसी हैसियत पाना इस घटना के बाद बेहद मुश्किल है। शरीफ सरकार में मंत्री रहे चौधरी निसार जैसे प्रभावशाली सिपहसालार खेल बिगाड़ सकते हैं। दूसरा, इमरान खान जैसे प्रतिद्वन्द्वी उन्हें चैन से नहीं रहने देंगे। यदि आगे मुकदमे में नवाज स्थाई रूप से अयोग्य घोषित हो जाते हैं तो परिवार में नए समीकरण बन सकते हैं। अभी तक उनके भाई शाहबाज शरीफ अथवा नवाज की पत्नी कुलसुम के ही उत्तराधिकारी बनने के संकेते हैं। भारत के रिश्तों पर भी प्रभाव पड़ सकता है। चीन वहां ज्यादा हावी होगा। उसने पीओके में आतंकियों को पनाह और फंडिंग शुरू कर दी है, ताकि उसकी 'वन बेल्ट वन रोड' की महत्त्वाकांक्षी योजना पर तेजी से अमल हो सके। इसके साथ ही वह पीओके में सिंधु नदी पर 6 बांध निर्माण करने वाला है। पाकिस्तानी फौज अपनी नापाक हरकतों से बाज आने वाली नहीं है, हालांकि उसे सीमा पर माकूल जवाब भारत द्वारा दिया जा रहा है। पहले अमेरिका की शह पर उछलकूद करती थी। अब चीन की सरपरस्ती उसे मिल रही है। हालांकि भारत भी अब मज़बूत राष्ट्र बन कर उभरा है और अमेरिका सहित कई ताकतवर देशों का उसे समर्थन है। पाकिस्तान में लोकतंत्र जिंदा रहना स्वयं उसके लिए भी जरूरी है। किसी भी देश में लोकतंत्र फौजी हुकूमत से हजार गुना ठीक है। इसके साथ ही 3 जुलाई को आश्चर्यजनक रूप से लश्कर-ए-तैयबा और अन्य कई आतंकवादी संगठनों के सरगना हाफिज सईद ने 'मिल्ली मुस्लिम लीग' पाकिस्तान नामक सियासी पार्टी बना कर अगले साल आम चुनाव में उतरने के लिए चुनाव आयोग में दरख्वास्त लगाई है। उसका मानना है कि भ्रष्टाचारी नवाज और चारित्रिक रूप से धब्बेदार इमरान खान को चित कर वह सियासत का सूरमा बन सकता है। भारत को पड़ोस में घटने वाले घटनाक्रमों पर कूटनीतिक और सियासी रूप से पैनी नजर रखने की जरूरत है।

यशस्वी यशवंत कोठारी

डॉ. कोठारी मेवाड़ के गौरव हैं। इन्होंने परमार्थ के लिए अपने जीवन के पांच दशक समर्पित किए। अपने लिए तो सभी जीते हैं, सच्चा इन्सान तो वही है जो कोठारी की तरह औरों के लिए जिए। इन्होंने देश में पोलियो उन्मूलन अभियान में विशेष पहल की।

उदयपुर निवासी डॉ. यशवंत कोठारी ने स्वामी विवेकानन्द और आचार्य तुलसी से प्रभावित होकर 'सेवा परमोधर्म' को अपना ध्येय बनाया। पांच दशक पहले वे अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए रोटरी क्लब, उदयपुर के सदस्य बने, ताकि समाज के उन लोगों तक पहुंचा जा सके, जो दुःखी, विपन्न और रोगी जीवन बिता रहे हैं। कई सामाजिक संगठनों से जुड़े डॉ. यशवंत कोठारी रोटरी क्लब उदयपुर के अध्यक्ष तथा गवर्नर जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे। इन पदों पर रहते हुए डॉ. कोठारी को समाज के अंतिम सिरे पर खड़े बदहाल व्यक्ति से मिलने और उसकी व्यथा-कथा समझने का मौका मिला। कोठारी दुःखी व्यक्ति के लिए आशा की किरण बने और उसकी पीड़ा को कम किया। इनकी सेवा यात्रा में एक नया आयाम तब शुरू हुआ, जब 1981 में उन्हें लगा कि अकेले भारत में दुनिया के साठ फीसद पोलियो रोगी हैं, जिनमें से ज्यादातर अल्प वय बालक हैं। जो शारीरिक अशक्तता की वजह से कष्टकारी जीवन बिता रहे हैं। उन्होंने संकल्प लिया कि वे भारत में पोलियो उन्मूलन के लिए जी-जान लगा देंगे।   रोटरी इन्टरनेशनल द्वारा 1994 में नेशनल पोलियो पल्स कमेटी गठित की गई। राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं दिल्ली प्रदेश प्रभारी के रूप में डॉ. कोठारी को मनोनयन किया गया। उनके कुशल नेतृत्व में देश में सर्वप्रथम 1994 में दिल्ली, 1995 में राजस्थान तथा गुजरात के कई बड़े शहरों में पोलियो टीकाकरण के सफल आयोजन हुए। उसके बाद अन्य कई जगह पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम चलाए गए। 16 जुलाई 1994 को चित्तौड़गढ़ रोटरी पदस्थापन दिवस में शिरकत करने वाले डॉ. कोठारी के उद्बोधन की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से प्रभावित जिला कलक्टर शैलेन्द्र अग्रवाल की अगुआई में पल्स पोलियो कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ। चित्तौड़गढ़ ने ही देश में पोलियो उन्मूलन की अलख जगाई। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित 'पोलियो मुक्त सम्मेलन 2014' के समारोह में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने डॉ. यशवन्त कोठारी को इस क्षेत्र में अविस्मरणीय सेवाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। डब्ल्यूएचओ, भारत सरकार तथा रोटरी इन्टरनेशनल ने इन्हें देश के अन्य राज्यों की पोलियो टीकाकरण अभियान कमेटी में भी नियुक्त किया। इनकी महत्वपूर्ण सिफारिशों से देश में पोलियो उन्मूलन की दिशा में उल्लेखनीय काम हुआ। डॉ. यशवंत कोठारी 1981 से अब तक पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम से जुड़े हैं। इन्होंने 'पोलियो मुक्त भारत', 'पोलियो मुक्त विश्व' और 'पोलियो मुक्त राजस्थान' नामक तीन पुस्तकें भी लिखी। इनका सेवा व्रत पूरे भारत में एक आन्दोलन होकर चल पड़ा। रोटरी ने इन्हें 'थानचंद स्वर्ण पदक','सर्विस एबव सेल्फ अवार्ड' तथा 'शताब्दी पुरुष सम्मान' प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किए गए। राज्य सरकार तथा अन्य कई संस्थाओं ने भी इन्हें सम्मानित किया।

– नंद किशोर

द बांसवाड़ा सेन्ट्रल कॉ-ओपरेटिव बैंक लिमिटेड बांसवाड़ा

आवश्यक सूचना

बैंक के सभी सम्मानित ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि सरकार की विभिन्न योजनाओं की राशि सीधे अपने बैंक खातों में प्राप्त करने एवं अल्पकालीन फसली ऋण की सुविधा प्राप्त करने हेतु द बांसवाड़ा सेंट्रल कॉ-ओपरेटिव बैंक लि. बांसवाड़ा की समस्त कोर समर्थ शाखाओं में अपने बचत खाते खुलवाए। जिनके खाते बैंक की शाखाओं में खोले जा चुके हैं, वे अपने व्यक्तिगत पहचान पत्र (यथा आधार कार्ड, वोटर आईडी, नरेगा जॉब कार्ड आदि) एवं दो फोटो लेकर बैंक की शाखा, लेम्पस अथवा बैंक के अधिकृत बिजनेस कोरस्पोंडेंट से सम्पर्क करें एवं अपने खातें की **KYC** पूर्ण करवाएं, जिससे उक्त खातों में लेन-देन किया जा सके, साथ ही जिले के समस्त ई-मित्र संचालकों से निवेदन है कि वे बैंक के बिजनेस कॉरस्पोंडेंट बनने के लिए निकट की बैंक शाखा से सम्पर्क करें।

प्रशासक **प्रबंध निदेशक**

अस्पताल बना श्मशान

चिकित्सक या नरपिशाच ?

यह त्रासदी नहीं बल्कि एक तरह से सामूहिक हत्याकांड है। हमारे बच्चों के लिए आजादी के 70 साल क्या यही हैं?

- नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी

यू पी देश का दिल है। भाजपा ने विधानसभा चुनाव में पूरी ताकत लगा इसे जीता। मुख्यमंत्री पद एक महंत को यूं सौंपा गया, मानो व्यासपीठ पर बैठ उन्हें सिर्फ पार्टी पुराण ही बांचना है। राजनीति के धुरन्धर और पुराने असरदार नेता मुंह ताकते रह गए और भगवा योगी महिमा मण्डित हो गए। नए एक्सपेरिमेंटल फैक्टर में प्रशासकीय व्यवस्था और जनहित के मुद्दों की उपेक्षा हुई। किसी महंत की राय राज-काज के लिए अच्छी हो सकती है, परन्तु उनके हाथ में ही राजदण्ड थमा देना ठीक नहीं। मुख्यमंत्री के गृह क्षेत्र में ही ऑक्सीजन के अभाव में 60-70 उपचाररत बच्चों की मौत उनके राज की अक्षमता सिद्ध करने को काफी है। मौतों के सिलसिले के दो दिन पहले ही वे गोरखपुर के इस सरकारी अस्पताल का दौरा कर चुके थे। तब उनके सामने ऑक्सीजन की कमी और रुके हुए भुगतान का मुद्दा क्यों नहीं आया? मुख्यमंत्री ने मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल और इंसेफिलाइटिस वार्ड के प्रभारी को हटाने के हुक्म जारी किए। परन्तु इस पर चिंतन नहीं हुआ कि ऑक्सीजन सप्लाई करने वाली फर्म के लाखों रुपये का भुगतान अटका क्यों था? क्यों वहां डाक्टर के भेष में नर पिशाच थे। योगी के भक्त दलील दे रहे हैं कि इंसेफिलाइटिस तो सन् 72 से प्रभावी रहा है और अगस्त में तो उससे ज्यादा मौतें होती रही हैं। ऐसा कहना ही राज्य सरकार की संवेदनहीनता दर्शाता है। मुख्यमंत्री जब कह रहे हैं कि मौतें ऑक्सीजन से नहीं, प्राकृतिक कारणों से हुई है तो लगता है सरकारी अस्पताल में मौत के इस ताण्डव पर राज्य सरकार कार्रवाई के नाम पर अब भी लीपापोती करना चाहती है। मेडिकल कॉलेज में पांच दिनों में 60 मौतों के लिए मुख्यमंत्री को देश से माफी मांगनी चाहिए। प्रदेश के दोनों स्वास्थ्य मंत्रियों को इस्तीफा देना चाहिए और लापरवाही की जांच के लिए संसदीय कमेटी का गठन होना चाहिए। घटना के लिए सीधे तौर पर प्रदेश सरकार और स्थानीय प्रशासन जिम्मेदार है। ये मौत नहीं हत्याएं हैं। डॉक्टरों और अफसरों ने संवेदनशीलता दिखाई होती तो इतनी मांओं की गोद किलकारियों से सूनी न होतीं।

- अशोक तम्बोली

शब्द ज्ञान

अंग्रेजी-हिन्दी शब्दों का सही प्रयोग

अनेक ऐसे शब्द होते हैं, जिनकों प्राय: पर्याय समझ लिया जाता है। ऐसे शब्दों की व्यवहार में निकटता तो होती है, परन्तु अर्थ में कदापि नहीं। जानकारी के अभाव में प्राय: इन शब्दों का ठीकठाक प्रयोग नहीं हो पाता, जिसके कारण प्राय: अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है। हर अंक में ऐसे समानार्थक शब्दों का सही अर्थ देने का प्रयास रहेगा।

Need - जरूरत, ऐसी वस्तु जिसकी पूर्ति वांछनीय है।

Necessity - आवश्यकता, वस्तु/बात जिसके बिना काम न चल सकता।

Exigency - अत्यावश्यकता, विशेष मौके पर जिसकी नितांत आवश्यकता हो।

Requirement- अपेक्षा, किसी शर्त आदि के लिए पूरी की जाने वाली जरूरत।

Requisite - अपेक्षित, किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए जो सहायक हो।

Want - चाह, इच्छा या जरूरत जो महसूस की जाए।

Normal - सामान्य, मान्य स्तर का या नियमित रूप वाला।

Natural - प्राकृतिक(स्वाभाविक) प्रकृतिजन्य/स्वभावगत सामान्य रूप।

Ordinary - मामूली, जो ठीक-ठाक रूप से हो।

Regular - नियमित, स्वीकृत प्रतिमान पर खरा या दैनिक उपयोग का हो।

Typical - प्रकारात्मक, जो किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करे।

Usual - आम(सामान्य), सामान्यत: व्यवहार में प्रचलित।

Customary - रूढ़िगत, नॉर्मल रीति-रिवाज के अनुसार।

Obligation - बाध्यता(दायित्व), विधायी रूप से आवश्यक कोई बात।

Duty - कर्तव्य, कामकाज के लिए उत्तरदायित्व निर्वहन।

Order - आदेश(हुक्म), प्राधिकारी द्वारा जारी लिखित आदेश।

Mandamus- परमादेश, सार्वजनिक प्रकृति के काम को करने का विशेष आदेश।

Ordinance - अध्यादेश, सर्वोच्च शासक द्वारा विशेष विधि से बनाया आदेश।

Outcome - निष्कर्ष, जिसमें किन्हीं स्थितियों का अन्तत: प्रभाव लक्षित हो।

Consequence - परिणाम, जिसमें तर्कसंगत फल निहित हो।

End - अन्तत: निकला परिणाम, सार रूप में अंतिम रूप से प्राप्त फल।

Result - नतीजा, किसी के प्रयासों के फलस्वरूप निकला परिणाम।

समाज की आधारशिला हैं शिक्षक

आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को दो स्वरूपों में देखा जाता है। जिन्हें आध्यात्मिक गुरु और लौकिक गुरु के रूप में परिभाषित किया गया है। चूंकि बात शिक्षक दिवस के प्रसंग से जुड़ी है इसलिए यहां लौकिक स्वरूप में शिक्षक के बारे में चर्चा करना प्रासंगिक है। शिक्षक को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में एक अध्यापक के रूप में ही देखा जाता है। यद्यपि सामाजिक व्यवस्था में यही उसकी सेवा है। इसलिए शिक्षक को आवश्यक तक ही सीमित कर दिया गया है, जबकि इसे व्यापक अर्थों में देखा जाना चाहिए। कहते हैं यदि जीवन में शिक्षक नहीं हो तो शिक्षण संभव नहीं है। शिक्षण का शाब्दिक अर्थ शिक्षा देने से है, जिसकी आधारशिला शिक्षक रखता है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है क्योंकि उन्हें गुरु कहा जाता है, लेकिन अब जबकि सामाजिक व्यवस्थाओं का स्वरूप बदल गया है इसलिए शिक्षक भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। आज शिक्षक कहीं प्रोफेसर के रूप में अपने शिष्यों से पूजा नहीं जाता, बल्कि जीवन से हाथ धोता है तो कहीं लव गुरु होकर समाज में तिरस्कृत होता है। यह न तो शिक्षक के लिए हमारा गरिमापूर्ण आचरण है और न ही शिक्षक का सम्मानजनक आचरण। शिक्षक जब ज्ञान प्रदाता है तो उसकी शिक्षाएं समाज के लिए अनुकरणीय हैं। अब सवाल यह है कि हम समाज की नींव रखने वाले इस व्यक्तित्व को शनै-शनै विस्मृत क्यों करते जा रहे हैं। हमारी यही कमजोरी आज हमारे लिए घातक सिद्ध हो रही है। जहां से हमें ज्ञान मिलता है, फिर चाहे वह लौकिक हो या आध्यात्मिक। हमें हमेशा ही इनका आदर करना चाहिए। लेकिन शिक्षकों को भी सोचना होगा कि गुरु-शिष्य सम्बन्धों में पुराना सौहार्द, स्नेह, सद्भाव और सम्मान विलोपित क्यों हो रहा है?

- डॉ. प्रीतम जोशी

पाठक पीठ

आखिर चीन से कैसे निपटा जाए?

पिछले अंक का सम्पादकीय अच्छा लगा। पिछले 75 दिन से भारतीय सशस्त्र बल और चीन की पीपल्स लिबरेशन आर्मी भूटान, भारत व चीन के ट्राइ जंक्शन पर आमने-सामने हैं। यह अलग बात है कि ताज़ा विवाद का केन्द्र भूटान देश है। लेकिन यदि चीन डोकालाम पर कब्जा जमा लेता है तो भारत की सुरक्षा को गंभीर खतरा हो सकता है। चीन पहले ही तिब्बत जैसे देश पर कब्जा कर चुका है। वह बासठ के युद्ध में अड़तीस हजार वर्ग किलोमीटर भारतीय भूमि हड़प चुका है। उसके इरादे कभी नेक नहीं रहे। अभी चीन कई जगह उलझा हुआ है। इस नाते वह भारत का मुकाबला नहीं कर पाएगा। वह जैसी भाषा समझना चाहे, उसी भाषा में जवाब दिया जाना चाहिए, क्योंकि हर दृष्टि से भारत आज चीन से कम नहीं है।

आशीष अग्रवाल, वाइस चेयरमैन पीएमसीएच

आतंक का गुणगान क्यों?

पिछले अंक में 'आखिर आतंक का हुआ अंत' आलेख पढ़कर आनंदपाल के खौफ़नाक कारनामों पर विस्तृत जानकारी मिली। बड़ा दुःख हुआ कि ऐसे दुर्दांत आतंकी के पक्ष में एक ऐसे समाज के कई लोगों ने खुल कर तरफ़दारी जताई, जिनकी वीरता, त्याग, देशप्रेम, सामाजिक सहिष्णुता का गौरवशाली इतिहास रहा। इस समाज में महाराणा प्रताप जैसे वीर पुरुष हुए, जिन्होंने क्षत्रिय धर्म को निभा कर मातृभूमि और सभी समाजजनों की रक्षा का बीड़ा उठाया था। लेकिन इसी समाज के कुछ लोगों ने आनंदपाल की मौत को शहादत बता कर अक्षम्य अपराध किया है।

बी प्रसाद, वाइस चेयरमैन गोलछा एसोसिएट

भारत और खुशहाली

'प्रत्यूष' के अगस्त अंक में आजादी से लेकर आज तक देश की मौजूदा स्थिति का सटीक विश्लेषण 'कब होगा साकार, खुशहाली का सपना' आलेख में किया गया। यह सही है कि भारत कभी 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, जिसे मुगलों और अंग्रेजों ने खूब लूटा। वर्षों तक गुलाम रहने के कारण देश के लोगों की मनोदशा आज भी वही है, जो पराधीनता के वक्त थी। जब आजादी मिली तो गोरे अंग्रेज चले गए, परन्तु देशी अंग्रेज आज भी जनता को गुलाम बनाए हुए हैं। 2017 के वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स की 150 देशों की सूची में भारत 122वें स्थान पर रहा। यह पाकिस्तान चीन, यहां तक कि नेपाल से भी नीचे का स्थान है। विधानमंडल व संसद, मंत्रिमंडल और यहां तक कि न्यायपालिका में भी वाहियात मसले उठाए जाते हैं, जबकि मूलभूत समस्याओं की अनदेखी होती है।

भीमसिंह चुण्डावत, होटल व्यवसायी

शीर्ष पदों पर जनसाधारण का आसीन होना

लोकसभा के 2014 के आम चुनाव में भाजपा का देश की केन्द्रीय सत्ता पर बहुमत से आरूढ़ होना आजादी के बाद की असाधारण घटना है। आज राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा स्पीकर जैसे शीर्षस्थ पदों पर भाजपा विचारधारा से सम्बन्धित साधारण लोगों का पहुंचना युगान्तकारी घटना है। देश के उनतीस राज्यों में से 20 राज्यों में भाजपा या उनके सहयोगियों की सरकारें बन जाना बहुत बड़ी बाजी जीतना है। मेरा मानना है कि भाजपा का इतना उत्थान होने के पीछे भाजपा नेताओं की मेहनत की सफलता का फैक्टर इतना प्रभावी नहीं है, जितनी स्वयं कांग्रेस पार्टी के नेताओं की विफलता। लगता है कांग्रेस की अक्षमता के कारण ही भाजपा इतनी आगे पहुंची है।

दीपक माहेश्वरी, उद्योगपति

दाल के स्वाद निराले

भोजन में यदि नियमित रूप से दालों का सेवन किया जाय तो तमाम बीमारियों से दूर रहकर स्वस्थ जीवन जीया जा सकता है। निरोग जीवन में दालों का बड़ा महत्व है। थोड़े से परिश्रम व खर्चे से दाल को अधिक स्वादिष्ट बनाया जा सकता है। प्रस्तुत है निराले स्वाद वाली दाल पकाने की कुछ विधियां

प्रायः गृहिणियां हल्दी, मिर्च, नमक डालकर दाल पका देती हैं। पक जाने पर इच्छानुसार उसमें हींग-मिर्च, जीरा-मिर्च, राई-मिर्च अथवा लहसुन-मिर्च का छौंक दे देती हैं। बहुत-सी बहनें दाल ठीक से नहीं पकाती-पानी अलग, दाल अलग। दाल तो पककर घुट जानी चाहिए, तभी वह स्वादिष्ट होती है। प्रेशर कुकर में दाल जल्दी व अच्छी तरह गल जाती है। वैसे भी धीमी आंच पर काफी देर पकने दें तो दाल सोंधी होगी व घुट भी जाएगी। वैसे दाल में दुगुना पानी तो रखना ही चाहिए। यदि दाल गाढ़ी भी हो जाए तो उसमें गरम पानी डालकर पतला किया जा सकता है। जब दाने फूटने की सीमा तक दाल गल जाएं तो मथानी से मथ दें। इस दाल को आप अलग-अलग स्वाद दे सकती हैं।

दही वाली दाल

पकी दाल में एक प्याला दही मथकर डाल दें व थोड़ी देर आग पर रख दें। छौंक अपनी पसन्द से दें।

दाल टमाटर बहार

दाल गल जाने पर दो-तीन टमाटर, हरी धनिया, हरी मिर्च व अदरक थोड़ी-थोड़ी कुतरकर डाल दीजिए। जब सब मिल जाएं तो पतीली में थोड़ा घी या तेल डालकर, एक प्याज बारीक करके, भून लें व उस में राई, जीरा व लाल मिर्च का छोंक देकर उसे दाल में डाल दें।

हरी सब्जियों की दाल

टमाटर के साथ-साथ अन्य सब्जियां-मूली, गाजर, मटर, सेम आदि भी डाली जा सकती हैं। केवल मूली या बैंगन डालने से भी दाल का स्वाद अच्छा होता है।

मसालेदार दाल

पहले दाल को नमक डालकर उबाल लें-गल जाने तक। एक प्याज, तीन-चार कली लहसुन, तीन-चार लाल मिर्च, एक बड़ा चम्मच धनिया, एक छोटा चम्मच हल्दी लेकर बारीक पीस लें। घी में एक प्याज बारीक कतर के लाल करें व तब यह मसाला भून लें-लाल होने तक। फिर दाल डाल दें व पकने दें। एक-दो उबाल आने के बाद गरम मसाला व कटा धनिया डालकर उतार लें।

खट्टी दाल

दाल पका लें। उसमें हरी सब्जियां, अदरक, हरा धनिया, प्याज कतर के डालकर पका लें। थोड़ी-सी पकी इमली एक प्याला पानी में भिगो दें व मसलकर, छानकर उस पकी हुई दाल में डाल दें। एक चम्मच में घी गरम करके उसमें एक चाय का चम्मच राई-जीरा का छोंक दे दें। सांभर का मसाला वह भी डालें तो स्वाद और अच्छा हो जाएगा। इसमें दाल खूब घुटी होनी चाहिए। छोटी प्याज डालने से भी यह दाल स्वादिष्ट लगती है। मीठा नीम की पत्ती का छोंक जरूर दें।

खट्टी-मीठी दाल

दाल पकने रख दें। एक टुकड़ा गुड़ थोड़े पानी में भिगो दें। थोड़ी पकी इमली भी भिगो दें। दाल पक जाने पर गाढ़ी होने के पहले, इमली व गुड़ मसलकर छानकर डाल दें। थोडी-सी जीरा भी पीसकर डाल दें। हरा धनिया, अदरक, हींग-जीरे का छोक दीजिए। खटाई व मीठा अपनी इच्छा व स्वाद के अनुसार रख सकती हैं।

- पुष्पा जांगिड

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

सितम्बर माह का पूर्वार्द्ध कष्टकारी है, मनोबल में कमी के कारण बनते काम बिगड़ सकते हैं, दाम्पत्य जीवन में परेशानी सम्भव, संतान पक्ष से सन्तुष्टि, कार्य की अधिकता, परन्तु परिणाम के लिए इन्तजार करना होगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा, व्यवसाय में प्रगति।

वृषभ

वृषभ : माह का उत्तरार्द्ध सुकून दायक है। पारिवारिक झंझटों से मुक्ति मिलेगी। आर्थिक मामलों पर पूर्ण ध्यान दें। स्टॉक मार्केट, बीमा-शेयर में लाभ की सम्भावना, आय पक्ष सुदृढ़, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, दाम्पत्य जीवन सामान्य एवं स्वास्थ्य उत्तम। परिवार में मांगलिक कार्य की सम्भावना।

मिथुन

यह माह असमंजसता से व्यतीत होगा, कुछ समझ नहीं पायेंगे और न स्थितियों को नियंत्रित करने के लिए कुछ कर सकेंगे। अपने से बड़ों के परामर्श से कार्य करें। आय पक्ष बाधित रहेगा किन्तु परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पैतृक मामले उलझ सकते हैं, प्रतीक्षा करनी होगी, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, सन्तान से चिन्ता किन्तु दाम्पत्य जीवन सामान्य।

कर्क

किसी भी निर्णय पर पहुंचने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार करें। राजकीय, व्यवसायिक मामलों में उन्नति, परन्तु सहसा परेशानी में भी पड़ सकते हैं। साझेदारी में सफलता, दाम्पत्य जीवन में हर्षोल्लास, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, भाग्य साथ देगा, आय पक्ष में प्रगति, स्वास्थ्य में गड़बड़ी से खिन्नता।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध अच्छे परिणाम देने वाला है। आत्म-बल में वृद्धि, समय का सदुपयोग करते हुए योजना क्रियान्वित करें। भाग्य का साथ पूर्णरूपेण रहेगा, कर्म क्षेत्र में अच्छा कर पायेंगे, दाम्पत्य सुखदायक एवं स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव। इष्ट मित्र एवं सहकर्मियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

कन्या

आप जो कहना अथवा समझाना चाहेंगे, उसका आपकी शैली के कारण सामने वाला पक्ष अलग ही अर्थ निकलेगा। अतएव वाणी पर विराम ही श्रेयस्कर है। कशमकश की स्थिति है, सहकर्मियों एवं अधिकारियों में गतिरोध सम्भव। आय पक्ष बाधित, भाग्य सामान्य, सन्तान से इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं होने पर दु:खी होंगे। किसी के कार्य में हस्तक्षेप न करें, दाम्पत्य जीवन में मधुरता।

तुला

सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि एवं कर्म के प्रति पूर्ण मनोयोग से समर्पित रहेंगे। आय पक्ष सुदृढ़ है और विरोधी परास्त होंगे। स्थान परिवर्तन सम्भव, स्वास्थ्य में कमी महसूस करेंगे, भाग्य सहयोग करेगा, शासकीय एवं न्यायिक मामलों में उलझनें बढ़ सकती हैं।

वृश्चिक

यह माह आपको ऊर्जा से भरा-पूरा रखेगा और राजकीय एवं न्यायिक मसले पक्ष में रहेंगे। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करेंगे, सावधान रहें। स्वास्थ्य एवं दाम्पत्य जीवन उत्तम। सन्तान की ओर से चिन्ता मुक्त व आय से सन्तुष्टि रहेगी।

धनु

यह माह आपके लिए सामान्य है। पारिवारिक समस्याओं में वृद्धि एवं व्यर्थ के कार्यों में समय व्यतीत हो सकता है जिससे आय पक्ष भी प्रभावित होगा। भाग्य साथ देगा किन्तु कुछ नया करने का विचार फिलहाल स्थगित रखें। व्यापारिक एवं शासकीय कार्य सामान्य रहेंगे। सन्तान पक्ष उत्तम।

मकर

परिस्थितियों में आंशिक सुधार किन्तु मनोत्साह में कमी। राजकीय एवं कर्म क्षेत्र में बाधाएं, अपने से बड़ों के निर्देशन में कार्य से लाभ में रहेंगे। प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता के पूर्ण योग हैं। दाम्पत्य जीवन में कटुता संभव। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव एवं जल तत्व की कमी से परेशानियां।

कुम्भ

समय पक्ष का है, लम्बित कार्य पूर्ण होने की ओर अग्रसर हैं। नये सम्पर्कों से व्यावसायिक लाभ मिलेगा, पूरी तरह से आशान्वित रहेंगे, पुराने रोग एवं शत्रु सामने आ सकते हैं, अपनी योजनाएं गुप्त रूप से क्रियान्वित करें। सन्तान पक्ष से प्रसन्नता एवं इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे, दाम्पत्य जीवन सुखमय।

मीन

12 अगस्त से राशि स्वामी का राशि परिवर्तन नवीनता का अहसास करायेगा, लम्बी दूरी की यात्राओं को लम्बित रखिये, शत्रुओं का शमन होगा, जिन कार्यों के बारे में चिन्ता थी वे पूर्ण होंगे, आय के स्त्रोत प्रभावित होंगे, सन्तान से मनमुटाव, जीवन साथी से सामान्य व्यवहार, सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

प्रत्यूष समाचार

वेदव्यास की पुस्तकों का लोकार्पण

जयपुर(प्रब्यू)। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ साहित्यकार वेदव्यास की सद्य प्रकाशित दो पुस्तकों 'शेष रहेंगे शब्द' व 'अब नहीं तो कब बोलोगे' का लोकार्पण पिछले दिनों जयपुर के सुबोध कॉलेज सभागार में सम्पन्न हुआ। भाईचारा फाउण्डेशन की ओर से आयोजित समारोह में उत्तरप्रदेश के पूर्व राज्यपाल बी. एल. जोशी, सामाजिक कार्यकर्त्ता अरूणा राय, नवज्योति जयपुर संस्करण के सम्पादक महेश शर्मा, न्यायमूर्ति पानाचंद जैन, गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति पी. सी. चतुर्वेदी, अजमेर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति रूपसिंह बारहठ व कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति बी. ए. शर्मा ने पुस्तकों का लोकार्पण किया। वेदव्यास ने कहा कि मैंने समाचार पत्रों अथवा पुस्तकों में जो लिखा सच लिखा। शब्द की विश्वसनीयता पर सदैव उनका ध्यान रहा। वेदव्यास का कार्यक्रम में उनके 76वें वर्ष प्रवेश

पुस्तक का विमोचन करते बी.एल. जोशी, अरूणा राय, महेश शर्मा एवं लेखक।

कोन्टाकेयर आई हॉस्पीटल आरंभ

आई केयर हॉस्पिटल का शुभारंभ करते डॉ. अजित मिश्रा एवं उदयपुर के महापौर चंद्रसिंह कोठारी।

उदयपुर। आई केयर हॉस्पीटल की श्रृंखला में गत दिनों अशोक नगर मेन रोड पर कोन्टाकेयर आई हॉस्पिटल का उद्घाटन महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने किया। इस मौके पर 300 नेत्र रोगियों का नि:शुल्क परीक्षण किया गया। निदेशक डॉ. अजित मिश्रा ने बताया कि अब तक हॉस्पिटल की ओर से नेत्र ऑपरेशनों में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, बिहार में उच्चस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। विभिन्न राज्यों में 30 से अधिक सुपर स्पेशियलिटी आई हॉस्पिटल खोले हैं। रिजनल हेड डॉ. रविन्द्र चौधरी, प्रबंधक शशि रंजन ने बताया कि हमने गुणवत्ता पर काम करते हुए बेहतर चिकित्सा देने का प्रयास किया है।

सेवा भारती के फोल्डर का विमोचन

फोल्डर का विमोचन करते पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, यशवन्त पालीवाल व अन्य।

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के चेयरमैन राहुल अग्रवाल ने 1 अगस्त को सेवा भारती चिकित्सालय के वार्षिक फोल्डर का विमोचन किया। सेवा भारती चिकित्सालय के प्रबन्ध निदेशक यशवन्त पालीवाल ने बताया कि फोल्डर में सेवा भारती द्वारा किए जाने वाले सामाजिक सरोकार के कार्यों के बारे में जानकारी दी गई है। इस अवसर पर मेडिकल डायरेक्टर डॉ. वल्लभ पारीख, शंकर सुखवाल एवं अंकित अग्रवाल भी उपस्थित थे। गौरतलब है कि सेवा भारती चिकित्सालय के सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में पेसिफिक हॉस्पिटल समय-समय पर अपनी भागीदारी निभाता है।

प्रवर अधीक्षक द्वारा संस्थावलोकन

शिविर का शुभारंभ करते आर. एस. शक्तावत। साथ में राजेन्द्र राठौड़, दीपक मेनारिया, राकेश शर्मा व कुलदीप शेखावत।

उदयपुर। स्थानीय मुख्य डाकघर के प्रवर अधीक्षक आर. एस. शक्तावत ने पिछले दिनों नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ में दिव्यांग बच्चों के नि:शुल्क ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने दिव्यांगों के लिए चलाए जा रहे व्यवसायोन्मुखी प्रशिक्षणों का भी अवलोकन किया। दीपक मेनारिया, कुलदीप शेखावत व राकेश शर्मा ने स्वागत करते हुए उन्हें संस्थान का साहित्य एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

हिंद जिंक को सोलर इनोवेशन अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की इकाई जिंक स्मेल्टर देबारी को सौर ऊर्जा क्षेत्र में नवाचार के लिए उत्कृष्टता सम्मान से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मिशन एनर्जी फाउंडेशन के महानिदेशक अश्विन कुमार खत्री ने हिन्दुस्तान जिंक द्वारा देबारी में 12 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजना के तहत नवाचार एवं उत्कृष्टता के लिए नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया। हिन्दुस्तान जिंक की ओर से यह पुरस्कार विष्णु खंडेलवाल, टीम लीड-रिन्वयूबल एंड सीडीएम एवं आरएल शर्मा इलेक्ट्रिकल हेड-जिंक स्मेल्टर देबारी ने ग्रहण किया।

सुधीर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। महर्षि दधीचि सेवा संस्थान के चुनाव सेक्टर-4 स्थित संस्थान भवन में हुए। मुख्य चुनाव अधिकारी राजेश कुमार उपाध्याय ने बताया कि अध्यक्ष सुधीर जोशी, उपाध्यक्ष कैलाश चन्द्र शर्मा, सचिव राधेश्याम दाधीच, कोषाध्यक्ष मनमोहन बहड़, सांस्कृतिक मंत्री शशि कुमार जोशी सहित पांच सदस्य निर्वाचित हुए।

सुधीर जोशी

अर्चना समाज कल्याण बोर्ड में सदस्य मनोनीत

उदयपुर। राज्य सरकार ने समाज कल्याण बोर्ड का पुनर्गठन करते हुए कमला कस्वा को राज्य समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष मनोनीत किया है। उदयपुर की पूर्व पार्षद एवं पंचायत समिति सदस्य अर्चना शर्मा को सदस्य मनोनीत किया गया है। इसके अलावा भीलवाड़ा से रेखा परिहार, हनुमानगढ़ से दमयन्ती बेनीवाल, दौसा से सुनिता सैनी, पाली से अनुसूया चारण, बारां से सारिका सिंह चौहान, राजसमंद से संतोष रेबारी, राजगढ़ अलवर से सुनिता मीणा, जयपुर से डॉ. रेखा गुर्जर और धौलपुर से जया मोदी को भी सदस्य मनोनीत किया गया है।

अर्चना शर्मा

युद्धवीर अध्यक्ष व दीपेश सचिव

उदयपुर। उदयपुर लेकसिटी राउण्ड टेबल 206 की 8वीं वार्षिक साधारण सभा के वर्ष 2017-18 के लिये सम्पन्न चुनावों में टेबलर युद्धवीर सिंह चेयरमैन एवं टेबलर दीपेश कोठारी चुने गए। सौरभ कोठारी को कोषाध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष वरूण मुर्डिया को मनोनीत किया। इस अवसर पर एरिया चेयरमैन अभिनव वाधवा व विशिष्ट अतिथि दीपक भंसाली भी थे।

युद्धवीर सिंह

दीपेश कोठारी

गाजियाबाद में अ. भा. हिन्दी सम्मेलन

गाजियाबाद। पिछले 25 वर्ष से निरंतर आयोजित होने वाला अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन 28-29 अक्टूबर 2017 को गाजियाबाद में होगा। राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास के अध्यक्ष उमाशंकर मिश्र ने बताया कि सम्मेलन में अ.भा. पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी, संगोष्ठियां, कवि सम्मेलन के साथ ही हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 25 नामित सम्मान प्रदान किए जाएंगे।

बाबूलाल जैन

जैन चुनाव अधिकारी बने

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेशाध्यक्ष बाबूलाल जैन को पाली जिला कांग्रेस कमेटी के रानी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी का संगठन चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया।

'चारू वसंता' के राजस्थानी अनुवाद का लोकार्पण

पुस्तक का विमोचन करते डॉ. पी.के. दशोरा, प्रो. उमाशंकर शर्मा, डॉ. प्रेमसुमन जैन एवं अनुवादक डॉ. देव कोठारी ।

कन्नड़ के प्रेम महाकाव्य का डॉ. देव कोठारी ने किया अनुवाद

उदयपुर। प्रो. हम्पा नागराजय्या द्वारा कन्नड़ भाषा में लिखित 'चारू वसंता' महाकाव्य की राजस्थानी भाषा में अनुदित कृति का गत दिनों विज्ञान समिति में कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी. के. दशोरा, महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ श्रवणबेलगोला के कार्याध्यक्ष एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एम. जे. इन्द्रकुमार तथा प्राकृत भाषा-साहित्य के विद्वान प्रो. प्रेमसुमन जैन ने लोकार्पण किया। कन्नड़ के इस प्रेम काव्य का राजस्थानी भाषा सहित नौ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

राजस्थानी भाषा में इसका अनुवाद राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी, बीकानेर के पूर्व अध्यक्ष तथा ख्यातनाम साहित्यकार डॉ. देव कोठारी ने किया है।

कुलपति डॉ. पी. के. दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ने राजस्थानी को कन्नड़ भाषा से जोड़कर न केवल राजस्थानी साहित्य की समृद्धि की है अपितु कन्नड़ और राजस्थानी के भाषा-सेतु को भी विद्वानों के लिए सुलभ कर दिया है। कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ. कोठारी ने कन्नड़ और राजस्थानी के भाषा-शिल्प और सौंदर्य का अनुदित कृति में अत्यन्त रोचक और सशक्त उपयोग किया है।

इस अवसर पर डॉ. कोठारी का अभिनन्दन भी किया गया। उन्होंने कहा कि अनुवादित कृति के साथ मैंने कितना न्याय किया है इसका निर्णय पाठक करेंगे। प्रो. हम्पा जी ने इस महाकाव्य का राजस्थानी में अनुवाद करने की स्वीकृति देकर मेरा गौरव ही बढ़ाया है।

आलोक में भ्रातृत्व दिवस

राजसमंद। स्थानीय आलोक स्कूल में भ्रातृत्व दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रशासक मनोज कुमावत व प्राचार्य ललित गोस्वामी ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर बच्चों में रचनात्मक विकास की दृष्टि से प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने पिपलांत्री में पेड़ों को राखी बांध कर पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश दिया।

विनय के नाम एवरेस्ट वर्ल्ड रिकॉर्ड

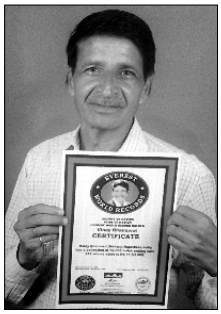

उदयपुर। करेंसी मैन के नाम से ख्यात लेकसिटी के विनय भाणावत के नाम एक और रिकॉर्ड दर्ज हो गया, जब उन्हें 786 संख्या वाले 92000 नोटों के संग्रह के लिए एवरेस्ट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स नेपाल ने 'राष्ट्र गौरव' सम्मान से अलंकृत कर प्रमाण पत्र प्रदान किया। संस्था संस्थापक व अनुसंधान निदेशक मथुरा श्रेष्ठ ने बताया कि लेकसिटी के विनय भाणावत पूर्व में दुबई के मोहम्मद फारूख(32660 नोट), पाकिस्तान के ममनून हसन(60000 नोट) तथा बांग्लादेश के मोहम्मद रकीबुल्लाह खान(78000 नोट) का रिकॉर्ड तोड़ चुके थे।

राजानी सिंधी अकादमी अध्यक्ष

उदयपुर। समाजसेवी हरीश राजानी राजस्थान सिंधी अकादमी जयपुर के अध्यक्ष मनोनीत किए गए हैं। राज्य सरकार ने इन्हें तीन वर्ष के लिए मनोनीत किया है। राजानी ने बताया कि पद ग्रहण करने के साथ ही वरिष्ठजनों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सिंधी समाज के युवाओं में शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ाने की दिशा में कार्य किया जाएगा। सिंधी भाषा के प्रति समाज की नई पीढ़ी का रुझान बढ़ाने के लिए शिविर कार्यशालाएं आदि लगाने के साथ सिंधी भाषा के साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने के कार्य किए जाएंगे। राजानी की नियुक्ति पर विभिन्न सिंधी पंचायतों व संस्थाओं ने उनका अभिनन्दन किया।

सोहन अध्यक्ष, अशोक सचिव

उदयपुर। बीसा नागदा दिगम्बर जैन समाज के चुनाव गत दिनों समाज भवन में सम्पन्न हुए। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में सोहनलाल जैन खरका अध्यक्ष, दिनेश जैन भीण्डर उपाध्यक्ष, अशोक दोषी सचिव, अविनाश जैन कोषाध्यक्ष व अजय जैन को प्रवक्ता चुना गया। नई कार्यकारिणी ने समाज के विकास एवं युवाओं को प्रोत्साहित करने में पूर्ण योगदान का संकल्प व्यक्त किया।

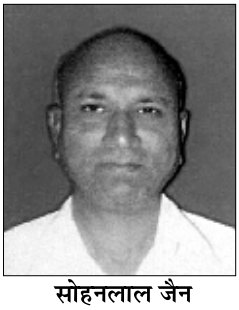

सोहनलाल जैन

अशोक दोषी

सहकारी बैंको के चुनाव

कटारिया ने साबित की मज़बूत पकड़

उदयपुर। शहर के तीन प्रमुख कोऑपरेटिव बैंक में 31 जुलाई को डायरेक्टर्स के चुनाव हुए। इनमें महिला समद्धि बैंक व महिला अरबन को-ऑपरेटिव बैंक भी शामिल है। सबसे रोचक चुनाव महिला समृद्धि बैंक के रहे। इसमें भाजपा तथा गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया विरोधी गुट भैरोसिंह शेखावत मंच के प्रत्याशियों में टक्कर थी। महिला समृद्धि बैंक में सभी 12 डायरेक्टर भाजपा के गृहमंत्री कटारिया समर्थक चुने गए। 1 अगस्त को बैंक के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष के चुनाव में सर्वसम्मति से विद्या किरण अग्रवाल अध्यक्ष व सुनीता मांडावत उपाध्यक्ष चुनी गई। अध्यक्ष बनने के बाद विद्या किरण ने कहा कि बैंक के विकास के लिए वे सभी डायरेक्टर्स के साथ मिलकर कार्य करेंगी। ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं दिए जाने के सतत प्रयास किए जाएंगे। बैंक के संचालक मंडल के चुनाव में विद्याकिरण व सुनीता मांडावत के साथ ही चन्द्रकला बोल्या, नीता मूंदड़ा, रश्मि पगारिया, सपना चित्तौड़ा, विमला मूंदड़ा, भगवती मेहता, मीनाक्षी श्रीमाली, सारिका बोहरा, संजना मीणा व लता नायक(निर्विरोध) निर्वाचित घोषित की गई।

विद्या किरण व सुनीता मांडावत

पुष्पा अध्यक्ष, सोनल उपाध्यक्ष

राजस्थान के प्रथम महिला बैंक उदयपुर महिला अरबन कॉपरेटिव बैंक के चुनाव में संस्थापक टीम के सभी 12 सदस्यों की भारी बहुमत से जीत हुई। प्रधान कार्यालय में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। चुनाव अधिकारी गणेशलाल गुप्ता ने समस्त संचालक मण्डल को शपथ दिलवाई। संचालक मण्डल ने सर्वसम्मति से पुष्पासिंह को अध्यक्ष और सोनल अजमेरा को उपाध्यक्ष चुना। इसके साथ ही प्रेरणा कोगटा, विनिता समदानी, श्वेता सिंघवी, शीला माथुर, सोनाली माथुर, श्वेता सरूपरिया, शकुंतला भादविया, नीलम सुयल व राधा देवी ने भी निदेशक पद की शपथ ग्रहण की। निवर्तमान अध्यक्ष सविता अजमेरा ने अपने कार्यकाल में हुई प्रगति के बारे में बताया। सुरेश अजमेरा ने कार्यक्रम का संचालन किया और बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एस. एल. अलावत ने धन्यवाद दिया। इसी तरह उदयपुर अरबन कोऑपरेटिव बैंक में संचालक मंडल ने सर्वसम्मति से फिदा हुसैन को अध्यक्ष व तौसीफ हुसैन को उपाध्यक्ष चुना।

पुष्पासिंह

सोनल

चित्तौड़गढ़ : विमला सेठिया अध्यक्ष

अरबन को-ऑपरेटिव बैंक के 1 अगस्त को सम्पन्न चुनाव में सर्व सम्मति से विमला सेठिया को अध्यक्ष एवं शिवनारायण मान्धना को उपाध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया। निर्वाचन अधिकारी दातार सिंह राठौड़ एवं पर्यवेक्षक संजय शर्मा थे। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित निदेशक मंडल में हस्तीमल चोरड़िया, डॉ. महेश सनाढ्य, शान्तिलाल पूंगलिया, राधेश्याम आमेरिया, विनोद कुमार आंचलिया, आदित्येन्द्र सेठिया, सुनीता सिसोदिया, चांदमल नंदावत, बालकिधन धूत एवं अभिषेक मीणा निर्वाचित हुए। पदभार ग्रहण समारोह में संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आई. एम. सेठिया, उपाध्यक्ष डॉ. डी. एल. लड्ढा, निदेशक दिनेश सिसोदिया, ईश्वरदयाल सुहालका, नितेश सेठिया सहित अन्य सदस्यों व कार्मिकों ने माल्यार्पण कर उनका अभिनन्दन किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष विमला ने अंशधारियों का आभार व्यक्त करते हुए आश्वस्त किया कि बैंक को सफलता के पायदान पर आगे बढ़ाने का हर संभव प्रयास किया जाएगा। उपाध्यक्ष मान्धना ने कहा कि सहकारिता का मूल आधार सामूहिक निर्णय एवं ग्राहक संतुष्टि को प्राथमिकता दी जाएगी। कार्यक्रम संचालन प्रबन्ध निदेशक वन्दना वजीरानी ने किया एवं दिनेश सिसोदिया ने आभार व्यक्त किया।

विमला सेठिया

राजसमंद : भाटिया अध्यक्ष

द राजसमन्द अरबन को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड राजसमन्द के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के चुनाव में मुरलीधर भाटीया अध्यक्ष एवं शेखर कुमार यादव निर्विरोध उपाध्यक्ष चुने गए। निर्वाचन अधिकारी राजकुमार खाण्ड्या ने बताया कि बैंक परिसर में हुए चुनाव में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के लिए एक-एक नामांकन ही प्राप्त हुआ। जिससे दोनों ही प्रत्याशियों का निर्विरोध निर्वाचन सम्पन्न हुआ। खाण्ड्या ने बताया कि संचालक मण्डल के सदस्यों का निर्वाचन पूर्व में ही किया जा चुका है। अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का सदस्यों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने स्वागत किया।

मुरलीधर भाटिया

चौहान तीसरी बार अध्यक्ष

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कोठारिया(नाथद्वारा) निवासी गोविंद सिंह चौहान तीसरी बार राजसमंद जिला सहकारी भूमि विकास बैंक लि. के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। निर्वाचन अधिकारी अनिल काबरा ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए गोविंद सिंह चौहान तथा उपाध्यक्ष पद के लिए रामलाल जाट के ही आवेदन प्राप्त हुए। जिससे दोनों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

गोविंद सिंह चौहान

लॉयन्स क्लब-महाराणा : राठौड़ व कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। लॉयन्स क्लब-महाराणा के वर्ष 2017-18 के सम्पन्न पदस्थापना समारोह में पदस्थापना अधिकारी दाता बी. पटेल ने क्लब अध्यक्ष सी. एस. राठौड़, सचिव अशोक मांडावत, कोषाध्यक्ष रविन मेहता सहित नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर एस. एस. पाटिल व विशिष्ट अतिथि मुख्य परियोजना अधिकारी सुधीर दवे थे। इस अवसर पर लॉयन्स मल्टीपल कौन्सिल चेयरमैन अरविंद चतुर, पूर्व प्रांतपाल आर. एल. कुणावत, अनिल नाहर व तीनों अतिथियों ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष राठौड़ को क्लब संचालन हेतु गेवल प्रदान की। 'दिल' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

पुस्तक का विमोचन करते अतिथि, सी. एस. राठौड़, अशोक माण्डावत, राजेश शर्मा एवं अन्य।

डॉ. गीता पुनः आरसीडीएफ बोर्ड की डायरेक्टर

उदयपुर। उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ परिसर में हाल ही संघ अध्यक्ष डॉ. गीता पटेल के राजस्थान कॉआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लि. जयपुर के संचालक मंडल में निदेशक बनने पर स्वागत किया गया। समारोह में डॉ. गीता पटेल ने कहा कि राजस्थान कॉआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लि. जयपुर का नवनिर्वाचित संचालक मंडल दूध उत्पादकों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेगा एवं फेडरेशन की समस्त इकाइयों को सुदृढ़ बनाने के लिए राज्य सरकार से समन्वय बनाकर समग्र विकास किया जाएगा। साथ ही दुग्ध उत्पादकों को उनके दूध का उचित मूल्य दिलाकर उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने की दिशा में सकारात्मक प्रायास किए जाएंगे। संघ के प्रबंध संचालक नटवर सिंह ने बताया कि डॉ. गीता पटेल के दुबारा आरसीडीएफ के संचालक मंडल में निदेशक बनना उदयपुर दुग्ध संघ के लिये गौरव की बात है। इस अवसर पर संघ के प्रबंधक डॉ. राजेश जटाना, दुग्ध संयंत्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. डी. के. गौरी, विपणन प्रभारी भरत श्रीमाली, उप प्रबंधक, कार्मिक उमेश गर्ग, उप प्रबंधक, वित्त ए. के. कुंभट, प्रभारी कृषक संगठन जे सी नूइंया आदि भी उपस्थित थे।

गीता पटेल

सर्वधर्म मैत्री संघ : बच्चों में प्रतिभा निखार का आयोजन

उदयपुर। सर्वधर्म मैत्री संघ, रोटरी क्लब-मेवाड़ व राजस्थान पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों अन्तरविद्यालयी देशभक्ति संभाषण व चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। मैत्री संघ अध्यक्ष संदीप सिंघटवाड़िया ने बताया कि रेयान इन्टरनेशनल स्कूल में 32 विद्यालयों के बालक-बालिकाओं ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तीकरण, शांति और सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण आदि विषयों पर तथ्यों व तर्कों के साथ अपनी बात कही। गोवर्धन विलास स्थित सेंट एंथनी स्कूल में पचास से अधिक विद्यालयों के प्रतिनिधि बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में अपनी रंग-तूलिका से देशभक्ति के भाव उकेरे।

बाजार में पोर्टर-700

उदयपुर। टू व्हीलर्स एवं छोटे कॉमर्शियल वाहन बनाने वाली पियाजियो कम्पनी ने अपने अधिकृत डीलर सचिन मोटर्स के शोरूम के माध्यम से बाजार में पोर्टर-700 वाहन की नई शृंखला की लांचिंग की। इस अवसर पर आयोजित समारोह में यूनियन बैंक के रिज़नल हेड आलोक कुमार, केनरा बैंक के मुख्य प्रबंधक राजीव ने एक ग्राहक को वाहन की चाबियां सौंप कर इसकी विधिवत् बिक्री का श्रीगणेश किया। कम्पनी के कार्यकारी उपाध्यक्ष हरदीप गोईन्दी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ग्राहकों को शुभकामनाएं दी। सचिन मोटर्स के निदेशक सुभाष सिंघवी ने बताया कि पोर्टर 700 पियाजिओ 0.7 टन रेंज का सबसे बेहतरीन परफोरमेन्स देने वाला वाहन बन गया है। इसमें 652 सीसी बीएस 4 इंजन, 15 एचपी पॉवर, 40 एनएम टार्क दिया गया है। यह वाहन 700 किलो तक भार ढो सकता है। निदेशक दर्शना सिंघवी ने बताया कि पांच रंगों में उपलब्ध इस कार्गो वर्ग में 5+1 गियर बॉक्स दिए गए हैं।

वाहन लांचिंग अवसर पर उपस्थित यूनियन बैंक रीजनल हैड आलोक कुमार, केनरा बैंक के मुख्य प्रबंधक राजीव, सचिन मोटर्स के निदेशक सुभाष सिंघवी, दर्शना सिंघवी एवं अन्य बैंक अधिकारी।

सुनील व्यास सम्मानित

उदयपुर। सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय (सूचना केन्द्र)के ऑपरेटर सुनील व्यास को स्वाधीनता दिवस समारोह में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने जिला स्तरीय योग्यता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। उपनिदेशक गौरीकान्त शर्मा ने बताया कि व्यास को यह सम्मान सरकार की कल्याणकारी योजनाओं, युवा जागरूकता कार्यक्रमों, विशिष्ट व अतिविशिष्ट कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता तथा प्रचार-प्रसार कार्यों में समर्पित सेवाओं के लिए दिया गया।

कप्पू द्वारा 78वीं बार रक्तदान

उदयपुर। रक्तदान महादान चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पिछले दिनों आयोजित रक्तदान शिविर में ट्रस्ट अध्यक्ष रविन्दरपाल सिंह कप्पू ने 78वीं बार रक्तदान किया। कप्पू के 52वें जन्मदिन पर लगे इस शिविर में अन्य रक्तदाओं ने 104 यूनिट रक्तदान किया।

माधुरी अध्यक्ष, सुनीता सचिव

उदयपुर। सखी मितवा क्लब सोसायटी के वर्ष 2017-18 के चुनाव में माधुरी तलेसरा अध्यक्ष एवं सुनीता मोदी को सचिव निर्वाचित किया गया। मधु खमेसरा कोषाध्यक्ष व तोषी कालरा को बुलेटिन सम्पादक मनोनीत किया गया। पूर्व अध्यक्ष मधु खमेसरा ने पिछले वर्ष के सेवा कार्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

माधुरी तलेसरा

सुनीता मोदी

शोक समाचार

अजमेर। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष तथा अजमेर सांसद **प्रो. सांवरलाल जाट** का 9 अगस्त को निधन हो गया। पैतृक गांव गोपालपुरा में राजकीय सम्मान से उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उनके ज्येष्ठ पुत्र रामस्वरूप व छोटे पुत्र कैलाश ने मुखाग्नि दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अशोक परनामी, गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया सहित विभिन्न दलों के नेता भी मौजूद थे।

उदयपुर। श्री अम्बालाल जी टांक(उदयपुर स्टडी सर्कल) का दिनांक 12 मई, 2017 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती अनुसूया देवी, पुत्र दिलीप, चंद्रशेखर व प्रवीण टांक, पुत्रियां श्रीमती दुर्गा व डॉ. मंजू सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

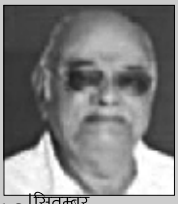

उदयपुर। श्री कृष्ण शंकर माथुर (नारनोलिया) का 16 अगस्त 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र निलय एवं आलिंद माथुर तथा भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री राव कमलेन्द्र सिंह बाठेड़ा (पूर्व विधायक) वल्लभनगर का आकस्मिक निधन 6 अगस्त 2017 को हो गया। वे अपने पीछे विरह व्यथित कुं. मयूरध्वज सिंह सहित भरा-पूरा सारंगदेवोत परिवार छोड़ गए। उनकी अंत्येष्टि पैतृक गांव बाठेड़ा में हुई, जिसमें चित्तौड़गढ़ के सांसद सी. पी. जोशी, वल्लभनगर विधायक रणधीर सिंह भीण्डर, प्रदेश कांग्रेस महासचिव गजेन्द्र सिंह शक्तावत सहित आसपास के हजारों लोग शरीक हुए।

उदयपुर। स्व. श्री नंदलाल जी नैणावा (साहू) के युवा/उद्यमी पुत्र **श्री जमनालाल जी नैणावा** का आकस्मिक देहावसान 29 जुलाई, 2017 को हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती गंगा देवी, पुत्र नरेश व प्रकाश साहू, पुत्री सोनिया तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री शांतिलाल जी मेहता (बड़ी सादड़ी वाले) की धर्मपत्नी **श्रीमती प्रेमलता जी मेहता** का 2 अगस्त 2017 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र राजकुमार, पुत्रियां श्रीमती सुनीता जैन, संगीता भाणावत व इन्दु वया सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व जेठ-जेठानियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

Rakesh Kumar
94141-62686

Shubham
90011-61614

Krishnakant
93512-55950

Shubham
Sanitory & Tiles Store

10, Rajasthan Mahila Vidyalaya Compound, Surajpole, Udaipur-313 001 (Raj.)
Ph. : 96675-69987

DHARNDRA APARTMENT

New Navratan Complex, Udaipur-313001

Amenities

- Building design as per VASTU
- Plot energy charged by VASTU
- 2'X2'vitrified flooring
- Free marked car parking / flat
- Mini Gym
- Table Tennis
- Common Steam Bath & Sona Bath
- Silent D.G. for lift & common utility
- Door phone security system
- All road facing flats

Vallabh Developer
C/o Padmawari FurnitureGalaxy Apartment,
Fatehpura, Bedla Road, Udaipur
Phone : 0294-2450619 (O), 2454621

CONTACTS:
Dinesh Chandra Kothari
(Architect & Vastu Consultant)
Mob. 9829043307, 2453036

Site Address : At New Navratan Complex, Near Eden Court Building, New Gaurav Path, Bhuwana, Udaipur. **Mob. 9829045306, 9352513283**

MOUNT VIEW SCHOOL

A Co- Educational English Medium School

1-Shreenath Nagar,
Near Transport Nagar,
Airport Road, Bedwas,
Udaipur-313001
Rajasthan, INDIA.

Web: www.mountviewschool.com
e-mail: mountviewschool2539@gmail.com
Contact Us: 0294 2493599, 098285 89099

महर्षि दधीचि माध्यमिक विद्यालय

चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर

निर्मला दाधीच, डायरेक्टर

प्रशिक्षित एवं अनुभवी अध्यापक।
गणित, विज्ञान व अंग्रेजी
का विशेष अध्ययन ।

बच्चों का सर्वांगीण विकास।
पढ़ने में कमजोर विद्यार्थियों
पर विशेष ध्यान ।

ग्रीष्मकालीन अवकाश में
कम्प्यूटर कोर्स प्रशिक्षण
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स

सम्पर्क : फोन :-2440438
मो. 9829587733,
9829598342

EVERY BRANCH AT TECHNO NJR HAS ADDED INDUSTY COMPONENTS

Key Placements

MECHANICAL & CIVIL

DR. PANKAJ PORWAL
B.Tech(IIT, Mumbai) , PhD Cornell Univ., USA
Head- Mechanical & Civil

Lokesh Malviya
M.Tech

Anunay Saraswat
M.Tech, NIT Kurukshetra,

Anoo Dadhich
M.Tech, PDPU Ahmedabad

BOSCH Invented for life · GABRIEL · JK TYRE · SECURE · JYOTI · Mahindra

Sangeeta Choudhary
ME, MBM Jodhpur

Shantanu Sharma
M.Arch., MNIT Jaipur

Divya Sharma
M.Arch., CEPT Ahmedabad

UB unique builders · AVS ENGINEERS · eptisa · G R INFRAPROJECTS LTD. Building trust Building future

ELECTRONICS & ELECTRICALS

PROF. PRADEEP CHHAWCHHARIA
M.E.(BIT, Ranchi), M.Phil (Hongkong Poly. Univ.)
Head - ECE/EEE/EE

Vivek Jain
M.Tech.

Nitin Kothari
M.Tech.

Yogendra Solanki
M.Tech.

BOSCH · eInfochips The Solutions People · TATA ELXSI LIMITED · cadence · HUAWEI

C.P. Jain
M. Tech

Irfan Ali
M. Tech

Abrar Ahmed
M.Tech

SIEMENS · GE Transportation · SECURE · PCC · PARK CONTROLS & COMMUNICATIONS (P) LTD. · Mahindra

COMPUTER SCIENCE & IT

CS/IT

LALIT YAGNIK
M.Tech (BITS, Pilani), Management - Cornell Univ., USA, Mentor - CS/IT

Aaditya Maheshwari
MS, Selected as Student Mentor by Google & IBM

Jitendra Shrimali
B.Tech (IIT, Chennai) PGDM (IIM, Bangalore) Ph.D

Sandeep Upadhyay
MS (BITS, Pilani)

Mukesh Menaria
M.Tech, (IIT, Banglore)

Gaurav Kumawat
M.Tech

Kiran Acharya
M.Tech

IBM · Cognizant · TATA CONSULTANCY SERVICES · Infosys · accenture · metacube programmed for excellence · Capgemini CONSULTING.TECHNOLOGY.OUTSOURCING

- Dr. Yasmin ✆ 8696932708
- R.S. Vyas ✆ 8696932700

TECHNO INDIA NJR
INSTITUTE OF TECHNOLOGY

(AICTE APPROVED. AFFILIATED TO RTU)

Nao Robot

CAMPUS: Plot- SPL-T, Bhamashah (RIICO) Industrial Area Kaladwas, Udaipur,
Tel: 0294-2650214/5/6
Email: technonjr@gmail.com,
www.technonjr.org

PACIFIC UNIVERSITY

20 YEARS 1997-2017

20 Years of Excellence

100 Acre Campus

500 Faculty

15,000 Students

Record Placements in 2016-17

Placements : 2460

No. Of Companies : 87

Highest Package 6.6 Lakh P.A.

amazon

MARCO POLO

oppo

3T

AVILLION

AtoS

metacube

& Many More ...

Best Engineering Campus award – 2016
"Awarded by Edu Destination, New Delhi".

Times Education Achievers Award - 2016-17
(Dental, Commerce, Management, Pharmacy, Education)

Workshop on Remote Controlled
Aircraft Modelling 2016-17

Consecutive Winner (6times) in Simulated
Management Games Contest of AIMA, New Delhi held
among top 270 Management Institute of the Country.

Pacificians at yet another milestone
by achieving 1st Prize in Audacity – 2017
"Conducted by IIM, Udaipur".

4th place in west zone inter university
Hockey Tournament 2015 - 16

ADMISSION OPEN 2017-18

ENGINEERING (AICTE Approved)
B.Tech. : Civil / Mechanical / Electrical / ECE / CSE / Mining
M.Tech.
Mob. : 766 501 7791

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)
Diploma : Civil / Mechanical / Electrical / Mining / CSE
Mob.: 953 036 0191

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)
Trade Diploma in Hotel Management
Diploma: Diploma in Hotel Management
B.Sc. Hotel Management
Bachelor of Hotel Management & Catering Technology (BHMCT)
Master of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob.: 967 297 8016

COMPUTER APPLICATION
BCA / BCA+MCA / PGDCA
MCA / M.Sc. IT / MCA in 2 Yrs. (Eligibility: BCA with Maths)
Mob.: 958 789 2884

AGRICULTURE
B.Sc. (Hons.) Agriculture
M.Sc. Agriculture
Mob.: 766 501 7854

EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION
D.El.Ed., B.Ed.,
B.P.Ed., M.P.Ed.
Mob.: 967 297 8055

MANAGEMENT (AICTE Approved)
MBA (Dual Specialization) I **MBA** (Executive)
MBA : Hospital and Healthcare Management
MBA (International Business Management)
Mob.: 967 297 8034

DAIRY TECHNOLOGY & FOOD TECHNOLOGY
B.Tech. Dairy Technology
B.Tech. Food Technology
B.Sc. Nutrition & Dietetics
Diploma Clinical Nutrition & Dietetics
Certificate Nutrition & Fitness
Mob.: 967 291 7869

LAW (BCI Approved)
L.L.B.
B.A.+L.L.B.
B.Com.+L.L.B.
L.L.M. (1 Yr.)
L.L.M. (2 Yrs.)
Free R.J.S coaching & other tutorial classes
Mob.: 982 985 5566

YOGA
Certificate, Diploma, PG Diploma & M.Sc. in Yoga
Mob.: 766 501 7752

GYM TRAINING & MANAGEMENT
Certificate, Diploma, PG Diploma (Personal Trainer & Gym Management)
Mob.: 823 911 0077

DENTAL (DCI Approved)
B.D.S., M.D.S.
Mob.: 766 501 7760

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES
B.A. / B.A. (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC, SSC, BANK, PO, CDS, PSI, CONSTABLE, PATWARI & CLERICAL EXAMS)
M.A. / M.S.W.
Mob.: 967 297 0962

COMMERCE
BBA: Global Business Management
(Free Educational foreign tour every year)
B.Com. (Synchronised with competitive exams)
BBA (Synchronised with competitive exams)
B.Com. (Hons.) (Synchronised with CA / CS)
M.Com.
Mob.: 988 726 2020

MASS COMMUNICATION
Diploma Journalism and Mass Communication (DJMC)
BA (Journalism and Mass Communication)
MA (Journalism and Mass Communication)
Mob.: 988 726 2020

BASIC SCIENCE
B.Sc. (Both Maths & Bio Group)
B.Sc. (Hons.) (Physics / Chemistry / Maths / Computer Science / Statistics / Botany / Zoology)
M.Sc. (Physics/Chemistry/Maths/Computer Science/Statistics)
Mob.: 766 501 7783

PHARMACY (PCI Approved)
B.Pharma
M.Pharma
Mob.: 766 501 7717

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT
B.Sc.: Fire & Industrial Safety Management
Diploma: Fire & Safety Management / Industrial Safety & Disaster Mgmt. / Health Safety & Environment
PG Diploma: Industrial Safety Management / Fire & Safety Management / Health, Safety & Environment
Mob.: 967 297 0953

FASHION TECHNOLOGY
Diploma: Fashion Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
Interior Designing
Drama / Acting / Graphic Web Designing / Modelling / Animation / Accessory Designing / Event Management / Architecture
B.Sc. & M.Sc.: Fashion Designing / Interior Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
MBA : Design Management / Fashion Designing / Textile Designing
Mob.: 967 297 8017

RESEARCH AND DOCTORATE
M.Phil. & Ph.D. (In all the streams listed above)
Mob.: 967 297 8030

PACIFIC UNIVERSITY | Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Email : info@pacific-university.ac.in | Ph : 0294-3065000, 9672970940, 7665017787, 9672927863 | www.pacific-university.ac.in